जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

जालोर

Rashtradoot

फोनः- 226422, 226423 फैक्सः- 02973-226424 वर्षः 16 संख्याः 233 प्रभात जालोर, मंगलवार 30 नवम्बर, 2021 पो. रजि. /RJ/SRO/9640/2019-21 पृष्ठ 8 मूल्य 2.00 रु.

गर्म होते आर्कटिक के कारण स्थानीय वन्य जीवों के लिए खतरा बहुत बढ़ गया है, इनमें प्रमुख हैं मस्क ऑक्स (कस्तूरी बैल)। वैज्ञानिकों ने एक शोध में पाया कि मस्क ऑक्स जिंदा रहने के लिए जूझ रहे हैं और इनके लिए सबसे बड़ा संकट भोजन का है। हालांकि ये जीव बहुत थोड़े से भोजन पर भी जी लेते हैं, पर वो भी इन्हें नहीं मिल पा रहा है, कारण है ग्लोबल वॉर्मिंग। असल में सर्दी में जब उत्तरी ग्रीनलैण्ड में बर्फ होती है तो मस्क ऑक्स भोजन की तलाश में दक्षिणी भाग में चले जाते हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण ग्रीनलैण्ड में गर्मियों में ज्यादा गर्मी, बरसात में ज्यादा बारिश और सर्दी में ठंड और ज्यादा पड़ने लगी है, जिसकी वजह से उत्तरी भाग में बर्फ ज्यादा हो गई है, खासकर ठोस बर्फ, जिसके कारण ये पशु दक्षिण में नहीं जा पा रहे हैं, ऐसे में उनके बच्चों के भूखे मर जाने का खतरा बढ़ रहा है। वहीं, गर्मी में मस्क ऑक्स उत्तर की तरफ जाते हैं, लेकिन ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण तापमान ज्यादा बढ़ रहा है, ऐसे में वे उत्तर दिशा में और आगे तक जा तो सकते हैं पर अन्ततः आर्कटिक के अंतिम उत्तरी छोर पर पहुँचने के बाद उनके पास जाने के लिए जगह नहीं बचेगी। डैनमार्क के वैज्ञानिकों की एक टीम ने मस्क ऑक्स का अध्ययन करने के लिए ग्रीनलैंड की यात्रा की थी, जिसमें उन्होंने मस्क ऑक्स को नाक से ठोस बर्फ को तोड़ने की असफल कोशिश करते देखा, ताकि बर्फ में दबी घास खा सकें। टीम के सदस्य कार्स्टन ग्रोन्डाल ने कहा कि ''ये बैल ढीली पाउडर जैसी बर्फ को तो हटा देते हैं पर उत्तरी ग्रीनलैंण्ड में ठोस बर्फ ज्यादा है जिसे वो हटा नहीं पाते।'' शोधकर्ताओं ने कहा कि ''हमारे जाकनबर्ग रिसर्च स्टेशन के आसपास ही गत 20 सालों में आर्कटिक की जलवायु में काफी बदलाव आया है। गर्मी के मौसम में तापमान तीन से छः डिग्री तक बढ़ गया है। तापमान बढ़ने का अर्थ है कि इस क्षेत्र में नए परजीवी पनप सकते हैं, बीमारियां फैल सकती हैं। कैनेडा में तो मस्क ऑक्स में एक नई बीमारी भी देखी गई है। जलवायु परिवर्तन के कारण इस प्रजाति पर दबाव बढ़ता जा रहा है और यह विलुप्ति के कगार पर पहुंच रही है।

भाजपा ने कैसे त्रिपुरा में सूपड़ा साफ किया तृणमूल कांग्रेस का?

जो दवा तृणमूल ने भाजपा को दी थी बंगाल के चुनाव में, उसकी ही ''डोज़'' भाजपा ने दी तृणमूल को त्रिपुरा में

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 नवम्बर। पूर्वोत्तर के छोटे से राज्य त्रिपुरा में पूरे देश का ध्यान आकर्षित करने और राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करने वाली चुनावी स्थिति पहले कभी नहीं रही।

त्रिपुरा के नगरपालिका चुनावों में भाजपा की बड़ी जीत और जबरन राज्य में घुसपैठ करने वाली तृणमूल कांग्रेस और सी.पी.आई.(एम) को मिली पराजय ने ममता बनर्जी के एक राष्ट्रीय नेता बनने की सभी उम्मीदों को धूल-धूसरित कर दिया है।

ममता बनर्जी पिछले कुछ समय से राष्ट्रीय स्तर की नेता बनने का अभियान जोर शोर से चला रही हैं। बेलगाम एवं अन्य पार्टियों से ठुकराए गए नेता राष्ट्रीय राजनीति में प्रासंगिक बनने के लिए ममता बनर्जी की पार्टी में शामिल होने को एक अवसर के रूप में देख रहे हैं।

इनमें से प्रथम उम्मीदवार यशवंत सिन्हा थे। उनके बाद कई नेता तृणमूल में शामिल हुए। अंतिम थे हरियाणा के अशोक तंवर और पवन वर्मा।

त्रिपुरा के चुनाव वह मानदंड बन गए हैं जिनसे राष्ट्रीय राजनीति में ममता बनर्जी के रूतबे व स्थिति के दावे का आकलन किया जा सकता है। इसके परिणाम अब उसका खण्डन कर चुके हैं। कुछ अन्य तबाहियों ने बंगाल की इस सुपर स्टार के भविष्य पर प्रहार करना शुरू कर दिया है।

कलकत्ता हाई कोर्ट ने ममता के राइट हैण्ड एवं चुनाव एजेंट शेख सुफ़ीयान की हत्या के एक केस में जमानत याचिका रद्द कर दी है। कलकत्ता हाई कोर्ट ने आदेश दिया कि केस के तथ्यों और साक्ष्य को देखते हुए हत्या के संदिग्ध आरोपी की अग्रिम जमानत मंजूर नहीं की जा सकती।

ममता बनर्जी जिस नंदीग्राम निर्वाचन क्षेत्र में चुनाव लड़कर हार गईं थी, वहां के एक प्रमुख भाजपा कार्यकर्ता की चुनाव बाद हुई हिंसा में हत्या कर दी गई थी। सुफ़ीयान ने सी.बी.आई. जांच के लिए होने वाली अपनी गिरफ्तारी से बचने के लिए अग्रिम जमानत मांगी थी और हाई कोर्ट ने अब ममता को परेशानी में डालते हुए जमानत मंजूर किए जाने से इंकार कर दिया है। त्रिपुरा के नगर पालिका चुनाव एक से अधिक कारणों को लेकर सुर्खियों में रहे हैं। ममता बनर्जी जो कि राष्ट्रीय राजनीतिक परिदृश्य में अपने कद से भी अधिक बहु प्रचारित

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- तृणमूल ने बंगाल के चुनाव में जीत के बाद, हिंसा का खुला ताण्डव किया था। भाजपा कार्यकर्ता सैकड़ों की संख्या में मारे गये या भाग गये। भाजपा ने भी तृणमूल के साथ ऐसा ही बर्ताव किया त्रिपुरा में।
- बंगाल में जीत के बाद, ममता बनर्जी राष्ट्रीय राजनीति में निर्णायक भूमिका देखने लगी थीं तथा तृणमूल के नेता डैरेक ओ'ब्रायन कहने लगे थे, अब बंगाली प्रधानमंत्री का समय आ गया है।
- कई बुझे कारतूस जिनकी शुरूआत हुई थी, यशवंत सिन्हा से, व हरियाणा के अशोक तंवर एवं लेखक व विचारक पवन वर्मा भी ''लेटैस्ट आगमन'' थे, जिनके तृणमूल में शामिल होने से ममता के राष्ट्रीय नेता होने की महत्वकांक्षा को काफी हवा मिली थी।
- इस महत्वकांक्षा की उड़ान में पहला पड़ाव त्रिपुरा को होना था। परन्तु त्रिपुरा में तृणमूल एवं मार्क्सवादी पार्टी की हार ने महत्वकांक्षा को कुचल दिया।
- बंगाल व त्रिपुरा में भाजपा की रणनीति में एक बड़ा फर्क था। बंगाल में भाजपा के चुनाव अभियान में केन्द्रीय नेता हावी थे, पर त्रिपुरा में चुनाव अभियान व संचालन पूर्णतया स्थानीय नेताओं के हाथ में रहा तथा केन्द्र से हस्तक्षेप नगण्य रहा।

महंगाई के खिलाफ होने वाली देशव्यापी रैली की तैयारियों को परखने माकन आएंगे जयपुर

मंगलवार दोपहर 2 बजे प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर बैठक होगी

जयपुर, 29 नवम्बर (का.प्र.)। महंगाई के खिलाफ़ अभियान को गति देने के लिए कांग्रेस पार्टी 12 दिसंबर को दिल्ली में देशव्यापी विशाल रैली करने जा रही है। रैली में जहां देश भर से कांग्रेस कार्यकर्ता और नेता शामिल होंगे तो इसे सफल बनाने के लिए राजस्थान को भीड़ जुटाने की अहम जिम्मेदारी सौंपी गई है। वैसे भी मंत्री पद से हटने के बाद प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा के पास अब संगठन की जिम्मेदारी बची है। अत: अब वे दिल्ली रैली को सफल बनाने के लिए पूरा समय दे रहे हैं।

राजस्थान की सीमाएं दिल्ली से जुड़ी हैं। ऐसे में इस महंगाई के खिलाफ होने वाली रैली में प्रदेश से कांग्रेस पार्टी को सबसे ज्यादा उम्मीद है। यही कारण है कि कांग्रेस पार्टी इसे लेकर सक्रिय हो गई है और इस रैली को सफल बनाने के लिए राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष गोविंद डोटासरा कांग्रेस पदाधिकारियों के साथ ही मुख्यमंत्री और मंत्री परिषद के साथ चर्चा कर चुके हैं।

रैली की तैयारियों को परखने के लिए राजस्थान के प्रभारी महासचिव अजय माकन भी मंगलवार को जयपुर आ रहे हैं। वे इसे लेकर प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर बैठक लेंगे।

इस रैली की सफलता सरकार और संगठन के लिए कितनी महत्वपूर्ण है, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि रैली के 2 सप्ताह पहले मुख्यमंत्री और प्रदेश अध्यक्ष प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में बैठकर रैली को सफल बनाने का आव्हान मीडिया के जरिए कांग्रेस कार्यकर्ताओं से कर चुके हैं। अब इसी कड़ी में राजस्थान प्रदेश प्रभारी अजय माकन, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा मंगलवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में दिल्ली में होने वाली बैठक को सफल बनाने के लिए मंत्रियों, विधायको, विधायक प्रत्याशियों, सांसद प्रत्याशियों, पीसीसी पदाधिकारियों और निवर्तमान जिला अध्यक्षों को बुलाया गया है। मंगलवार को दोपहर 2 बजे होने वाली इस बैठक के जरिए इन सभी नेताओं के साथ राजस्थान कांग्रेस के तीनों प्रमुख नेता ज्यादा से ज्यादा कार्यकर्ताओं को ले जाने का रोड मैप तैयार करेंगे।

वैसे भी दिल्ली में होने वाली कांग्रेस की रैलियों में राजस्थान हरियाणा उत्तर प्रदेश और पंजाब पर ही सबसे ज्यादा भीड़ ले जाने का दारोमदार रहता आया है क्योंकि यह तमाम प्रदेश दिल्ली से नजदीक पड़ते हैं। यही कारण है कि राजस्थान से रैली में 30 -35 हजार लोगों को ले जाने की तैयारियां की जा रही हैं।

यू-टर्न से सभी खुश नहीं सरकार में

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 नवम्बर। संसद सत्र का पहला दिन कृषि कानूनों को वापस लिये जाने तथा मोदी सरकार द्वारा हमला किये जाने के नाम रहा।

सरकार ने तीनों कृषि कानून बिना किसी चर्चा के वापस ले लिये तथा विपक्ष को जबरदस्ती खामोश कर दिया। विपक्ष इन कानूनों तथा उन किसानों की दुर्दशा पर बहस करना चाहता था, जो पिछले सवा साल से सड़कों पर संघर्ष कर रहे हैं।

- इन लोगों को शिकायत है कि, पहले तो पार्टी ने सभी भाजपा सांसदों को, इन विधेयकों के पक्ष में, ''डिफैन्स'' में पूरा जोर लगाने के लिये कहा और फिर बिना बहस के ही कानून वापस ले लिये गये।

इसके शीघ्र बाद ही, राज्यसभा के सभापति ने कांग्रेस, टी.एम.सी. तथा शिवसेना के 12 विपक्षी सांसदों को पूरे शीतकालीन सत्र के लिए निलंबित कर दिया। शीतकालीन आज ही शुरू हुआ था। यह निलम्बन मानसून सत्र के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दोनों सदनों ने पांच-पांच मिनट दिये कृषि विधेयकों को

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 नवम्बर। चार सप्ताह चलने वाला संसद का शीतकालीन बड़े हंगामे, उत्तेजना एवं क्षोभ में शुरु हुआ तथा पहले लोकसभा में तथा उसके बाद राज्यसभा में वह विधेयक, किसी तरह की चर्चा कराये बिना, पाँच-पाँच मिनट में पारित हो, जो

- खड़गे राज्यसभा में, विधेयकों के पक्ष में दिये गये धरनों में 700 किसानों की मृत्यु की बात शुरू कर ही रहे थे कि, राज्यसभा के उपसभापति ने टोक कर बहस को रूकवाया।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राजस्थान का ''साइड शो'' लखनऊ में

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 नवम्बर। उत्तर प्रदेश की बड़ी चुनावी लड़ाई में राजस्थान का कोण भी जुड़ गया है। मरु-प्रदेश के बेरोजगार युवाओं के एक ग्रुप ने लखनऊ में उत्तर प्रदेश कांग्रेस कार्यालय के बाहर धरना शुरु कर दिया है तथा कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा से भेंट करने की माँग की है।

राजस्थान बेरोजगार एकीकृत महासंघ के बैनर तले जयपुर में इस महीने के शुरु में 47 दिवसीय विरोध-प्रदर्शन कर चुका है। ग्रुप की माँग थी कि उन रिक्त पदों पर नियुक्तियाँ प्रदान की जायें, जिनकी भर्ती हेतु राजस्थान सरकार परीक्षाएं आयोजित कर चुकी है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने विरोध प्रदर्शन कर रहे इन युवाओं से समझौता-वार्ता करने अपने नवनियुक्त सलाहकार दानिश अबरार को भेजा था, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला तथा इस ग्रुप ने 23 नवम्बर को अपना धरना-स्थल लखनऊ को बना लिया।

जाहिर है कि यह घटना मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के लिये परेशानी का कारण बन गई है, जो पार्टी की अंदरुनी खींचतान के कारण लम्बे समय से परेशान चल रहे हैं। मुख्यमंत्री इस कदम को उनके ''राजनैतिक विरोधियों द्वारा प्रेरित कदम'' मान रहे हैं। गहलोत का कहना है कि राजस्थान में सभी राज्यों से ज्यादा नौकरियाँ दी गई हैं। आंदोलन-स्थल के रुप में लखनऊ का चयन करने का उनका कदम आखिर क्या बताता है? गहलोत ने आगे कहा कि युवाओं के इस ग्रुप की रुचि नौकरियों से कहीं ज्यादा राजनीति में है। ''उन्होंने कहा, ''अगर उन्हें नौकरी दी भी जाती है तो ये नौकरी लेंगे नहीं, क्योंकि उनमें से कुछ लोग तो राजनीति में जाना चाहते हैं।''

प्रियंका गांधी वाड्रा को उत्तर प्रदेश के युवाओं में तवज्जो मिलती रही है। कांग्रेस ने सत्ता में आने की स्थिति में राज्य में 20 लाख नौकरियाँ देने का वादा भी किया है। उक्त महासंघ के आंदोलनकारियों का मानना है कि वाड्रा उनकी बात को ध्यान से सुनेंगी। इससे पूर्व यह ग्रुप विरोध-प्रदर्शन की अभिन्न रणनीतियाँ अपना चुका है, जिनमें शामिल हैं- कमीज़ उतारकर प्रदर्शन करना, राज्य के मंत्रियों को गुलाब के

- बेरोजगार युवकों ने लखनऊ में धरना दिया, प्रियंका गांधी से मिलने के लिये।
- अटपटी स्थिति बनती देख, मु.मंत्री ने सलाहकार दानिश अबरार को जिम्मेवारी सौंपी, इन युवकों से बातचीत करने के लिये।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बिना बहस के कृषि कानून वापस लिये गये संसद में

साथ ही पिछले मानसून सत्र में सदन में हाथापाई, महिला मार्शल के साथ अभद्रता आदि ''अपराधों'' के कारण राज्यसभा के बारह सांसद निलंबित किये गये

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 नवम्बर। संसदीय परम्पराओं के प्रतिघोर-असम्मान दर्शाते हुए अन्तर्गत, राज्यसभा के 12 विपक्षी सांसदों को मानसून सत्र के अंतिम दिन उनके कथित ''उद्दण्ड'' व्यवहार के परिणामस्वरुप आज शुरु हुये शीतकालीन सत्र से निलम्बित कर दिया गया।

पूरी दुनिया के संसदीय लोकतंत्र में विपक्ष की भूमिका को स्वीकार करने या उस पर ध्यान देने से इंकार करते हुये, सत्तापक्ष द्वारा पेश किये गये निलम्बन प्रस्ताव में कहा गया, ''इन सांसदों ने दुराचरण, तिरस्कारपूर्ण, उग्र तथा अनियंत्रित व्यवहार तथा सुरक्षाकर्मियों पर इरादतन हमलों के अभूतपूर्व कृत्य स्वैच्छया किया था।''

निलम्बित सांसदों की सूची में शमिल हैं- शिव सेना की प्रियंका चतुर्वेदी तथा अनिल देसाई, तृणमूल कांग्रेस की डोला सेन तथा शान्ता क्षेत्री, सी.पी.एम. के एलमा राम करीम तथा कांग्रेस के छः सांसद।

एक संयुक्त बयान में विपक्ष ने कहा है कि यह निलम्बन ''अनुचित, अकारण एवं अलोकतांत्रिक'' है। सभी विपक्षी दलों के राज्यसभा कल एक मीटिंग करके आगे की रणनीति बनायेंगे। लेकिन, इस पत्र पर तृणमूल कांग्रेस ने हस्ताक्षर नहीं किया, तृणमूल कांग्रेस विपक्ष की मीटिंग में भी शामिल नहीं हो रही है।

पूर्ववर्ती सत्र में किये गये काम के लिये, नए सत्र में सांसदों के खिलाफ कोई कार्यवाही करने का अब तक कोई पूर्वोदाहरण नहीं है। नियम 256, जिसके तहत वे निलम्बित किये गये हैं, कहता है कि किसी सांसद को ''उस अवधि के लिये निलम्बित किया जा सकता है, जो उस सत्र की शेष अवधि से ज्यादा न हो।''

इस नियम का उल्लेख करते हुये, राष्ट्रीय जनता दल के मनोज झा ने कहा कि अगर यह निलम्बन वापस नहीं लिया गया तो विपक्ष पूरे शीतकालीन सत्र का बहिष्कार करेगा। अस्त-व्यस्त स्थिति में चला मानसून सत्र, जिसमें ''पैगासस स्पाई वेअर'' के मुद्दे पर चर्चा की माँग को लेकर सरकार और विपक्ष में तनातनी चल रही थी, स्तब्ध कर देने वाली उग्रता तथा महिलाओं की हाथापायी के आरोपों के बीच 11 अगस्त को समाप्त हुआ था। सदन की स्थिति विस्फोटक हो गई थी, क्योंकि जनरल इन्श्योरेन्स बिजनैस (नैशनलाइजेशन) अमेंडमेंट बिल को प्रवर समिति को सौंपे जाने की मांगों के बावजूद, इस विधेयक को पारित कर दिया गया था। सदन की कार्यवाही की सी.सी.टी.वी. फुटेज, विपक्षी सदस्यों को राज्यसभा के अंदर सुरक्षाकर्मियों से हाथापाई करते हुये दिखा रही हैं। काले झंडे लिये हुये सांसद मेजों पर चढ़े हुये तथा फाइलों तथा कागज़ातों को बिखेरते हुये दिखाई दे रहे थे। जहाँ सरकार ने विपक्ष पर आरोप लगाया कि उसने महिला मार्शलों से हाथापाई की, वहीं विपक्ष ने एक संयुक्त बयान में आरोप लगाया कि ''विपक्षी नेताओं तथा सदस्यों, जिनमें महिला सांसद भी शामिल थीं, से हाथापायी करने के लिये'' बाहरी लोग ''अंदर लाये गये थे।''

सरकार ने विपक्ष के इन दावों का खंडन किया कि ''बाहरी लोग'' अंदर लाये गये थे, तथा अन्ततः इस मामले को जाँच के लिये सांसदों की एक विशेष कमेटी को सौंप दिया गया था। लेकिन कांग्रेस इस प्रकार की किसी भी कमेटी से अलग रही थी तथा उसने कहा था कि जाँच के जरिये सांसदों को डरा-धमका कर खामोश करने की कोशिश समाहित रहेगी।

राज्यसभा की सिक्योरिटी रिपोर्ट का कहना है कि एक सांसद ने हाथापाई की थी तथा ''एक पुरुष मार्शल का गला बुरी तरह दबा दिया था तथा सुरक्षा घेरे को तोड़ने के उद्देश्य से उसे अंदर घसीट लाया गया था।'' रिपोर्ट में यह भी कहा गया था कि महिला सांसदों ने एक महिला मार्शल को ''खींचा तथा घसीटा'' था तथा सदन के ''वैल'' में उस पर हमला बोला था।

किसान पिछले एक वर्ष से जिन तीन कृषि बिलों को लेकर दिल्ली की सीमा पर प्रदर्शन करते आ रहे थे, उन्हें रद्द करने के प्रति बहुत कम आदरभाव दर्शाया गया। संसद के सोमवार के मिनिट्स पर गौर कीजिए। लोकसभा में सुबह पारित किए गए विधेयक को दोपहर के भोजन के बाद राज्यसभा की कार्यवाही शुरु होते ही पारित कर दिया गया। विपक्ष ने सरकार की कटघरे में खड़ा करने की कोशिश में जो कि इन विधेयकों को वापस लेकर पहले ही बैकफुट पर है, बहस की मांग की थी।

- विपक्ष ने भी पलटवार में सरकार पर आरोप लगाया कि, चुनाव की दृष्टि से चयन करके सांसदों को निलंबित किया गया है। उदाहरण के लिये आप पार्टी के संजय सिंह को निलंबित नहीं किया गया, हालांकि हंगामे के वीडियो में संजय सिंह को हाथ में काला झण्डा लेकर राज्यसभा सचिवालय के स्टाफ की टेबलों पर चढ़कर नाचते हुए साफ देखा जा सकता है। सरकार आप पार्टी के सांसद को हीरो नहीं बनाना चाहती थी, पंजाब के चुनाव में।
- यहां यह भी उल्लेखनीय है कि, तृणमूल कांग्रेस ने संयुक्त विपक्ष के उस पत्र पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया, जिसमें विपक्ष की पार्टियों का, कल बैठक कर, सांसदों के निलंबन पर रणनीति तय करने के लिये मंथन करने का आव्हान किया गया है।
- विपक्ष में यह भी चर्चा का विषय है कि, जिस रूल के तहत इन सांसदों को निलंबित किया गया है, उसमें साफ लिखा है कि, सांसद का निलंबन केवल संसद के शेष ''पीरियड'' के लिये ही हो सकता है और हंगामे की घटना पिछले सत्र की है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'सैन्ट्रल विस्टा का निर्माण क्यों'

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 नवम्बर। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को केन्द्र सरकार से कहा कि वह देश की राजधानी में निर्माण कार्यों पर 24 नवम्बर को लगाए गए प्रतिबन्ध के बावजूद सैन्ट्रल विस्टा में जोर-शोर से चल रहे निर्माण कार्यों के बारे में अगली सुनवाई तिथि 2 दिसम्बर तक स्थिति स्पष्ट करे।

यह मामला चीफ जस्टिस ऑफ इण्डिया (सी.जे.आई.) एन.वी. रमन्ना की अध्यक्षता वाली एक विशेष बैंच के समक्ष दायर एक याचिका की सुनवाई के दौरान सामने आया। यह याचिका दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों में वायु प्रदूषण को लेकर दिल्ली के एक 17 वर्षीय छात्र ने दायर की थी। कोर्ट

- सुप्रीम कोर्ट ने सरकार से दो दिसम्बर तक जवाब मांगा कि, सुप्रीम कोर्ट द्वारा कन्स्ट्रक्शन पर लगाये गये प्रतिबंध के बावजूद निर्माण कार्य कैसे जारी है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

श्वास की क्रिया के समान हमारे चरित्र में एक ऐसी सहज क्षमता होनी चाहिए। जिसके बल पर जो कुछ प्राप्य है वह अनायास ग्रहण कर लें और जो त्याज्य है वह बिना क्षोभ के त्याग सकें। –टैगोर

और अब कोरोना के नए अवतार ओमिक्रान की दहशत

कोरोना के दो साल होने के बावजूद यह नए नए अवतार लेकर सामने आ रहा है। अब अफ्रीका से यह नया अवतार ओमिक्रान के रुप में दुनिया को हिलाने आ गया है। कोरोना के नए वैरियंट ओमिक्रान को विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा बैरियंट ऑफ कंसर्ट घोषित करने से ही इसकी गंभीरता को समझा जा सकता है।

विषेषज्ञों द्वारा माना जा रहा है कि कोरोना के डेल्टा अवतार से भी यह सात गुणा तेजी से फैलने वाला वैरियंट है। यह भी साफ हो जाना चाहिए कि वैरियंट की गंभीरता को देखते हुए उसे कंसर्ट ऑफ वैरियंट घोषित किया गया है अन्यथा स्थिति में तो सामान्यत: वैरियंट ऑफ इंटरेस्ट की श्रेणी में ही रखा जाता है। कंसर्ट की श्रेणी में गंभीरता को देखते हुए ही डाला जाता है।

विषेषज्ञों द्वारा माना जा रहा है कि यह वैरियंट डेल्टा से भी ज्यादा तेजी से फैलने वाला वैरियंट है। एक अनुमान के अनुसार डेल्टा से सात गुणा अधिक तेजी से यह फैलता है। गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि न्यूयार्क में 15 जनवरी, 2022 तक के लिए आपातकाल की घोषणा कर दी है तो दुनिया के देश दक्षिण अफ्रीका की यात्रा पर रोक लगा रहे हैं।

गौरतलब है कि कोरोना के ही वैरियंट डेल्टा ने अक्टूबर 2020 में भारत में प्रवेश किया और जबरदस्त तरीके से प्रभावित करने के साथ ही जानलेवा साबित हुआ। ओमिक्रान को गंभीरता से लेने का एक कारण यह भी है कि जहां एक और यह वैरियंट तेजी से फैल रहा है वहीं यह भी माना जा रहा है कि वैक्सीन इस पर अधिक असरकारक नहीं है। अफ्रीका में करीब दो माह से प्रभावित कर रहा यह वैरियंट ओमिक्रान पिछले चार से पांच दिनों में ही दक्षिण अफ्रीका के साथ ही हांगकांग, बोत्सवाना, बेल्जियम, जर्मनी, चेक गणराज्य, इजराइल और ब्रिटेन पहुंच गया है। भारत में भी बैंगलोर उतरे अफ्रीका से आए दो मरीज कोरोना संक्रमित मिलने से हडकंप मच गया है पर अभी यह पुष्ट नहीं हो पाया है कि वे ओमिक्रान से ही संक्रमित है या अन्य किसी वैरियंट से। इसी तरह से पुष्कर में तीन फ्रांसिसी महिला पर्यटकों के कोरोना संक्रमित मिलना चिंता का सबब बन गया है।

वर्तमान परिदृश्य में हम सबकी जिम्मेदारी हो जाती है कि लोगों को कोरोना प्रोटोकाल की सख्ती से पालना सुनिश्चित की जाए। लोगों को यह समझना होगा कि जीवन है तो सबकुछ है नहीं तो कुछ भी नहीं। ऐसे में अभी सतर्कता जरुरी है और इसे समझना व समझाना होगा।

ओमिक्रान की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि शुक्रवार को देश में शेयर बाजार धड़ाम से गिर गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात में चिंता व्यक्त की तो राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने उच्चस्तरीय बैठक कर आवश्यक निर्देश दिए और बूस्टर डोज की तैयारी करने को कहा। हांलाकि देश में कोरोना की चिंता के बीच ही 15 दिसंबर से अंतरराष्ट्रीय उड़ाने शुरु करने की घोषणा की गई है पर इसकी नए सिरे से समीक्षा की आवश्यकता हो गई है। योरोपीय संघ सहित दुनिया के देश अफ्रीका से हवाई उड़ानों पर रोक लगा रहे हैं। अब तक 1200 से अधिक संक्रमित मिलने से दुनिया दहशत में आ गई है। भारत सहित दुनिया के देश स्थितियों पर गंभीरता से नजर रखे हुए है और आवश्यक एहतियाती तैयारी में जुट गए हैं।

दरअसल यह माना जा रहा था कि कोरोना का अभिशाप अधिक दिन नहीं चलेगा पर देखते देखते दो सालों में ही दुनिया के देश इसके पांच वैरियंट से रुबरु हो चुके हैं। सितंबर 2020 में इंग्लैण्ड में अल्फा, मई, 2020 में दक्षिण अफ्रीका में बीटा, नवंबर, 2020 में ब्राजील में गामा, अक्टूबर, 2020 में भारत में डेल्टा और अब ओमिक्रान ने असर दिखाना शुरु कर दिया है। दरअसल वायरस की जीनोमिक संरचना में बदलाव होकर के यह नए वैरियंट का रुप ले लेता है। कोरोना ने वैसे तो पूरी दुनिया में अपना असर दिखाया है पर अमेरिका, ब्राजील, भारत संक्रमण और मौत के मामलों में सबसे अधिक प्रभावित देश रहे हैं।

दरअसल कोरोना जैसी महामारी से जुझने का दुनिया के देशों के सामने यह पहला अवसर आया है। इससे पहले प्लेग, कोलेरा, फ्लू, काला ज्वर, तपेदिक, पोलियो, एड्स, खसरा, चेचक जैसी कई महामारियों से जूझ चुका है। समय के साथ इनका ईलाज भी खोजा गया। पर मजे की बात यह है कि कोरोना के चलते तपेदिक वापिस अपना असर दिखाने लगी है और पिछले दिनों में तपेदिक के कारण मौत के मामलें लगातार बढ़ रहे हैं। सवाल यह है कि कोरोना प्रोटोकाल की बावजूद जिस तरह से कोरोना का थोड़ा असर कम दिखते ही प्रतिबंधों में छूट और शिथिलता बरती जाने लगी तो कोरोना नए अवतार में सामने आने लगा। नो मास्क नो एंट्रीऔर दो गज की दूरी के संदेश के बावजूद धीरे-धीरे इनका असर कागजी रहने से तबाही का मंजर जारी है। लापरवाही के चलते कोरोना है कि थोड़ी राहत देकर वापिस पूरी तेजी से आक्रामक हो रहा है। अभी वैक्सीनेशन भी पूरी तरह से नहीं हो पाया है। वैक्सीनेशन के कम असर के आए दिन आने वाले समाचारों से लोग हतोत्साहित हो रहे हैं सो अलग। दरअसल लोगों में निराशा अधिक व्याप्त होने लगी है। ऐसे में इस सबके साथ ही आशा और विश्वास की बूस्टर डोज ज्यादा जरुरी हो जाती है। मजे की बात यह है कि एक और वापिस कोरोना के मामलें बढ़ने लगे हैं तो दूसरी और शिथिलता भी बढ़ती जा रही है। योरोपीय देशों में पाबंदियों को हटानें को लेकर बड़े प्रदर्शन हो रहे हैं। ऐसे में सबकी जिम्मेदारी हो जाती है कि लोगों को कोरोना प्रोटोकाल की सख्ती से पालना सुनिश्चित की जाए। लोगों को यह समझना होगा कि जीवन है तो सब कुछ है नहीं तो कुछ भी नहीं। ऐसे में अभी सतर्कता जरुरी है और इसे समझना व समझाना होगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

उदयपुर के एम.ए.हुसैन की पेंटिंग को दुबई में मिला सर्वश्रेष्ठ कलाकृति का खिताब

हुसैन की पेंटिंग सवा लाख दिरहम भारतीय मूल्य 25 लाख रूपए में बिक्री

उदयपुर,(कासं)। दुबई के इंडियन कॉन्स्युलेट स्थित यूएई टॉलरेंस वीक -2021 के तहत डॉ. रोमित पुरोहित और पेंट ब्रश आर्ट कम्युनिटी की संस्थापक व सीईओ सोनल पुरोहित द्वारा आयोजित इंद्रधनुष एंड इंटरनेशनल ग्रुप ऑफ आर्ट एग्जिबिशन एंड वर्क शॉप में उदयपुर के आर्टिस्ट एम.ए. हुसैन की पेंटिंग इस साल दुबई में बिकी सबसे महंगी पेंटिंग्स में अपनी जगह बनाने में कामयाब हुई। सोनल पुरोहित ने बताया कि प्रदर्शनी में सात देशों के कलाकारों ने अपनी कलाकृतियों का प्रदर्शन किया। एग्जीबिशन में कलाकारों की 50 कलाकृतियों का प्रदर्शन किया। प्रदर्शनी में उदयपुर के जाने-माने पेंटर एम. ए. हुसैन की हुसैन बनाम हुसैन कलाकृति को सर्वश्रेष्ठ चुना गया। हुसैन की कलाकृति को सवा लाख दिरहम में खरीदा गया जिस का भारतीय मूल्य 25 लाख रुपए हैं।

- **प्रदर्शनी में सात देशों के कलाकारों ने कलाकृतियों का प्रदर्शन किया**
- **यह पेंटिंग इस साल बिकने वाली सबसे महंगी पेंटिंग्स में से एक है**

उदयपुर के एम.ए.हुसैन द्वारा कलाकृति।

यह पेंटिंग इस साल बिकने वाली सबसे महंगी पेंटिंग्स में से एक है। एग्जिबिशन को और आकर्षक बनाने के लिए इसमें फैशन शो का भी आयोजन किया गया जिसमें 46 कलाकारों ने ब्लू टीशर्ट पहन कर अपनी कलाकृति को प्रदर्शित किया।

इतिहास में पहली बार जाखम बांध नवम्बर माह में छलका

1986 के बाद 20 वीं बार चली चादर

धरियावद,(निसं)। धरियावद से 32 किमी दूर सीतामाता वन्यजीव अभ्यारण्य की गोद में स्थित राजस्थान का सर्वोच्च ऊंचाई वाला जाखम परियोजना सिचाई बांध लंबे इंतजार के बाद 29 नवम्बर को छलका। जाखम बांध की ऊचाई 31 मीटर (102 फिट) और भराव क्षमता 5 हजार 15 एमसीएफटी है। 1986 में प्रथम बार चादर चली तब से अब तक 20वी बार जाखम बांध लबालब होकर चादर चली है। अधिशाषी अभियंता भगवानसिंह करदम ने बताया कि पश्चिमी हवाओं का दबाव व मानसून रह रहकर उठ रहे है। विगत 10 दिन पूर्व बरसात होने के कारण पानी रिसता हुआ जाखम बांध में आ रहा था जिसके चलते अब जाकर इतिहास में पहली बार जाखम बनने के पश्चात नवम्बर माह में छलका। वही अब जाखम बांध की एलएमसी की नहर छोड़ दी गई है और आरएमसी नहर भी शीघ्र सिचाई हेतु छोड़ी जाएगी जिससे अब तक भराव क्षमता धीरे धीरे कम हो जाएगी जिसके चलते अब जाखम बांध की चादर नही बढ़ सकेगी।

- **जाखम बांध की ऊचाई 31 मीटर (102 फिट) और भराव क्षमता 5 हजार 15 एमसीएफटी है**

धरियावद के जाखम बांध की चादर चलने का नजारा।

अधिशाषी अभियंता रामाधार मीना ने बताया कि जाखम बांध की नहरों से 28 हजार 319 हेक्टर सिचित क्षेत्र में सिचाई की जाती है। क्षेत्र में असिचित सहित 58 हजार हेक्टर भूमि में पैदावार होती है। जाखम बांध बनने के पश्चात अब तक 19 बार चादर चली जिसमें सन 1986 में 2 मीटर 55 सेंटीमीटर, वर्ष 1988 में 15 सेंटीमीटर, 1989 में 85 सेंटीमीटर, 1990 में 1 मीटर 70 सेंटीमीटर, 1991 में 1 मीटर, 1994 में 1 मीटर 80 सेंटीमीटर, 1996 में 1 मीटर 20 सेंटीमीटर, 2001 में आधा मीटर, 2004 में 1 मीटर 85 सेंटीमीटर, 2006 में 3.5 मीटर, 2012 में सवार चार फिट, 2013 में 2 फिट, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019 में 1 मीटर 52 सेंटीमीटर के, वर्ष 2020 में 14 सितम्बर तथा इस सत्र 2021 में इतिहास में पहली बार नवम्बर माह में 29 नवम्बर को चादर चली।

17 मिनट में अनोखी शादी

श्रीमाधोपुर, (निसं)। निकटवर्ती ग्राम लापुंआ में रविवार को मुनीन्द्र धर्मार्थ ट्रस्ट, कुरुक्षेत्र हरियाणा के तत्वावधान में आध्यात्मिक सत्संग का आयोजन किया गया। सत्संग में समाज में फैली बुराइयों नशा, मृत्यु-भोज, दहेज प्रथा, पाखंडवाद, हिंसा, रिश्वतखोरी आदि को दूर कर एक सभ्य नागरिक बनने व स्वस्थ समाज का निर्माण करने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान को घर-घर व गांव-गांव पहुंचाने का आग्रह किया।

- **सत्संग के दौरान हुई इस शादी में न घोड़ी, न बैंड-बाजा, न दहेज, ना ही कोई पकवान था**

संत रामपाल जी महाराज की प्रेरणा से सुशीला पुत्री भोमाराम निवासी भवानीपुरा का विवाह हरिपुरा, रेनवाल निवासी पूरणमल पुत्र सोहन के साथ सादगी से हुआ।

दूल्हा-दुल्हन साधारण कपड़ो में गुरु संत रामपाल जी महाराज की तस्वीर के सामने बैठे और मात्र 17 मिनट की गुरुवाणी सुनकर एक दूसरे के साथ वैवाहिक बंधन में बंध गए। सेवादार महेंद्र दास ने बताया कि सत्संग के दौरान हुई इस शादी में न घोड़ी, न बैंड-बाजा, न दहेज, ना ही कोई पकवान था। दोनों तरफ से परिवारों की सहमति से शादी हुई।

हैडकांस्टेबल के निधन के बाद बेटियों की शादी के लिए साथियों ने जुटाए दो लाख रूपये

स्वयं के साथ ही जनसहयोग से एकत्रित दो लाख 121 रुपए की राशि सौंपी

राजसमंद, (निसं)। आमजन की सुरक्षा में 24 घण्टे तत्पर रहने वाले पुलिसकर्मी अपने साथ जवान के लिए भी उतने ही सजग है। कांकरोली थाने में हेडकांस्टेबल पदस्थापित मांगीलाल की बीमारी के चलते पिछले सप्ताह निधन हो गया। हैडकांस्टेबल के घर में उनकी दो पुत्रियों के विवाह होने व परिवार की आर्थिक स्थिति को समझते हुए कांकरोली थाने के पुलिस जवानों ने सहयोग राशि भेंट कर आर्थिक सहयोग दिया। कांकरोली थानाधिकारी योगेन्द्र व्यास की पहल पर कांकरोली थाने के पुलिस अधिकारियों एवं जवानों ने स्वयं की मदद के साथ कुछ सहयोग राशि भी एकत्रित की।

गौरतलब है कि कांकरोली थाने में तैनात देसूरी जिला पाली निवासी हैड कांस्टेबल मांगीलाल की दो बेटियों की 28 नवम्बर को शादी आ गई। बीमारी के चलते मांगीलाल का परिवार पहले से ही काफी आर्थिक संकटों से जूझ रहा था। यह देखते हुए कांकरोली थाना प्रभारी योगेन्द्र व्यास के निर्देशन में सभी जवानों व जन सहयोग से 2 लाख 121 रुपए एकत्र किए गए। इसके बाद सहायक उप निरीक्षक जसवंतसिंह, सूचना अधिकारी सहित कई जवानों ने राशि सुपूर्द की।

- **पुलिसकर्मियों ने दिया सामाजिक सरोकार का अनूठा उदाहरण**
- **लम्बी बीमारी के चलते कांकरोली हेडकांस्टेबल का हो गया था निधन**

राजसमंद में हैडकांस्टेबल मांगीलाल की पुत्रियों व परिजनों को सहायता राशि भेंट करते पुलिसकर्मी।

राशिफल मंगलवार 30 नवम्बर, 2021

पंडित अनिल शर्मा

मार्गशीर्ष मास कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2078, हस्त नक्षत्र रात्रि 8:34 तक, आयुष्मान योग रात्रि 12:02 तक, बव करण दिन 3:14 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-तुला, बुध-वृश्चिक, गुरू-कुम्भ, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

कुमार योग रात्रि 8:34 तक है। द्विपुष्कर योग रात्रि 2:14 से सूर्योदय तक है। राजयोग रात्रि 2:14 तक रहेगा। आज उत्पन्न (वैतरणी) एकादशी व्रत और पदम प्रभु मोक्ष दिन (जैन) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:39 से 10:57 तक, लाभ-अमृत 10:57 से 1:34 तक, शुभ 2:52 से 4:11 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:02, सूर्यास्त 5:29

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें दूर होने लगेंगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। अनावश्यक धन का व्यय हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि हो सकती है। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

तुला
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव रहेगा। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं।

वृश्चिक
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि हो सकती है। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

मकर
धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

मीन
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

आठ दिनों में 1500 किमी की दूरी तय करेगी स्वर्णिम विजय बाइक रैली

जयपुर, (कासं.)। कोटेश्वर, गुजरात से स्वर्णिम विजय वर्ष बाइक रैली को लेफ्टिनेंट जनरल पी एस मन्हास, जनरल ऑफिसर कमांडिंग, डेजर्ट कोर ने हरी झंडी दिखाकर 29 नवंबर को रवाना किया।

रैली में भारतीय सेना, भारतीय वायु सेना, भारतीय नौसेना, बीएसएफ, तटरक्षक बल, मीडियाकर्मी और मोटरसाइकिल के कुल 60 सवार भाग ले रहे हैं। वे भुज, अहमदाबाद, उदयपुर, जोधपुर, जैसलमेर से गुजरेंगे और अंत में 05 दिसंबर 2021 को लोंगेवाला में लोंगेवाला दिवस समारोह के साथ समापन होगा और आठ दिनों की अवधि में लगभग 1500 किलोमीटर की दूरी तय करेंगे।

रैली को हरी झंडी दिखाते हुए डेजर्ट कोर के जनरल ऑफिसर कमांडिंग ने कहा कि हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम अपनी सीमाओं की रक्षा करने वाले और दुश्मन के नापाक इरादों से अपने क्षेत्र की रक्षा करने वाले हमारे दिग्गजों के द्वारा दिये गए सर्वोच्च बलिदान को याद करें।

उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन लोगों से जुड़ने और उन्हें सशस्त्र बलों की वीरता और बलिदान की याद दिलाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। जावा मोटरसाइकिल के सहयोग से आयोजित की जा रही यह रैली, 1971 के युद्ध में पाकिस्तान पर हमारे राष्ट्र की जीत के 50 वें वर्ष को चिन्हित करने के लिए देश भर में आयोजित होने वाले समारोहों का एक हिस्सा है।

गुजरात से स्वर्णिम विजय वर्ष बाइक रैली को लेफ्टिनेंट जनरल पी एस मन्हास, जनरल ऑफिसर कमांडिंग, डेजर्ट कोर ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

नीति आयोग ने मंजूर किया तनोट-लोंगेवाला- बबलियान पर्यटन परिपथ

जैसलमेर, (नि.सं.)। अन्तर्राष्ट्रीय सरहद पर अवस्थित जैसलमेर जिले में सीमावर्ती पर्यटन को बढ़ावा देने को लेकर जिला कलक्टर आशीष मोदी की पहल जबरदस्त रंग लायी है। इस संबंध में जिला कलक्टर के निर्देश पर बनाए गए प्रोजेक्ट को नीति आयोग द्वारा मंजूर कर लिया गया है।

इस प्रोजेक्ट के अन्तर्गत सरहदी पर्यटन को बढ़ावा दिए जाने के साथ ही सीमा सुरक्षा बल की कार्य शैली के बारे में पर्यटकों में जागरूकता लाने तथा रोजगार के नये अवगसर सृजित करने के उद्धेश्य से तनोट-लोंगेवाला-बबलियान परिपथ को विकसित किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि जैसलमेर जिला आकांक्षी कार्यक्रम में शामिल है, जिसके अन्तर्गत जिला कलक्टर आशीष मोदी के प्रयासों से नीति आयोग ने सीमावर्ती पर्यटन को बढावा देने के इस प्रोजेक्ट को स्वीकृति प्रदान की है।

सार-समाचार

सियाणा सहकारी समिति का निरीक्षण

जालोर, (कासं)। जिला कलैक्टर नम्रता वृष्णि ने सोमवार को ग्राम सेवा सहकारी समिति सियाणा में संचालित महिला स्वयं सहायता समूहों, मिनी बैंक तथा सियाणा समिति का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिला कलैक्टर ने समूहों द्वारा निर्मित सामेला के बेडे, तौरण, ईडाणी, मॉस्क एवं अन्य उत्पादित सामग्री का अवलोकन कर समूहों के कार्यकर्ताओं की प्रशंसा करते हुए समूहों को अन्य उच्च स्तरीय सामग्री, ब्यूटी पार्लर एवं अगरबत्ती उद्योग लगाने के लिए भी प्रोत्साहित किया। उन्होंने किसानों को शून्य प्रतिशत के.सी.सी. ऋण का वितरण भी किया। सीसीबी के प्रबंध निदेशक ने जिला कलेक्टर को बताया कि सियाणा मिनी सहकारी बैंक में कुल 25 करोड़ की एफडीआर है। साथ ही सियाणा समिति में वर्तमान में लघु, मध्यम एवं दीर्घ साइज के कुल 500 लॉकर्स उपलब्ध है। सियाणा समिति में कुल 2270 सदस्य है। सियाणा समिति द्वारा इस वित्तीय वर्ष में कुल 2.50 करोड़ रूपये का अल्पकालीन फसली ऋण वितरण किया गया। सियाणा समिति से कुल 105 स्वयं सहायता समूह जुड़े हुए है। जिसमें से 35 स्वयं सहायता समूहों को ऋण वितरण किया जा चुका है। सियाणा समिति में ग्रेडिंग एवं सोर्टिंग प्लान्ट हेतु नाबार्ड द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई हैं साथ ही नाबार्ड द्वारा सियाणा समिति हेतु रूरल मार्ट मोबाईल वैन की स्वीकृति भी प्रदान की गई है। इस अवसर पर सरपंच हेमन्त कंवर, हरिसिंह सोलंकी, सहा. व्यवस्थपक, सहा. व्यवस्थपक प्रकाशसिंह, नरपत सिंह एवं सलाहकार प्रागाराम, शांतिलाल भट्ट, पदमाराम, गंगाराम, महेन्द्रसिंह चौहान, हकाराम भाटी उपस्थित थे।

सिरोही ने सर्वाधिक पदक जीते

आबूरोड, (निसं)। जयपुर में सवाई मानसिंह स्टेडियम में तीन दिवसीय कराटे प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस कराटे प्रतियोगिता में राज्य के 26 जिलों की टीमों ने हिस्सा लिया। जिला सिरोही के 54 खिलाड़ियों ने इस कराटे प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। जिला सचिव आर एस राजपूत के अनुसार कोच कनकसिंह के नेतृत्व में सभी खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। 22 स्वर्ण, 20० रजत एवं 37 कास्य पदक जीत कर राजस्थान के सिरोही जिले ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कोविड महामारी के चलते यह वार्षिक प्रतियोगिता 2 वर्ष बाद ही सम्भव हो पाई। बी जे एम एम के राष्ट्रीय अध्यक्ष महेश शर्मा एवं राजपुरोहित मधुर महाराज इस प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि थे। तानियसिंह, हर्षा बैरवा, मुकेश सोलंकी ने निर्णायक की भूमिका निभाई। जिला सचिव आर एस राजपूत को राजस्थान कराटे एसोसिएशन के सचिव अनिल कल्याण द्वारा रेफरी काउंसिल का चेयरमैन नियुक्त किया गया।

निंबावास में किसान गोष्ठी आयोजित

भीनमाल, (निसं)। भीनमाल ग्राम पंचायत निंबावास समिति भीनमाल में आत्मा योजना अंतर्गत किसान गोष्ठी का आयोजन सरपंच नारायण सिंह अध्यक्षता में किया गया। जिसमें रामचंद्र डांगी सहायक कृषि अधिकारी भीनमाल द्वारा कृषकों को आत्मा योजना एवं कृषक गोष्ठी के विषय में विस्तार से जानकारी दी गई एवं रबी फसलों में की जाने वाली कृषि क्रियाओं के बारे में बताया वहीं कृषि पर्यवेक्षक उतमाराम जीनगर द्वारा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना एवं अनुदानित योजना रवि प्रदर्शन आयोजन के बारे में जानकारी दी एवं पशुपालन विभाग के विक्रम सिंह सैनी पशुधन सहायक द्वारा पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान पशु बीमा पौष्टिक आहार पशुओं में टीकाकरण के विषय पर बताया। वही महेंद्र चौधरी द्वारा रसायनिक खाद के बारे में जानकारी दी और प्रयोग एवं रासायनिक खाद की पहचान एवं संतुलित मात्रा में प्रयोग करने के बारे में बताया। रामलाल कृषि पर्यवेक्षक द्वारा मुद्रा स्वास्थ्य जांच एवं सुपर कंपोस्ट बनाने एवं सूक्ष्म पोषक तत्वों के प्रयोग के बारे में बताया इसके अलावा सरपंच नारायण सिंह ने ग्राम निंबावास में आयोजित होने वाले प्रशासन गांवों के संग शिविर में आने एवं शिविर में होने वाले कार्यों के विषय पर भी चर्चा की गई एवं प्रशिक्षण शिविर की प्रशंसा की गई। इस दौरान शिविर में कृषि पर्यवेक्षक राम रतन सैनी, इंदर सिंह राणावत, वरदाराम चौधरी कृषक मित्र व कृषकों ने भाग लिया।

चौपाराम को नहीं मिल रही पेंशन

आबूरोड, (निसं)। उपलागढ़ ग्राम पंचायत के राडा गांव निवासी एक विकलांग को विकलांग पेंशन नहीं मिले हुए पांच वर्ष से अधिक का समय बीत गया है। पेंशन के लिए बैंकों एवं विभिन्न दफ्तरों के चक्कर काटने के बाद भी उसे राहत नहीं मिल रही है। उपलागढ गांव के राडा निवासी पैर से विकलांग चौपाराम गरासिया जन्म के कुछ वर्षों बाद पैर से विकलांग हो गया था। विकलांग पेंशन शुरू भी हुई थी, लेकिन बाद में बंद हो गई। बंद होने के बाद वह एक पैर से लकड़ी के सहारे आबूरोड उप कोषागार कार्यालय, पंचायत समिति, तहसील, बैंक आदि दफ्तरों में जाकर पेंशन सुचारु करवाने का प्रयास किया, लेकिन कहीं से कोई राहत नहीं मिली। जीविका की मात्र सामाजिक सुरक्षा विकलांग पेंशन बंद होने से मूलभूत जरूरतों के इंतजाम लड़खड़ाने लगे हैं।

एस.डी.एम. अभिषेक सुराणा ने ली बैठक

आबूरोड, (निसं)। सिरोही जिले आबूरोड पंचायत समिति सभागार में सोमवार को उपखण्ड अधिकारी अभिषेक सुराणा ने बैठक ली। एसडीएम अभिषेक सुराणा ने वन धन केंद्र की महिला समूह की अध्यक्ष व सदस्यों की बैठक ली। बैठक में एसडीएम ने केंद्र की महिलाओं को ग्रामीण इलाकों में महिलाओं को स्वाल बी बनाने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिए। समूह द्वारा महिलाओं की आजीविका के लिए अधिक महिलाओं को समूह से जोड़ने पर जोर दियां बैठक में राजीविका मिशन प्रभारी समेत कई महिलाएं मौजूद रही। ब्लॉक समन्यवक अधिकारी वीरेंद्र त्रिवेदी भी मौजूद रहे।

60 किलो पॉलिथीन जब्त की

पिंडवाड़ा, (निसं)। स्थानीय नगरपालिका अधिशाषी अधिकारी दीपीका वीरवाल के निर्देशानुसार कार्यवाहक स्वास्थ्य निरीक्षक मुकेश कुमार हरिजन, वाहन चालक मुकेश कण्डारा सहित अन्य कार्मिको ने सिरोही रोड़ प्रतिबंधित पॉलिथीन की थैलियां, गिलास सहित अन्य सामग्री करीब साठ किलो जब्त की गई। साथ ही 15 सौ रूपये का जुर्माना भी जब्त किया। दुकानदारो व हाथ लॉरीयों वालों में हड़कम्प मच गया। ईओ ने कार्रवाई निरन्तर जारी रखने के निर्देश दे रखे हैं, ताकि नगर को स्वस्थ व सुन्दर बनाया जा सके। आमजन की भागीदारी सुनिश्चिच करने का आहवान किया।

भाजपा महिला मोर्चा की बैठक

पिंडवाड़ा, (निसं)। भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष नारायण पुरोहित भाजपा जिला महिला अध्यक्ष अंजू वशिष्ठ की मौजूदगी में सोमवार को महिला मोर्चा के नगर उपाध्यक्ष सजंनकुवर की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें महिला नगर अध्यक्ष के पद पर संतोष अग्रवाल को जिम्मेदारी सौंपी गई। इस अवसर पर भाजपा नगर अध्यक्ष महावीर यति ने महिला मोर्चा की नवयुक्त अध्यक्षा सन्तोष अग्रवाल का स्वागत कर शुभकामनाएं दी। इस दौरान नवनियुक्त अध्यक्ष अग्रवाल ने बताया की संगठन का काम पूर्ण निष्ठा से करूंगी ओर पार्टी मे सभी समाज की महिला कार्यकर्ताओं को भाजपा संगठन में जोड़कर शीघ्र ही महिला नगर कार्यकारिणी की घोषणा करूंगी। भाजपा मण्डल की मंत्री सीमा वछेटा, पार्षद नीता चोहान, ललिता कुंवर, रेखा जैन, सुनीता यति उपस्थित थी।

'करोना गाइड लाइन की पालना करें'

रानी, (नि.स.)।(निसं)। कोविड की पुनः संभावनाओं को देखते हुए सरकार द्वारा जारी नई करोना गाइड लाइन की पालना करवाने के लिए सोमवार को नगरपालिका रानी द्वारा माइक से मुनादी कर आमजन को सतर्क किया। अधिशासी अधिकारी दीनमोहम्मद एवं थानाधिकारी हिंगलाजदान ने बताया कि राज्य सरकार की नई गाइड लाइन एवं जिला कलेक्टर के निर्देशानुसार आमजनों को मास्क पहनने व सामाजिक दूरी बनाये रखने की अपील की । उन्होंने बताया कि दुकानदार बिना मास्क पहने ग्राहकों को सामान नहीं दें । नई गाइड लाइन आने पर सख्ती से जांच कार्य प्रारंभ होंगे। उन्होंने सभी लोगों से सहयोग करने की अपील की।

कंटीली झाड़ियों से हो रही है परेशानी

आबूरोड, (निसं)। सिरोही जिले के तहलटी से उमरणी जाने वाले मार्ग पर कटीली झाड़ियां होने से हादसे की आशंका बनी हुई है। कंटीली झाड़ियां होने से आवगमन करने वाले राहगीरों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में आये दिन दुर्घटना होने का भी खतरा बना रहता है। पंचायत प्रशासन कई बार शिकायत के बावजूद ध्यान नहीं दे रहा है।

जनता का काम ही प्राथमिकता रहेगी : हेमाराम चौधरी

गुड़ामालानी, (निसं)। हेमाराम चौधरी वन एवं पर्यावरण मंत्री बनने के बाद सोमवार को पहली बार अपने विधानसभा क्षेत्र गुड़ामालानी पहुंचे तथा समाज कल्याण छात्रावास अनुसूचित जाति गुड़ामालानी के भूमि पूजन का शिलान्यास किया। बाद में डाक बंगला पर आम सभा का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम मुख्य अतिथि वन एवं पर्यावरण मंत्री हेमाराम चौधरी, प्रधान बिजलाराम चौहाना, धोरीमन्ना पूर्व प्रधान ताजाराम चौधरी, सिणधरी पूर्व प्रधान सोहनलाल भांभु, कुंवर सुरेंद्र सिंह राठौड़, पताराम चौधरी, उपखंड अधिकारी प्रमोद कुमार, तहसीलदार बन्नाराम चौधरी, सुनीता चौधरी के आतिथ्य में आयोजित हुआ ।

वन एवं पर्यावरण मंत्री हेमाराम चौधरी का धोरीमन्ना, रामजी का गोल, गुड़ामालानी सहित क्षेत्र के गांवों में पहुंचने पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं एवं ग्रामीणों ने स्वागत कर बधाईयां दी । डाक बंगला पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए चौधरी ने कहा कि मैं जनता के विश्वास पर खरा उतरूंगा तथा जनता का काम ही मेरी प्राथमिकता रहेगी। कुंवर सुरेन्द्र सिंह राठौड़ ने कहा कि विधानसभा क्षेत्र गुड़ामालानी की जनता ने हेमाराम चौधरी पर हमेशा विश्वास एवं आशा रखी है। जनता के विश्वास हमेशा कायम रहेगा। आप ने भी जनता के भरोसे को कायम रखते हुए जनता की आशाओं पर खरा उतरने की बात कही । कार्यक्रम में कुंवर अनुक्रमण सिंह,पूर्व सरपंच दिनेश पी शर्मा, रमेशलाल जोशी कांतिलाल सोनी, जवानाराम चौधरी, रावताराम चौधरी, नाथाराम चौधरी, खुमाराम चौधरी, कैलाश भार्गव, भोमाराम सियोल, दिनेश पटेल, धर्माराम चौधरी बाटा सहित कांग्रेस कार्यकर्ता एवं लोग उपस्थित रहे।

बाड़मेर जिले के धोरीमन्ना में वन एवं पर्यावरण मंत्री हेमाराम चौधरी का स्वागत किया। फोटो-राष्ट्रदूत

हेमाराम चौधरी को प्रशासनिक अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों ने गुलदस्ता बैठकर बधाई दी ।

धोरीमन्ना संवाददाता के अनुसार : पंचायत समिति धोरीमना में सोमवार को ब्लॉक कांग्रेस कमेटी धोरीमन्ना के तत्वावधान में वन एवं पर्यावरण कैबिनेट मंत्री हेमाराम चौधरी के कैबिनेट मंत्री बनने के बाद धोरीमना उपखंड मुख्यालय प्रथम बार आगमन पर स्वागत एवं अभिनंदन किय गया।

इस दौरान चौधरी का काफिला सैकड़ों गाड़ियों व डीजे की धुन के साथ लोक देवता आलमजी के मंदिर पहुंचा तथा धोक लगाकर क्षेत्र में खुशहाली की कामना की। तत्पश्चात पंचायत समिति परिसर में ब्लॉक कांग्रेस कमेटी की तरफ से आयोजित अभिनंदन कार्यक्रम में शिरकत की। ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष दिनेश कुलदीप के नेतृत्व एवं कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ताओं तथा जनप्रतिनिधियें ने 21 किलो पुष्प की माला पहनाकर आभार अभिनंदन किया गया। हेमाराम चौधरी ने अपने उदबोधन में कहा कि मैं सदैव गुड़ामालानी की जनता का ऋणी हूं और मेरा प्रयास है कि मैं आपके सुख दुख में सदैव आप का बेहतरीन सहयोग कर सकूं, आपका काम कर संकू।

कार्यक्रम में पंचायत समिति प्रधान इंदु वाला बिश्नोई, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष दिनेश कुलदीप, पूर्व प्रधान ताजाराम चौधरी, वरिष्ठ कांग्रेसी नेता गोरधन राम विश्नोई, पूर्व प्रधान वर्षा विश्नोई, पायला कला पंचायत समिति के प्रधान चुना राम माचरा, बाडमेर ग्रामीण के प्रधान खरताराम गोदारा, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कैलाश बेनीवाल, पूर्व जिला प्रमुख जालोर मंजू मेघवाल, चैनपुरा सरपंच प्रतिनिधि ओम प्रकाश गीला सहित कई जने उपस्थित रहे।

समाज के लिए एकजुटता दिखाएं : करणवीर भाद्राजून

जालोर के पास भाद्राजून में क्षत्रिय युवक संघ के हीरक जयंती समारोह की तैयारी को लेकर बैठक आयोजित हुई। फोटो-राष्ट्रदूत

जालोर, (कासं)। करणवीरसिंह भाद्राजून ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की हीरक जयंती को लेकर सोमवार को भाद्राजून गढ़ में हुई बैठक में कह कि क्षत्रिय युवक संघ द्वारा क्षत्रिय समाज को अपने सामाजिक भाव के प्रकटीकरण का हीरक जयंती के रूप में शुभ अवसर प्राप्त हुआ है। सामूहिक रूप से प्रयास करते हुए प्रजातांत्रिक प्रणाली में हम सभी को एकजुटता दिखानी चाहिए।

शक्तिसिंह रामा, अजयपाल सिंह वागुंदा, अमरसिंह रेलिया गुडा, खुमानसिंह दूधिया सहित लोगों ने गांव-गांव में प्रचार आर्थिक सहयोग और व्यवस्था को लेकर बैठकें आयोजित करने तथा राजपूत समाज के अधिकाधिक लोगों को 22 दिसंबर को भवानी निकेतन प्रांगण जयपुर में होने वाले समारोह में भाग लेने के लिए योजना तैयार की।

संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देललरी ने समाज के युवाओं से आहवान करते हुए इस अवसर पर सामाजिक एकजुटता बताते हुए अमृत महोत्सव के यज्ञ में अपनी आहुति देकर कृतज्ञता प्रकट करने की बात कही।

संभागीय विस्तारक गणपतसिंह भंवरानी ने सोमनाथ महादेव मंदिर सराणा व गोवर्धनसिंह बाला के आतिथ्य में बाला ठिकाने में बैठकों का आयोजन कर सभी से जयपुर में होने वाले कार्यक्रम में भाग लेने का आहवान किया।

इस दौरान डॉ. गणपतसिंह सराणा, भगवतसिंह सराणा, शंभूसिंह सराणा, परमेंद्रसिंह, रविंद्रसिंह, विजयसिंह, भोमसिंह, गंगासिंह बाला, बृजपालसिंह, अर्जुनसिंह, रघुवीरसिंह, महावीरसिंह व उदयसिंह सहित सभी युवाओं ने प्रचार में जुड़ते हुए कार्य योजना तैयार करना प्रारंभ किया।

सीबीआई जांच की मांग पर फिर वाल्मिकी समाज धरने पर बैठा

जोधपुर, (कासं)। शहर में हुए लवली कंडारा एनकाउंटर में वाल्मिकी समाज फिर से सीबीआई जांच की मांग को लेकर सोमवार से अनिश्चितकालीन धरने पर बैठ गया है। मांगे नहीं माने पर अब फिर से राजस्थान में झाडू डाउन हड़ताल की चेतावनी गई है।

उल्लेखनीय है कि जोधपुर में बनाड़ क्षेत्र में लवली कंडारा का एनकाउंटर हुआ था। 14 अक्टूबर को हुए इस एनकाउंटर में लवली कंडारा की उपचार के दौरान मौत हो गई। उसके बाद वाल्मीकि समाज ने एनकाउंटर करने वाले पुलिस कर्मी को बर्खास्त करने की मांग व मामले में सीबीआई जांच की मांग को लेकर कंडारा का शव नहीं उठाया। एमडीएम अस्पताल की मोर्चरी के बाहर वाल्मीकि समाज धरने पर बैठ गया। इस मामले में पुलिस कर्मियों के निलंबन व सीबीआई जांच का पत्र सरकार को लिखने के आश्वासन के बाद कंडारा का अंतिम संस्कार चार दिन बाद किया गया।

फिर से सक्रिय हुआ समाज:

इस मामले में वाल्मीकि समाज सोमवार को फिर सक्रिय हो गया। मामले में सीबीआई जांच की मांग के साथ उदयमंदिर से मोहनपुरा पुलिया तक जुलूस निकाला गया। पावटा में जिला कलेक्ट्रेट परिसर के बाहर धरने पर बैठ गए। सफाई आयोग के पूर्व अध्यक्ष चंद्र प्रकाश टाइसन ने कहा कि वाल्मीकि समाज की ओर से एक डेलिगेशन मुख्यमंत्री से मिलने गया है।

जालोर में शैक्षिक सम्मेलन का आगाज

जालोर,(कासं)। राजस्थान शिक्षा सेवा परिषद (रेसा) जालोर का शैक्षिक सम्मेलन सोमवार को जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) जालोर में आयोजित किया गया।

जिसमें मुख्य अतिथि कमल सिंह जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक जालोर, एवं अध्यक्षता चुन्नी लाल परिहार मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी जालोर तथा विशिष्ट अतिथि भैरा राम चौधरी प्रधानाचार्य डाइट जालोर, संतोष कुमार दवे पूर्व ब्लॉक शिक्षा अधिकारी जालोर थे। जिला अध्यक्ष आनंद सिंह राठौड़ ने बताया कि रेसा संघटन जिसमें माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक से लेकर विभाग के संयुक्त निदेशक स्तर के अधिकारियों का संगठन है जो शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक हितों की पूर्ण रक्षा करता है तथा संगठन में कार्यरत जिले के सभी सदस्यों ने आज शैक्षिक क्षेत्र में हो रहे नवाचार ओर शैक्षिक समस्यों पर विचार विर्मश किया। सम्मेलन में मुख्य अतिथि कमल सिंह ने रेसा संगठन द्वारा रखी गयी मांग पर पीईईओ स्तर पर कार्य की अधिकता पर राज्य सरकार को उचित माध्यम से अवगत करवाने की बात कही। समारोह के अध्यक्ष चुन्नी लाल परिहार ने शैक्षिक क्षेत्र में नवाचार ओर ब्लॉक स्तर पर संस्था प्रधान के दायित्व ओर कर्तव्य पर प्रकाश डाला और हर स्तर पर सहयोग का आश्वासन दिया। विशिष्ट अतिथि भैरा राम चौधरी प्रधानाचार्य डाइट ने रेसा के माध्यम से हर स्तर पर शिक्षा अधिकारियों में सहयोग की भावना विकसित करने की बात कही। साथ ही शैक्षिक ओर सहशैक्षिक स्तर पर गुणवत्ता लाने की बात कही। संस्था प्रधान पर जिम्मेदारी बहुत ज्यादा है लेकिन उसे विभाग हित में धैर्य पूर्वक कार्य कर उपलब्धि को हासिल किया जा सकता है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि संतोष कुमार दवे में रेसा संगठन के बारे में विस्तारपूर्वक बताया गया। साथ ही पूर्व ओर वर्तमान के साथ सामंजस्य बनाकर चलने की सभी से अपील भी की। सम्मेलन में मंच का संचालन जबर सिंह देवडा ने किया

इस अवसर पर अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी मोहन लाल परिहार, अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक चंद्र कांत रामावत, प्रधानाचार्य प्रेम सिंह, मिश्री मल, महेंद्र सिंह चौहान, जगदीश चौहान, नारायण लाल चौधरी, अर्चना गहलोत, अरविंद कुमार, लाला राम सेन सहित रेसा के जिलेभर के संस्था प्रधानों ने भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में जिलाध्यक्ष आनंद सिंह राठौड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया।

शिक्षक संघ शेखावत के शैक्षिक सम्मेलन का हुआ आगाज: राजस्थान शिक्षक संघ शेखावत जालोर का दो दिवसीय जिला शैक्षिक सम्मेलन सोमवार को पंचायत पंचायत समिति सभागार जालोर में प्रारंभ हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि जालोर पंचायत समिति के प्रधान नारायण सिंह राजपुरोहित थे। अध्यक्षता जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक कमल सिंह परमार थे। विशिष्ट अतिथि मुख्य ब्लाक शिक्षा अधिकारी चुन्नीलाल परिहार, जयनारायण विश्वविद्यालय जोधपुर असिस्टेंट प्रोफेसर भरत मेघवाल व अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी मोहन लाल परिहार थे। सम्मेलन संयोजक बरकत खान ने बताया कि अतिथि गणों ने विद्या की देवी मां सरस्वती की तस्वीर के आगे दीप प्रज्जवलन व माल्यार्पण कर कार्यक्रम का आगाज किया। हिमांनी वैष्णव ने सरस्वती वन्दना पर सुन्दर प्रस्तुति दी। संगठन की जिला मंत्री शैलजा माथुर को राज्य शिक्षक पुरस्कार मिलने पर मिलने पर माल्यार्पण, शॉल ओढाकर तथा उपहार भेंट कर स्वागत किया। गायक फारुख को दीवाना ने गीत गाकर वाह वाही लूटी। जिला संयोजक दलपत सिंह आर्य ने स्वागत उद्बोधन देते हुए संगठन की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संगठन के गठन के पश्चात मात्र तीन साल में शिक्षकों की प्रत्येक वाजिब समस्या को लेकर हमेशा आगे रहे हैं। हम कम समय में संगठन की रीति नीति से लोगों को जोड़ पाए हैं। उन्होंने आश्वस्त किया कि संगठन शिक्षकों की समस्याओं को लेकर संघर्ष जारी रखेंगे। प्रधान नारायण सिंह राजपुरोहित ने कहा कि कहा कि शिक्षक समाज का दर्पण होता है। उन्होंने शिक्षकों द्वारा कोरोना काल में किए गए के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि शिक्षकों को भी उचित सम्मान मिलना चाहिए। जय नारायण विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. भरत मेघवाल ने शिक्षा नीति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कई सुधारों की आवश्यकता है। जिससे शिक्षा का सही स्वरूप बच्चे तक पहुंचे। जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक कमल सिंह ने कहा कि शिक्षक ही समाज की में चेतना जागृत कर सकता है। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी चुन्नीलाल परिहार ने शिक्षकों की वाजिब समस्या के लिए हर समय तैयार रहने के बाद कई बात कही। प्रदेश उपाध्यक्ष शिवदत्त आर्य ने राज्य कर्मचारियों एनपीएस को बंद कर पुरानी पेंशन बहाल करने की पुरजोर वकालत की। जिला संरक्षक ओमप्रकाश खंडेलवाल व गोपाल सिंह मंडलावत ने शिक्षकों की समस्या पर ध्यान देने का आग्रह किया। जिला संयोजक गोविंद सिंह राव ने आभार जताया। संचालन शिवदत्त आर्य ने किया। इस अवसर पर प्रशांत सिंह, विजय सिंह इन्दा, सह संयोजक दमयंती वैष्णण, भंवरु खां, भोलाराम देवासी, राजेंद्र कुमार सुंदेशा, मनोज चौधरी, कृष्ण कुमार तिवारी, जेठाराम सुथार,सुशील पाल सिंह, नसीर खान, ओमप्रकाश गर्ग, बरकत खान, राकेश शर्मा, नरेंद्र खत्री, पूनम सिंह बालावत, अनीशा बानो, गुणवंती नागर, प्रीति, लता मुकेश, अंजना शर्मा, प्रवेश कुमारी,ललित प्रसाद शर्मा, नरेंद्र सोनी,सुरेश राव, राजेन्द्र टेलर सहित बागोडा, सायला, आहोर, भीनमाल जसवंतपुरा सहित कई दूरदराज इलाके के शिक्षक व शिक्षिकाएं उपस्थित थे।

सार-समाचार

शिक्षक संघ रा.का सम्मेलन शुरू

पिंडवाड़ा, (निसं)। पिंडवाड़ा में शिक्षक संघ राष्ट्रीय का शैक्षिक सम्मेलन सोमवार को प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ओटाराम देवासी पूर्व राज्य मंत्री, अध्यक्षता अर्जुन पुरोहित जिला प्रमुख सिरोही ने की। वही विशिष्ट अतिथि जगसीराम कोली विधायक रेवदर - आबू, विशिष्ट अतिथि प्रभूराम हिरागर वासा,ओम प्रकाश शर्मा , शंभू प्रसाद रावल स्वरूपगंज, अनिल कुमार मीणा, मुख्य वक्ता रामचंद्र रावल , प्रदेश पर्यवेक्षक महेन्द्र लखारा प्रदेश कोषाध्यक्ष, किरण राजपुरोहित की मौजूदगी में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि पूर्व राज्य मंत्री ओटाराम देवासी ने शिक्षकों को कहा कि शिक्षकों ने सदैव शिक्षा के प्रसार - प्रचार और राष्ट्र निर्माण मे सदैव लगे हुये हैं। जिला प्रमुख अर्जुन पुरोहित ने कहा कि शिक्षक सकारात्मक ऊर्जा के साथ समाज में शिक्षा का अधिकाधिक प्रसार- प्रचार करें। रेवदर-आबू विधायक जगसीराम कोली ने संबोधन में सभी शिक्षकों को करोना काल अपनी महत्ती भूमिका के लिये साधुवाद दिया तथा कहा शिक्षक अपने पूर्ण सामर्थ्य से विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में लगे रहे। मुख्य वक्ता रामचन्द्र रावल ने कहा कि समाज में नैतिक मूल्यों मे गिरावट आ गई है, जिसे शिक्षक अपने सामर्थ्य से पुनः स्थापित कर सकते है। प्रदेश पर्यवेक्षक महेन्द्र कुमार लखारा संगठन कि प्रदेश स्तर कि विभिन्न गतिविधियों के बारे बताया। तथा कहा कि कोरोना काल मे संगठन शिक्षकों कि समस्याओं के निराकरण के लिये निरन्तर शिक्षा मंत्री से मिलता रहा तथा समस्याओं से अवगत करवाते हुये उन्हें निस्तारित करवाया।इस अवसर पर सम्मेलन मे प्रदेश कार्यकारिणी के सतीश शर्मा, ऋतु भटनागर , अधिवेशन संयोजक मनमोहन शर्मा , जिला अध्यक्ष कानाराम प्रजापति, जिला मंत्री शैतान सिंह राठौड़, सहसंयोजक लक्ष्मी लाल खण्डेलवाल, मनोज शर्मा, मनोहर सिंह उदावत, डूंगर सिंह देवडा आदि उपस्थित थे।

सड़कों के कार्यों की समीक्षा की

जालोर, (कासं)। जालोर जिले की समस्त सड़कों तथा दोनों टोल से संबंधित बैठक जिला कलैक्टर नम्रता वृष्णि की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमें बजट घोषणा में पारित हुई। सड़कों एवं प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से सम्बन्धित सड़कों के निर्माण कार्य, पेचवर्क आदि की समीक्षा की गई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए जिला कलैक्टर नम्रता वृष्णि ने कहा कि सड़क निर्माण व पेचवर्क कार्य में तीव्रता के साथ गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखते हुए प्रभावी मॉनिटरिंग की जों जिससे आमजन को राहत मिल सकें। वीसी के माध्यम से जुड़े सांसद देवजी पटेल ने में सड़कों की गुणवत्ता के लिए ठेकेदार को पाबंद करने एवं लापरवाही बरतने पर कार्यवाही करने की बात कही। जिला प्रमुख राजेश कुमार ने सड़कों के पेचवर्क की जानकारी लेते हुए आमजन को राहत प्रदान करने की बात कही। जालोर विधायक जोगेश्वर गर्ग ने पानी के बहाव से टूटी सड़कों की मरम्मत करने एवं कार्यादेश जारी होने के बाद भी कार्य में विलंब करने वाले ठेकेदारों के विरूद्ध कार्यवाही करने की बात कही। आहोर विधायक छगनसिंह राजपुरोहित ने कहा कि टोल रोड़ पर चल रहे नवीनीकरण कार्य की प्रभावी मॉनिटरिंग की जाकर समय समय पर गुणवत्ता की जांच की जाए। रानीवाड़ा विधायक नारायणसिंह देवल ने कहा कि ओवरलोड वाहनों पर सख्त कार्यवाही की जायें उन्होंने पुलिस विभाग एवं आरटीओ के संयुक्त दलों द्वारा ओवरलोड वाहनों पर कार्रवाई करवाने एवं पाबंद करने की बात कही। बैठक में आरआईडीएफ,आरयूबी, अनकनेक्टेड रेवेन्यू विलेज, पीपीपी,मिसिंग लिंक,सीआरएफ, डीएमएफटी के तहत होने वाले निर्माण कार्य सहित विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई। इस दौरान अतिरिक्त जिला कलक्टर लोकेश कुमार मीणा, उपखण्ड अधिकारी चम्पालाल जीनगर व सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधीक्षण अभियंता रमेश सिंघाडिया आदि उपस्थित रहे।

शिक्षक संघर्ष को तैयार रहें : आमेटा

आबूरोड, (निसं)। शिक्षक सत्याग्रह की किमत समझे और सदैव संघर्ष के लिए तैयार रहे। इस संगठन का इतिहास संघर्षपूर्ण रहा है। यह बात शिक्षक संघ प्रगतिशील के प्रदेश अध्यक्ष श्यामलाल आमेटा ने सोमवार को संघ के दरबार स्कूल में शैक्षिक अधिवेशन को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि सभी इसी संगठन के जुझारू पुरोधाओं के संघर्ष का परिणाम है। जिस पर हमें आज भी गर्व का अनुभव होता है। मुख्य महामंत्री धर्मेन्द्र गहलोत ने कहा कि हमे देश की आजादी के बाद सबसे लंबे चले किसान आंदोलन के धैर्य से सीख लेने की जरूरत है। गहलोत ने कहा कि आज पढ़े लिखे युवा का सत्याग्रह आंदोलन से डर ही निजीकरण को बढ़ावा देने के लिए केन्द्र की मोदी सरकार को हौंसला दे रही है, यदि ऐसा ही चलता रहा तो देश का शासकीय तंत्र भी और शिक्षा तंत्र भी जल्द ही निजीकरण के हाथो में सौंपकर एक गुलाम भारत का निर्माण होना निश्चित समझे। संगठन के महामंत्री हनवंत सिंह मेडतिया ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर संयोजक सत्यनारायण बैरवा, पार्षद कांतिलाल परिहार, मोहम्मद फारूख, शमशाद अली अब्बासी, किरण कुमार रैगर, पंचायत समिति सदस्य मेवी देवी, जिला अध्यक्ष विक्रमसिंह सोलंकी, संयुक्त मंत्री शिवकुमार आमेटा, महिला मंत्री सविता शर्मा, ईमामुलहक कुरैशी, धर्मेन्द्र खत्री, रमेश दहिया, देशाराम मीणा, हीरालाल बारोट, सविता बैरवा, दिलीप सिंह परमार, किशोर रैगर, रमेश परमार सहित कई लोग उपस्थित थे।

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र का निरीक्षण

आबूरोड, (निसं)। उपखण्ड अधिकारी आबूरौ डअरविन्द शर्मा ने सोमवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का आकस्मिक निरीक्षण किया। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में सफाई व्यवस्था में सुधार के लिए निर्देश दिये एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में स्थाई मेडीकल ऑफिसर लगवाने के लिए ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देश प्रदान किये। इसी प्रकार सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र का आकस्मिक निरीक्षण कर मरीजो के काउण्टर पर लम्बी लाइन होने से जानकारी प्राप्त करने पर कम्प्युटर, सीपीयू, खराब पाया गया जिससे मैन्युल एन्ट्री की जा रही थी। जिस पर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र प्रभारी को तत्काल कम्प्युटर दुरूस्त करवाने एवं कोविड-19 गाईडलाईन एवं तीसरी लहर के बचाव के लिए मास्क लगाने एवं कोविड प्रोटोकॉल की पालना के लिए निर्देश प्रदान किये। बायो मेडिकल वेस्ट का निस्तारण करने के लिए सख्त हिदायत दी गई। किसी प्रकार चाईल्ड वार्ड एवं सामान्य वार्ड की जांच कर साफ सफाई एवं बेडशीट की गंदगी देखकर बेडशीड को बदलने के लिए निर्देश प्रदान किये। वार्डो में मरीज के साथ अनावश्यक भीड़ को देखकर नियमानुसार एक भी अटेन्डेन्ट को रखने के निर्देश प्रदान किये। ताकि किसी भी प्रकार से संक्रमण से बचा जा सके। नवनिर्मित ऑक्सीजन प्लान्ट का निरीक्षण कर प्लान्ट की मशीनरी क्ष्नै सुचारू करने के लिए ईओ नगरपालिका आबूरोड को डीएलबी में पत्र लिखकर आवश्यक कार्यवाही हेतु निर्देश दिये। निरीक्षण के दौरान सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र प्रभारी ने अस्पताल की चारदीवारी के बारे में अवगत करवाया, उपखण्ड अधिकारी ने कार्य निस्तारण के लिए कहा। इस मौके पर बीसीएमओ डॉ. गौतम मोरारका, ईओ हिमांशु अग्रवाल, सीएचसी प्रभारी डॉ. पी.एन गुप्ता आदि उपस्थित थे।

चौराहे का नाम कूंपाजी राठौड़ करने की मांग

पाली, (नि.सं.)। जय राजपूताना संघ की ओर से सोमवार को जिला कलेक्टर पहुंच राज्य राजमार्ग 61 पर मारवाड़ जंक्शन सूर्य नगर को जोडने वाले चौराहे का नामकरण वीरवर महाराज कूँपाजी राठौड़ के नाम करने व अश्वारूढ़ प्रतिमा स्थापित करवाने की मांग को लेकर मुख्यमंत्री के नाम जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में बताया कि जनमानस को अधिक से अधिक इतिहास वीरों के बारे में जानकारी मिले और अपनी स्वर्णिम धरती पर गर्व कर सके। राज्य राज्य मार्ग 61 का कार्य जोरों से चल रहा है। मारवाड़ जंक्शन व सूर्य नगर को जोडने वाले चौराहे का निर्माण हो रहा है। इसी चौराहे पर वीरवर महाराज कूँपाजी की अश्वारूढ़ प्रतिमा स्थापित करने वह चौराहे का नामकरण वीरवर कूँपाजी करने की मांग की। साथ ही अन्य पास ही के चौराहे का नाम महाराव जैता जी के नाम किया जाए। इन दोनों महान वीरों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी, उनका नामकरण करने से राजस्थान की जनता आपकी बहुत बहुत आभारी होगी। इस अवसर पर विश्व प्रताप सिंह रेटा, ननीष सिंह खंगारोत ,गोपाल सिंह अजीत सिंह , भंवर सिंह, यशपाल सिंह, कुमावत जितेंद्र सिंह ,हुकम सिंह गजेंद्र सिंह, मौजूद रहे।

दो दिवसीय शिक्षक सम्मेलन का शुभारंभ

जालोर, (कासं)। राजस्थान प्राथमिक एंव माध्यमिक शिक्षक संघ का जिला स्तरीय दो दिवसीय शिक्षक सम्मेलन का आयोजन सोमवार को सेवानिर्वत जिला शिक्षाधिकारी हनीफ खां मुख्य अतिथी व हनुमान प्रसाद उपाध्याय की अध्यक्षता मे मुस्लिम मुसाफिरखाना जालोर मे आयोजित किया गया। संघ के जिलाध्यक्ष नाहिद अली सैयद ने संघ की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। प्रकाश चन्द्र दवे, अमजद खां व्याख्याताओं ने विभिन्न विषयो पर वार्ता दी। मंच का संचालन महबूब खां ने किया।

किशनगढ़बास थाना क्षेत्र में अवैध हथियारों का जखीरा बरामद, चार तस्कर गिरफ्तार

5 देशी पिस्टल व 13 देशी कट्टे के अलावा 41 जिंदा कारतूस बरामद

किशनगढबास, (निसं)। थाने में एसपी राममूर्ति जोशी ने बताया कि 28 नवम्बर को स्पेशल पुलिस टीम के कांस्टेबल सत्यपाल, राकेश व महेश को सूचना मिली थी कि मुबारिकपुर नौगांवा की तरफ से स्कॉर्पियो कार में हथियार तस्कर आ रहे हैं। उनके पास हथियार भी हैं। जो आगे कोटपूतली व बहरोड की तरफ जाएंगे।

इसके बाद पुलिस ने राबका बिदरका गांव की पहाडी के पास नाकाबंदी शुरू की और कार को रुकवा लिया गया। कार की तलाशी ली तो उसमें 5 देशी पिस्टल व 13 देशी कट्टे के अलावा 41 जिंदा कारतूस मिले। इसके बाद पुलिस ने अवैध हथियार रखने के जुर्म में आर्म्स एक्ट के तहत चार जनों को गिरफ्तार कर लिया। आगे की जांच जारी है।

एसपी की सूचना पर कार रूकवाकर हथियारों की बरामदगी की।

गैंग का मुखिया पिता की हत्या का आरोपी :- हथियार तस्कर गैंग का मुखिया मुख्तयार अपने पिता की हत्या का आरोपी है। जिनके साथ जावेद, ताहिर व जितेंद्र भी तस्करी में शामिल हैं। ये लोग मथुरा के बरसाना में हाथयाका, भरतपुर के कामां, पहाडी से अवैध हथियार लाते हैं। इसके बाद बहरोड, नीमराणा, नारनौल, भिवाडी, कोटपूतली, महेंद्रगढ , सीकर व खेतडी सहित अनेक जगहों पर सक्रिय गैंग के बदमाशों को हथियार सप्लाई करते हैं।

■ गैंग मथुरा, भरतपुर के कामां व पहाडी से हथियार खरीदती है और कोटपूतली, बहरोड व हरियाणा में बेचती है

मुखत्यार सिंह उर्फ मुक्की पुत्र मंजीत सिंह निवासी फैजपुर किशगढ बास, जावेद पुत्र इकबाल निवासी खटीका मोहल्ला टपूकडा, ताहिर उर्फ सुल्ली पुत्र इलियास निवासी बाघोडा किशनगढ बास, जितेंद्र उर्फ जीतू पुत्र राम सिंह निवासी खेडा कोटकासिम को पुलिस ने गिरफ्तार किया है।

बरामद :- पुलिस ने 5 अवैध 32 बोर देशी पिस्टल, 315 बोर के 9 देशी कट्टे, 41 जिंदा कारतूस, एक कार बरामद की है।

कोटा उत्तर नगर निगम के दो पार्षदों को यूडीएच विभाग ने निलंबित किया

दोनों पार्षदों पर अवैध खनन और अतिक्रमण करने के आरोप लगाए गए थे

कोटा, (निसं)। कोटा उत्तर के दो पार्षदों को यूडीएच विभाग ने कार्रवाई करते हुए निलंबित कर दिया है। दोनों पार्षदों में राकेश पुटरा और बलविंदर सिंह उर्फ बिल्लू बालिता पर अवैध खनन और अतिक्रमण करने के आरोप लगाए गए थे।

आरोपों को स्वायत शासन विभाग के निदेशक दीपक नंदी दोनों पर लगे आरोप प्रमाणित माने हैं जिनके आधार पर ही उन्हें निलंबित करने के आदेश दिए गए हैं। हाल ही में पार्षद बिल्लू बलविंदर सिंह उर्फ बिल्लू को बूंदी जिले की तालेड़ा पुलिस ने गिरफ्तार किया थास इससे पहले कोटा शहर की कुन्हाड़ी थाना पुलिस भी उनके खिलाफ कार्रवाई कर चुकी है। राकेश सुमन पुटरा 2014 में भी पार्षद रहे है। तब भारतीय

■ स्वायत शासन विभाग के निदेशक दीपक नंदी ने दोनों पर लगे आरोप प्रमाणित माने

जनता पार्टी से जीते थे लेकिन 2020 के चुनाव में उनका टिकट काट दिया। इसके बाद उन्होंने निर्दलीय हुंकार भरते हुए जीत दर्ज की थीस उनके खिलाफ लैंडमार्क सिटी के नजदीक कमला उद्यान में एक पार्क पर अवैध कब्जा करने जमाने और पक्का निर्माण करने का आरोप लगा था। जिसमें पार्क को खुर्द-बुर्द करने के भी आरोप लगाए गए।

इसी तरह से बलविंदर सिंह उर्फ बिल्लू बालिता खिलाफ भी नगर विकास न्यास की जमीन पर से मिट्टी की अवैध रूप से खुदाई कर उस मिट्टी को खुर्द-बुर्द करने के आरोप लगे थे। इस संबंध में यूआईटी ने मुकदमा भी कुन्हाड़ी थाने में दर्ज करवाया था। जिस पर बिल्लू को पुलिस ने गिरफ्तार की भी किया था साथ ही बिल्लू के घर से मिट्टी बरामद भी की गई थी। दोनों मामलों में यूआईटी ने कुन्हाड़ी थाने में मुकदमा दर्ज करवाया था, बाद में राज्य सरकार ने इस मामले को विधि विभाग को भिजवाया था जिसके बाद ही उन्हें निलंबित किया गया है। निलंबित किए गए दोनों पार्षद पूर्व विधायक प्रहलाद गुंजल की बैठकों और मीटिंग में अक्सर नजर आते हैं। वर्तमान में दोनों निर्दलीय पार्षद हैं।

हाईकोर्ट ने एक सप्ताह में इंस्पेक्टर जनरल आफ पुलिस बीकानेर से मांगी रिपोर्ट

सादुलपुर, (निसं)। लगभग चार वर्ष पूर्व नोहर के जसाना में स्थित राजीव गाँधी सेवा केन्द्र में पवन व्यास की धारदार हथियार से निर्मम हत्या के आरोप के मामले में पुलिस द्वारा संतोषजनक जवाब नहीं देने के कारण हाईकोर्ट के माननीय न्यायधीश ने सख्त आदेश देते हुए 1 सप्ताह में प्रोग्रेस रिपोर्ट के साथ फाइल पेश करने के लिए इंस्पेक्टर जनरल आफ पुलिस बीकानेर को निर्देशित किया है।

गौरतलब है कि 17 अक्टूबर 2017 को बहुचर्चित पवन व्यास हत्याकांड में पुलिस द्वारा आज तक खुलासा नहीं कर पाने पर विप्र फाउंडेशन युवा प्रकोष्ठ द्वारा समय-समय पर प्रदर्शन किए गये थे। वहीं

■ पवन व्यास हत्याकांड में मांगी प्रोग्रेस रिपोर्ट

2019 में नोहर से जयपुर पैदल यात्रा पीड़ित को साथ लेकर जयपुर में विधानसभा घेराव भी किया गया था। इसी दौरान विधानसभा में गृह मंत्री से वार्ता कर हत्या के खुलासे की मांग की गई । आरोप है कि पुलिस राजनीतिक दबाव में रहने के कारण हत्या का खुलासा नहीं कर पाई। जिस पर विप्र फाउंडेशन युवा प्रकोष्ठ के प्रदेश विधिक सलाहकार एडवोकेट कुलदीप शर्मा हाई कोर्ट जोधपुर द्वारा सीबीआई जांच की मांग हेतु हाई कोर्ट में याचिका दाखिल की। याचिका में कोर्ट में इन्वेस्टिगेशन ऑफीसर को तलब कर 4 सप्ताह का समय दिया था लेकिन पुलिस द्वारा संतोषजनक जवाब नहीं देने के कारण हाईकोर्ट के माननीय न्यायधीश ने सख्त आदेश देते हुए 1 सप्ताह में प्रोग्रेस रिपोर्ट के साथ फाइल पेश करने के लिए इंस्पेक्टर जनरल आफ पुलिस बीकानेर को निर्देशित किया गया है। वहीं हाई कोर्ट ने अपने आदेश में यह भी कहा कि पुलिस की खराब कार्रवाई है। ज्ञातव्य है कि मृतक के पीड़ित पिता रामस्वरूप व्यास एवं विप्र फाउंडेशन के युवा प्रदेश अध्यक्ष मुकेश रामपुरा ने कोर्ट द्वारा न्याय मिलने की उम्मीद जताई है।

बीकानेर में दो दिन बाद फिर एक पॉजिटिव मिला

बीकानेर, (कासं)। जिले में कोरोना धीरे -धीरे अपना दायरा बढ़ाता जा रहा है। सोमवार सुबह की रिपोर्ट में एक और पॉजिटिव आने के साथ ही बीकानेर में कोरोना के एक्टिव केस बढ़ कर 15 हो गए हैं। इसके बाद भी हेल्थ डिपार्टमेंट कोरोना टेस्ट की संख्या नहीं बढ़ा रहा है। जिला कलक्टर नमित मेहता के आदेश के भी टेस्ट का आंकड़ा पांच सौ ऊपर नहीं जा रहा। कोरोना के नोडल अधिकारी डॉ. बी एल. मीणा ने रविवार के टेस्ट में एक पॉजिटिव बताया है। पिछले दो दिन से विभाग ने एक भी पॉजिटिव नहीं बताया था। अब न सिर्फ पॉजिटिव बढ़ रहे हैं बल्कि अस्पताल में भी भर्ती व गंभीर रूप से भर्ती रोगियों की संख्या भी बढ़ रही है।

■ कलेक्टर के आदेश के बाद भी जांच का आंकड़ा पांच सौ के आस-पास ही अटका

फिलहाल हैल्थ डिपार्टमेंट ने बाहर से आने वाले यात्रियों का टेस्ट करना शुरू कर दिया है। बीकानेर रेलवे स्टेशन पर रविवार को सर्वाधिक टेस्ट हुए। यहां 153 यात्रियों के सेंपल लिए गए। शुक्र है कि ये सभी नेगेटिव ही पाए गए । लालगढ़ रेलवे स्टेशन पर रविवार को 19 टेस्ट किए गए, ये सभी नेगेटिव रहे। इसके अलावा पीबीएम अस्पताल के कोविड ओपीडी में जांच हो रही है। यहां कुछ जांच बढ़ी है। सोमवार को यहां सत्तर टेस्ट लिए गए। ये सभी भी नेगेटिव रहे।

गैंगरेप के मुख्य आरोपी की गिरफ्तारी की मांग

मालपुरा, (निसं)। शहर की एक आवासीय कॉलोनी में 13 नवम्बर को एक नाबालिग छात्रा से हुए गैंगरेप के नामजद मुख्य आरोपी की जल्द गिरफ्तारी की मांग को लेकर सोमवार को बीएसपी व बुधिष्ठ महासभा के बैनर तले बड़ी संख्या में एसडीएम कार्यालय पहुंचे महिला पुरूषों ने एसडीएम के नाम नायब तहसीलदार हंसराज तोगडा सहित पुलिस उपाधिक्षक चक्रवर्ती सिंह राठौड़ को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में अवगत करवाया कि 13 नवम्बर को हुए गैंगरेप की 15 नवम्बर को मालपुरा थाने में पीड़िता की ओर से नामजद पुलिस प्राथमिकी दर्ज करवाने तथा 20 नवम्बर को बीएसपी व बुधिष्ठ महासभा द्वारा ज्ञापन सौंप एक सप्ताह का अल्टीमेटम देने के बावजूद पुलिस द्वारा तीसरे व नामजद मुख्य आरोपी धारा सिंह चौधरी की आज तक गिरफ्तारी नहीं किये जाने से समाज में गहरा रोष व्याप्त है। साथ ही ज्ञापन में अवगत करवाया कि मुख्यआरोपी की 15 दिवस में गिरफ्तारी नहीं होने पर मजबूरन उन्हें उपखण्ड अधिकारी कार्यालय के सामने अनशन शुरू कर उग्र आन्दोलन करना पड़ेगा।

रीट परीक्षा के डमी परीक्षार्थी मामले का 2 माह से फरार आरोपी गिरफ्तार

राजसमंद, (निसं)। गत 26 नवम्बर को आयोजित राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा में सेठ रंगलाल कोठारी राजकीय महाविद्यालय परीक्षा केन्द्र में परीक्षा में अभ्यर्थी की जगह डमी के रूप में परीक्षा देने के मामले में पिछले दो माह से फरार आरोपी को राजनगर पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया है।

■ पूर्व में पुलिस ने आरोपी की जगह परीक्षा देते जीजा को किया था गिरफ्तार

जबकि इस मामले में पुलिस द्वारा एसआरके कोलेज परीक्षा केन्द्र में द्वितीय पारी की परीक्षा के दौरान लेवल प्रथम के परीक्षार्थी हितेश विश्नोई (22) पुत्र पूनमाराम निवासी सहारणों की ढाणी थाना चितलवाना जिला जालौर की जगह डमी परीक्षार्थी के रूप में परीक्षा दे रहे हाडेतर थाना सांचोर जिला जालौर में तृतीय क्षेणी

परीक्षार्थी आरोपी हितेश कुमार।

शिक्षक के पद पर कार्यरत आरोपी श्रवण कुमार पुत्र भेराराम विश्नोई निवासी करावडी थाना झाव जिला जालौर पूर्व में गिरफ्तार किया जा चुका है। इसके बाद से ही आरोपी हितेश विश्नोई पिछले दो माह से फरार था।

बिजली लाइन के शॉर्ट सर्किट से छप्पर में लगी आग

पावटा, (निसं)। निकटवर्ती ग्राम पंचायत पाथरेडी के डाबडों की ढाणी में बद्री प्रसाद पुत्र गणपतराम यादव के छप्पर में रविवार रात अज्ञात कारणों से लगी आग से 3 भैंस व 2 गायों की जलकर मौत हो गई वहीं घरेलू सामान सहित आवश्यक सामान जलकर राख हो गये।

जानकारी के अनुसार छप्पर के ऊपर से विद्युत लाइन गुजर रही थी जिसमें शॉर्ट सर्किट होने से छप्पर में आग लग गई। उपस्थित लोगों ने बड़ी मशक्कत के बाद ट्यूबवेल के माध्यम से आग पर 2 घण्टों में काबू पाने की कोशिश की। वही मौके पर पावटा उपखंड अधिकारी राजवीर सिंह के निर्देशों पर तहसीलदार मुकेश अग्रवाल ने पटवारी मनोज यादव द्वारा मौके पर ही फर्द रिपोर्ट तैयार करवाई। आगजनी में हुए नुकसान की फर्द रिपोर्ट व मवेशियों की पोस्टमार्टम रिपोर्ट के साथ उचित सहायता के लिए प्रस्ताव भेजा जायेगा। इस मौके पर ग्राम पंचायत सरपंच रामस्वरूप, पूर्व सरपंच शिभूदयाल, पूर्व सरपंच लाडाकाबास मदनलाल यादव, सहित जनप्रतिनिधि व ग्रामीण मौजूद रहे।

अमित शाह का बॉर्डर पर नाइट स्टे पाक को देगा कड़ा संदेश

जैसलमेर, (नि.सं.)। गृह मंत्री अमित शाह भारत - पाकिस्तान बॉर्डर पर एक रात बिताएंगे। पाकिस्तान की तारबंदी के एकदम सटे हुए इलाके शाहगढ़ बल्ज की रोहिताश चौकी पर गृह मंत्री के नाइट स्टे की खबर पाकिस्तान को एक पैगाम के तौर पर देखी जा रही है । दरअसल हाल ही के दिनों में भारतीय सेना ने सीमा पर सबसे बड़ा युद्धाभ्यास का आयोजन किया था । उसके तुरंत बाद गृह मंत्री का पाकिस्तान की सीमा के निकट ही रात्रि विश्राम करना पड़ोसी मुल्क को संदेश के तौर पर देखा जा रहा है।

अमित शाह 4 दिसम्बर को जैसलमेर की यात्रा पर आ रहे हैं । वे 5 दिसम्बर को जैसलमेर में पहली बार आयोजित होने जा रहे बीएसएफ के राइजिंग डे में शिरकत करने आ रहे हैं । शाह 4 दिसंबर को जैसलमेर पहुंच जाएंगे । इसके बाद वे तनोट माता मंदिर के दर्शन करेंगे और सीमा पर जवानों से मुलाकात करेंगे । गृह मंत्री अमित शाह की जैसलमेर यात्रा की तैयारियों के लिए पश्चिमी कमान चंडीगढ़ के एडीजी एन एस जामवाल जैसलमेर पहुंच गए हैं । उन्होंने व्यवस्थाओं का भी जायजा लिया । इसके साथ ही उन्होंने बीएसएफ के अधिकारियों को दिशा निर्देश भी दिए । जामवाल ने बताया कि गृहमंत्री 4 को जैसलमेर पहुंचेंगे । तनोट माता के दर्शन करने के बाद वे जवानों से मिलेंगे । इसके बाद रोहिताश चौकी पर वे रात्रि विश्राम करेंगे।

5 दिसंबर को शहीद पूनमसिंह स्टेडियम में बीएसएफ के स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में अमित शाह शिरकत करेंगे । इसके बाद वे जयपुर के लिए रवाना हो वे जाएंगे । सीमा सुरक्षा बल के स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को लेकर बीएसएएफ पिछले एक महीने से लगातार तैयारियां कर रहा है । स्टेडियम को इस कार्यक्रम के लिए विशेष तौर पर तैयार करवाया गया है । सीमा सुरक्षा बल के 57 वें स्थापना दिवस का कार्यक्रम पहली बार दिल्ली से बाहर जैसलमेर में आयोजित किया जा रहा है।

पपला गुर्जर के नाम पर रंगदारी मांगने वाला गिरफ्तार

दौसा, (निसं)। पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार बेनिवाल के निर्देश पर जिला विशेष टीम ने भीलवाड़ा में दबिश देकर महवा के एक निजी चिकित्सालय के संचालक को गैंगस्टर पपला गुर्जर के नाम पर रंगदारी मांगने एवं जान से मारने की धमकी देने वाले युवक को गिरफ्तार किया है। एएसपी डॉ. लालचंद कायल ने बताया कि 26 नवंबर को महवा कस्बे में मंडावर रोड पर चाइल्ड हॉस्पिटल संचालक डॉ. अशोक जैन ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी। जिसमें बताया कि उसके मोबाइल पर एक अज्ञात युवक का फोन आया, जिसने स्वयं का नाम पपला गुर्जर बताते हुए 5 लाख की रंगदारी मांगी।

बाद में युवक ने खुद का नाम कालू गुर्जर निवासी केसरी बताते हुए पैसे की मांग की थी। मामले में महवा कस्बे के डॉक्टरों ने थाने पहुंचकर आरोपी को जल्द गिरफ्तार करने की मांग की थी। इस घटना को गंभीरता से लेते हुये पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार बेनिवाल के निर्देश पर एक विशेष टीम का गठन किया गया। एएसपी डॉ. लालचंद कायल ने बताया कि डॉक्टर द्वारा इसकी शिकायत पुलिस को देने पर धमकी मिलने वाले मोबाइल नंबर पर फोन किया गया तो युवक ने पुलिस के हैड कांस्टेबल को भी धमकी दे डाली थी। जहां पुलिस की पड़ताल में सामने आया कि धमकी देने वाला युवक महुवा थाना क्षेत्र के ही रहने वाला है। एएसपी डॉ. लालचंद कायल ने बताया कि टीम ने मुल्जिम को मात्र 48 घण्टों में रात्रि के दौरान जिला भीलवाड़ा के करेडा कस्बे से गिरफ्तार किया। उन्होंने बताया कि टीम ने नंद राम उर्फ कालू गुर्जर पुत्र कैलाश गुर्जर जाति गुर्जर निवासी केसरी थाना मण्डावर जिला दौसा को गिरफ्तार कर मौके से एक एन्ड्रोयड मोबाइल बरामद किया है।

स्पा सेन्टर पर पीटा एक्ट के तहत नौ जने गिरफ्तार

मुखबिर की सूचना पर बाड़मेर पुलिस ने स्पा सेंटर से नौ जनों को गिरफ्तार किया।

बाड़मेर, (निसं)। स्पा सेंटर की आड़ में चल रहे अनैतिक कारोबार पर सोमवार को बाड़मेर पुलिस ने पीटा एक्ट के तहत सोमवार को दबिश देकर चार युवतियों समेत नौ लोगो को गिरफ्तार किया है।

पुलिस वृताधिकारी आनंद सिंह ने बताया कि शहर के एक स्पा सेंटर में जिस्म फरोशी का अनैतिक कारोबार किये जाने की सूचना मुखबिर के जरिये पुलिस को मिली थी। जिस पर पुलिस द्वारा उक्त स्पा सेन्टर पर बोगस ग्राहक भेजकर सूचना की तस्दीक करवाई । सूचना सही पाए जाने पर पुलिस ने सदर थानाक्षेत्र में स्थित उक्त स्पा सेंटर पर पीटा एक्ट के तहत दबिश देकर चार युवतियों व पांच युवकों को गिरफ्तार कर मामला दर्ज किया।

फर्नीचर शोरूम व इलेक्ट्रिक दुकान में लगी आग

पावटा में हुई आगजनी में लाखों का सामान जल गया।

पावटा, (निसं)। उपखंड पावटा के पुराना रोड पर स्थित फर्नीचर के शोरूम व इलेक्ट्रिक की दुकान में आग लगने से लाखों रुपए का फर्नीचर व सामान जल कर राख हो गया। घटना की सूचना मिलते ही दमकल विभाग की कई गाड़ियों ने मौके पर पहुंच कर कई घंटों की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। पावटा पुराना रोड पर स्थित जगदीशम इलेक्ट्रिक व सुमंगलम फर्नीचर शोरूम में अज्ञात कारणों के चलते सोमवार की शाम करीब 7.15 बजे आग लग गई। देखते ही देखते आग ने गंभीर रूप धारण कर लिया। आस-पास के लोगों ने पानी के टैंकरों से आग पर काबू पाने का भी प्रयास किया मगर वे सफल नहीं हो पाए।

सूचना मिलते ही शाहपुरा, कोटपूतली, बहरोड से दमकल विभाग की 7-8 गाडियों ने मौके पर पहुंच कर घंटों मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। गनीमत यह रही कि आग की चपेट में आस-पास की दुकानें नहीं आई। मौके पर पावटा प्रधान प्रति निधि जगन चौधरी, भाजपा पूर्व प्रदेश महामंत्री कुलदीप धनकड, पूर्व सरपंच प्रतिनिधि गोपाल अग्रवाल, सामाजिक कार्यकर्ता निर्मल पंसारी, एससी मोर्चा प्रदेश महामंत्री बद्री प्रसाद चौहान, विनोद यादव सहित ग्रामीणों ने आग बुझाने में पुलिस प्रशासन का सहयोग किया।

चालक को बंधक बना मजिस्ट्रेट की कार लूटी

कोटपूतली, (निसं)। कोटपूतली थाना क्षेत्र में अपराधियों के हौंसले कितने बुलंद हैं इस बात का अंदाजा बीती रात हुई एक मजिस्ट्रेट की कार लूट की घटना से सहजता से लगाया जा सकता है। पुलिस सूत्रों के हवाले से खबर है कि कोटपूतली एमजेएम ऋषभ अग्रवाल का चालक विजेंद्र यादव विगत रात्रि

■ बोलेरो में आए आधा दर्जन बदमाशों ने की वारदात

करीब 10:30 से 11 के बीच ग्राम चतुर्भुज से कोटपूतली आ रहा था। इसी दौरान बानसूर रोड स्थित पेट्रोल पंप के निकट एक बोलेरो में सवार होकर आए करीब आधा दर्जन बदमाशों ने चालक को बंधक बना लिया और गाडी लूटकर बहरोड की ओर ले गए।

बदमाश बहरोड थाना क्षेत्र में चालक को डालकर गाडी लेकर फरार हो गए। घटनाक्रम की सूचना के बाद पुलिस ने जहां नाकाबंदी करवाई है वहीं पुलिस की अलग-अलग टीमें अलवर ,बानसूर व मुंडावर सहित अन्य जगहों के टोल नाकों पर सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है। समाचार लिखे जाने तक मामले में पुलिस के हाथ कोई अहम सबूत नहीं लगा है।

हमारा प्रयास है कि भर्तियां समय पर पूर्ण हों, नियुक्ति के लिए इंतजार नहीं करना पड़े : गहलोत

तीन साल में दी 97 हजार नियुक्तियां, भर्तियों की बाधाओं को दूर किया

जयपुर, (कासं) । सीएम अशोक गहलोत ने कहा प्रदेश के सरकारी विभागों में भर्ती परीक्षाओं को त्वरित, वादरहित एवं पारदर्शी बनाने की दिशा में राज्य सरकार मजबूत इच्छाशक्ति एवं संकल्प के साथ काम कर रही है। बीते तीन साल से भी कम समय में करीब 97 हजार पदों पर नियुक्तियां दी गई है। इसके लिए जहां आवश्यक हुआ नियमों में संशोधन और उनका सरलीकरण किया गया। न्यायिक अड़चनों को दूर किया गया। हमारा पुरजोर प्रयास है कि भर्तियां समय पर पूर्ण हों, विधिक या अन्य किसी प्रकार की बाधाओं के कारण वे अटकें नहीं और सफल अभ्यर्थियों को नियुक्ति के लिए इंतजार नहीं करना पडे।

गहलोत सोमवार को मुख्यमंत्री निवास से वीडियो कांन्फ्रेंस के जरिए राजस्थान लोक सेवा आयोग (आरपीएससी) के नवीन भवन के शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर आयोग की आंतरिक कार्यप्रणाली को बेहतर बनाने के लिए तैयार किए गए संशोधित मैनुअल के पहले एवं दूसरे

सीएम ने समस्याओं के निराकरण के लिए आरपीएससी वेबपोर्टल के मॉड्यूल को भी लॉन्च किया।

खंड का विमोचन किया। उन्होंने अभ्यर्थियों की समस्याओं के प्रभावी निराकरण के लिए आरपीएससी वेबपोर्टल के मॉड्यूल को भी लॉन्च किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान समय में भर्ती एजेंसियों के लिए परीक्षाओं की विश्वसनीयता बनाए रखना चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है। ऐसे में आरपीएससी तथा राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड जैसी संस्थाएं परीक्षाओं के आयोजन में निरन्तर नवाचारों को अपनाएं। उन्होंने कहा कि भर्तियों के अटकने से अभ्यर्थियों में असंतोष एवं निराशा के भाव उत्पन्न होते हैं। हमारी सरकार यह सुनिश्चित करने का प्रयास कर रही है कि भर्तियों में किसी प्रकार के विवाद की नौबत ही न आए।

गहलोत ने कहा कि आरपीएससी में रिक्त पदों को भरने तथा अन्य आवश्यक संसाधनों को उपलब्ध कराने में सरकार कोई कमी नहीं रखेगी। उन्होंने कहा कि सरकारी विभागों में नियमित पदोन्नति (डीपीसी) प्रक्रिया को शीघ्र संपादित करने के लिए शासन सचिवालय परिसर में आरपीएससी की एक विंग स्थापित करने की दिशा में जल्द उचित निर्णय किया जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी विभाग रिक्त पदों की अभ्यर्थना को निर्धारित समय पर आयोग के समक्ष भिजवाना सुनिश्चित करें, ताकि कैलेण्डर के अनुरूप भर्तियों का समयबद्ध आयोजन किया जा सके।

■ सभी विभाग रिक्त पदों की सूचना सही समय पर आयोग को भिजवाएं : मुख्यमंत्री अशोक गहलोत

■ राजस्थान लोक सेवा आयोग के नवीन भवन का शिलान्यास

मुख्य सचिव निरंजन आर्य ने कहा कि राजस्थान लोक सेवा आयोग ने पारदर्शिता एवं गुणवत्ता के साथ परीक्षाओं के आयोजन के मामले में देश के अन्य राज्य लोक सेवा आयोगों के बीच अपनी एक अलग पहचान को हमेशा बनाए रखा है। आरपीएससी के अध्यक्ष डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने कहा कि 3 करोड़ 73 लाख रूपए की लागत से इंटरव्यू एवं गोपनीय कार्य के लिए नए भवन का निर्माण किया जा रहा है।

प्रदेश में लगातार दूसरे दिन भी करोना संक्रमितों की संख्या में कमी आई

राज्य में सोमवार को 12 नए संक्रमित मिले, इससे पहले रविवार को 17 रोगी पाए गए थे

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। प्रदेश में लगातार दूसरे दिन भी करोना संक्रमण के नए मामलों में कमी आई है। इस दौरान सोमवार को राज्य में 12 नए संक्रमित मिले हैं। हालाकि इनमें सबसे ज्यादा जयपुर में 8 रोगी मिले हैं। वहीं इस बीच कई दिन बाद नए संक्रमितों के मुकाबले दोगुनी रिकवरी होने से एक्टिव केस घटकर 187 रह गए हैं।

- **पिछले चौबीस घंटों में सबसे ज्यादा 8 संक्रमित जयपुर जिले में मिले हैं। इनमें एक स्कूली छात्र भी शामिल है।**
- **प्रदेश में कई दिनों बाद नए संक्रमितों के मुकाबले दोगुनी रिकवरी होने से एक्टिव केस घटकर 187 रह गए हैं।**
- **इस बीच राज्य में केवल 7 हजार 268 ही जांच के लिए नमूने लिए गए हैं।**

प्रदेश में सोमवार को पांच जिलों में करोना संक्रमण के 12 नए मामले सामने आए हैं। इससे पहले रविवार को 17 रोगी पाए गए थे। हालाकि आज राज्य में केवल 7268 ही जांच के लिए नमूने लिए गए। इससे पहले रोजाना 20 से 25 हजार के बीच जांचें की जा रही थी।

इधर राजधानी जयपुर में पिछले चौबीस घंटों में रविवार के बराबर ही 8 नए संक्रमित मिले हैं। इसके अलावा अजमेर, बाड़मेर, हनुमानगढ़ और उदयपुर में 1-1 नया रोगी मिला है। इस बीच राजधानी जयपुर में आदर्श नगर और वैशाली नगर में 2-2 और अंबाबाडी, जवाहर नगर, सोडाला तथा मानसरोवर इलाके में 1-1 नया संक्रमित मिला है। मानसरोवर में मिला मरीज स्कूली छात्र है। वह 15 नवंबर से स्कूल नहीं जा रहा है। उसके माता-पिता 4-5 दिन पहले संक्रमित मिले थे।

उधर प्रदेश के 28 जिलों में संक्रमण का कोई भी नया मामला सामने नहीं आया है। इनमें 20 जिलों में अब न कोई नया संक्रमित है और न ही कोई एक्टिव केस बचा है। प्रदेश में सोमवार को 24 मरीज ठीक हुए हैं। इसके साथ ही अब तक इस बीमारी से 9 लाख 45 हजार 628 लोग स्वस्थ हो चुके है। सोमवार को कई दिनों बाद नए संक्रमितों की तुलना में दोगुना रिकवरी होने से एक्टिव केस घटकर 187 रह गए हैं। हालाकि इनमें अभी सर्वाधिक 100 मामले जयपुर में तथा 22 केस अजमेर में हैं। इसके अलावा 11 जिले अलवर, बाड़मेर, बीकानेर, दौसा, हनुमानगढ़, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, पाली, राजसमंद और उदयपुर में 20 से कम एक्टिव केस हैं। प्रदेश में रविवार को भी करोना से किसी भी मरीज की मौत नहीं हुई है। राज्य में इस बीमारी से अब तक 8955 लोगों की मौत हो चुकी है।

अदालती आदेश की पालना क्यों नहीं की?

जयपुर। हाईकोर्ट ने बदरवास स्थित अस्सी फीट रोड के अतिक्रमण के मामले में अदालती आदेश की पालना नहीं होने पर नाराजगी जताई है। अदालत ने कहा कि मामले में अवमानना कर्ता अफसर को दंडित करने से पहले जरूरी है कि जेडीसी 17 दिसंबर को अदालत में पेश हों। अदालत ने जेडीसी को कहा है कि वे शपथ पत्र पेश कर बताए कि करीब 26 माह बीतने के बाद भी अदालती आदेश की पालना क्यों नहीं की गई। न्यायाधीश एमएम श्रीवास्तव और न्यायाधीश विनोद कुमार भारवानी की खंडपीठ ने यह आदेश बदरवास विकास समिति की अवमानना याचिका पर दिए।

अवमानना याचिका में अधिवक्ता प्रहलाद शर्मा ने बताया कि बदरवास और धर्म नगर से गुजर रही अस्सी फीट रोड का ले आउट प्लान तैयार करने और अतिक्रमण के संबंध में हाईकोर्ट ने 16 अगस्त 2019 को जेडीए को दो माह में पालना करने को कहा था। इसके बावजूद अब तक अदालती आदेश की पालना नहीं की गई। याचिका में जेडीसी गौरव गोयल को पक्षकार बताने हुए कहा कि अदालती आदेश की अवमानना करने पर दोषी अधिकारी को दंडित किया जाए।

शाह के जयपुर दौरे को भव्य और ऐतिहासिक बनाने में जुटी भाजपा

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के दौरे को लेकर भाजपा प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया और प्रदेश प्रभारी चन्द्रशेखर ने पदाधिकारियों की बैठक लेकर महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिये।

जयपुर। केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह के 5 दिसंबर को जयपुर दौरे को लेकर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ.सतीश पूनिया एवं प्रदेश संगठन महामंत्री चन्द्रशेखर ने भाजपा प्रदेश कार्यालय में पदाधिकारियों की बैठक लेकर तैयारियों के बारे में संवाद कर दिशा-निर्देश दिए। बैठक में अमित शाह के दौरे को भव्य व ऐतिहासिक बनाने को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। स्वागत, प्रदेश कार्यसमिति, जनप्रतिनिधि सम्मेलन के लिए गठित की गई टीमों को महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए गए। अमित शाह के स्वागत में प्रदेश के मेवाड़, मारवाड़, शेखावटी, हाडौती, ब्रज, ढूंढाड़ इत्यादि संस्कृतियों का ऐतिहासिक संगम देखने को मिलेगा, वहीं सम्पूर्ण राजस्थान की संस्कृति की भव्यता के दर्शन भी होंगे। जयपुर के जेईसीसी सभागार में 5 दिसंबर को अमित शाह प्रदेश कार्यसमिति बैठक को संबोधित करने के बाद जनप्रतिनिधि सम्मेलन को संबोधित करेंगे जिसमें नगर निकाय, पंचायतीराज, सहकारिता, सांसद, विधायक इत्यादि जनप्रतिनिधियों को अमित शाह मार्गदर्शन देंगे। बैठक में प्रदेश उपाध्यक्ष सरदार अजय पाल सिंह, प्रदेश महामंत्री भजनलाल शर्मा, सुशील कटारा, प्रदेश मंत्री श्रवण सिंह बगड़ी, अल्पसंख्यक मोर्चा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हुसैन खान, जयपुर शहर जिला अध्यक्ष राघव शर्मा, युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष हिमांशु शर्मा, जयपुर ग्रेटर नगर निगम डिप्टी मेयर पुनीत कर्नावत, अजमेर डिप्टी मेयर नीरज जैन, सहकारिता प्रकोष्ठ प्रदेश संयोजक प्रमोद सामर, इत्यादि प्रमुख पदाधिकारी एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

- **शाह के स्वागत में प्रदेश के मेवाड़, मारवाड़, शेखावटी, हाडौती, ब्रज, ढूंढाड़ इत्यादि संस्कृतियों का ऐतिहासिक संगम देखने को मिलेगा, वहीं सम्पूर्ण राजस्थान की संस्कृति की भव्यता के दर्शन भी होंगे**

गहलोत युवाओं को भरमाने के बजाय रोजगार के उपाय कीजिए : शेखावत

जयपुर। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया ने बेरोजगारों को लेकर ट्वीट कर कहा कि प्रदेश के युवा बेरोजगार अपनी फरियाद लेकर आखिर जाएं तो जाएं कहाँ, यहां के मुखिया ने कानों में रूई लगाई हुई है। लखनऊ आस लेकर गए तो, वहाँ भी निराशा, क्योंकि प्रियंका गांधी जी पर्यटन पर हैं। स्पष्ट रूप से यह इन युवाओं से धोखा है।

वहीं बेरोजगारी के मुद्दे पर केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने एक बार फिर कांग्रेस पार्टी को घेरा है। सीएमआईई की रिपोर्ट का हवाला देते हुए शेखावत ने कहा कि गहलोत युवाओं को भरमाने के बजाय रोजगार उत्पन्न करने के उपाय कीजिए। केंद्रीय मंत्री शेखावत ने कांग्रेस सांसदों के संसद परिसर में कृषि कानून वापस लेने की मांग वाले प्रदर्शन पर तंज कसा।

सोमवार को शेखावत ने कहा कि बेरोजगारी के मुद्दे पर घिरी राजस्थान की कांग्रेस सरकार गुजरात का वीडियो वायरल कर झूठ फैला रही है, लेकिन आंकड़े झूठ नहीं बोलते। सीएमआईई की 27 नवंबर 2021 की रिपोर्ट के अनुसार गुजरात में बेरोजगारी दर 2.4 प्रतिशत तो राजस्थान में बेरोजगारी दर 29.6 प्रतिशत, ये जमीन-आसमान का अंतर है। तुलना ही नहीं है।

केंद्रीय मंत्री ने सवाल किया कि अब क्या कहेगी कांग्रेस? क्या राजस्थान से लखनऊ जाकर प्रियंका वॉड्रा से रोजगार मांग रहे युवा गुजरात से आए हैं? गहलोत जी युवाओं को भरमाने के बजाय रोजगार उत्पन्न करने के उपाय कीजिए। केंद्रीय मंत्री शेखावत ने कांग्रेस सांसदों के संसद परिसर में कृषि कानून वापस लेने की मांग वाले प्रदर्शन पर तंज कसा।

विकलांग शिविर लगाने के लिए जयपुर फुट की सराहना की सोनिया गांधी ने

जयपुर, (का.सं.)। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने सांसद और कांग्रेस के कोषाध्यक्ष की पुण्यतिथि पर गुजरात के अंकलेश्वर नगर में आयोजित विकलांग शिविर के लिए जयपुर फुट निर्माता भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (बी.एम.वी.एस.एस.) की प्रशंसा की हैं। इस शिविर का सोमवार को समापन हुआ।

सोनिया गांधी ने अपने संदेश में कहा की स्वर्गीय अहमद पटेल की पहली पुण्यतिथि के अवसर पर बी.एम.वी.एस.एस.ने दिव्यांगों को बैसाखी, ट्राई साईकिल, व्हील चेयर और कृत्रिम पैर जयपुर फुट लगाकर विकलांगों की सेवा की हैं। सोनिया गांधी ने कहा कि अहमद भाई का पूरा राजनीतिक जीवन गरीबों की सेवा और उनके उत्थान के लिए बीता। वह निर्धन और निर्बल दोनों की मदद करते रहे और ऐसे लोगों को जिन्हें बीमारी आदि के कारण जीवन में अवसर नहीं मिले उन्होंने अवसर प्रदान करने में कसर नहीं रखी।

सोनिया गाँधी ने कहा कि ऐसे विकलांग दुखिया और निर्बल लोगों की सेवा करना अहमद भाई को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस शिविर का 25 नवम्बर को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने उदघाटन किया था। इस समारोह में गुजरात में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के प्रभारी रघु शर्मा, सांसद और मुमताज अहमद पटेल के अलावा जयपुर फुट के सचिव भूपेन्द्र राज मेहता और कार्यकारिणी के सदस्य गिरधारी सिंह बाफना भी उपस्थित थे।

सोनिया गांधी ने जयपुर फुट के अलावा, सरदार पटेल अस्पताल तथा हार्ट इंस्टीट्यूट के सहयोग के लिए भी धन्यवाद दिया।

बी.एम.वी.एस.एस. के सचिव भूपेन्द्र राज मेहता जो अंकलेश्वर में आयोजित विकलांग शिविर का संचालन कर रहे थे ने बताया कि शिविर में 133 लोगों को जयपुर फुट 70 पोलियोग्रस्त को कैलिपर्स, 275 को ट्राई साईकिल, 200 को व्हील चेयर, 140 को बैसाखी और 398 को शिविर में श्रवण यंत्र प्रदान किए गए और कुल 1216 लोगों को लाभान्वित किया गया।

पहले दिन 7 उम्मीदवारों ने दाखिल किए 8 नामांकन पत्र

जयपुर, (का.सं.)। प्रदेश के 4 जिलों में होने वाले जिला परिषद और पंचायत समिति सदस्यों के चुनाव के लिए नामांकन के पहले दिन 7 उम्मीदवारों ने 8 नामांकन पत्र दाखिल किए। ये सभी नामांकन पंचायत समिति सदस्यों के लिए प्राप्त हुए हैं। जिला परिषद सदस्यों के लिए पहले दिन किसी भी उम्मीदवार ने भी नामांकन पत्र दाखिल नहीं किया।

चुनाव आयुक्त पी.एस. मेहरा ने कहा कि बारां, करौली, कोटा एवं श्रीगंगानगर जिलों में 106 जिला परिषद सदस्य, 568 पंचायत समिति सदस्य, 4 जिला प्रमुख एवं 4 उप जिला प्रमुख तथा 30 प्रधान एवं 30 उप प्रधानों के लिए आम चुनाव करवाया जाएगा।

चारों जिलों की 973 ग्राम पंचायतों में सुगम मतदान के लिए कुल 4161 मतदान बूथ स्थापित किए जाएंगे। मेहरा ने कहा कि तीनों जिलों में आगामी 12, 15 और 18 दिसंबर को तीन चरणों में चुनाव करवाए जाएंगे।

उन्होंने बताया कि नाम निर्देशन पत्र प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि एवं समय 2 दिसंबर दोपहर 3 बजे तक रहेगी। नाम निर्देशन पत्रों की संवीक्षा 3 दिसंबर प्रात: 11 बजे से होगी, जबकि 4 दिसंबर दोपहर 3 बजे तक नाम वापस लिए जा सकेंगे। ग्राम वापसी के साथ ही चुनाव प्रतीकों का आवंटन एवं चुनाव लड़ने वाले अभ्यर्थियों की सूची का प्रकाशन कर दिया जाएगा।

जयपुर के पौने 2 लाख घरों में कल नहीं होगी पेयजल सप्लाई

जयपुर (कासं)। शहर के एक दर्जन से ज्यादा इलाकों में आगामी 1 दिसंबर को पानी की सप्लाई नहीं होगी। जलदाय विभाग ने एक दिसंबर को मेंटेनेंस और रिपेयरिंग के काम के लिए सुबह 10 से शाम 6 बजे तक शट डाउन का निर्णय किया है। इसके कारण परकोटा समेत विद्याधर नगर, शास्त्री नगर, दिल्ली बाइपास, सीकर रोड की एक दर्जन से ज्यादा एरिया में पानी की सप्लाई नहीं होगी। सूत्रों की मानें तो जयपुर शहर का 35 फीसदी क्षेत्र इस शटडाउन से प्रभावित रहेगा, जिससे करीब 1.75 लाख घरों में पानी नहीं आएगा।

अधीक्षण अभियंता सुभांशु दीक्षित ने बताया कि बीसलपुर प्रोजेक्ट के तहत रामनिवास बाग और अमानीशाह में बने पम्प हाउस की सफाई और रिपेयरिंग का काम करवाया जाएगा। इसके कारण 1 दिसंबर को सुबह 10 से शाम 6 बजे तक दोनों पम्प हाउस पर शटडाउन रहेगा। इसके कारण जयपुर के 35 फीसदी एरिया में पानी की एक समय की सप्लाई नहीं की जाएगी। ये सप्लाई 1 दिसंबर को ही प्रभावित रहेगी, 2 दिसंबर से सप्लाई सामान्य हो जाएगी। बताया जा रहा है कि शट डाउन के कारण वीकेआई रोड नंबर 9 से 14, जीवन दीप कॉलोनी, निवारू रोड की आंशिक कॉलोनियों, मुरलीपुरा, विद्याधर नगर के सेक्टर 1 से 9, अम्बाबाड़ी, सीकर रोड, रामनगर (लंकापुरी) शास्त्री नगर, नाहरी का नाका, भट्टा बस्ती ब्लॉक सी व डी, शिवाजी नगर, व्यास कॉलोनी, सुभाषनगर, बनीपार्क, गोपालबाड़ी, मोदीखाना, रामचन्द्र चौकड़ी, घाटगेट, आमेर, जयसिंहपुरा खोर, ईदगाह, बासबदनपुरा, ब्रह्मपुरी, वन विहार, दिल्ली बाइपास की कॉलोनियों में पानी की सप्लाई नहीं होगी। वहीं चारदीवारी के जिन एरिया में रात 8 बजे में पानी की सप्लाई होती है वह भी कम प्रेशर के साथ की जाएगी।

- **रामनिवास बाग और अमानीशाह में बने पम्प हाउस की सफाई-रिपेयरिंग का काम करवायेगा जलदाय विभाग**
- **शटडाउन के कारण परकोटा समेत विद्याधर नगर, शास्त्री नगर, दिल्ली बाइपास, सीकर रोड की एक दर्जन कॉलोनियों में पानी सप्लाई नहीं होगी**

छह के खिलाफ चालान पेश

जयपुर, (का.सं.)। वैशाली नगर थाना पुलिस ने गत 26 अगस्त को एनएचएआई कंसल्टेंट कंपनी के एडवाइजर आरके चावला हत्याकांड में छह आरोपियों करणदीप श्योराण, नवीन बिसला, विकास सिंह, अमित नेहरा, धमेन्द्र बिसला और राम दिया के खिलाफ अदालत में आरोप पत्र पेश किया है।

फसल बुवाई के लिए किसानों को पर्याप्त बिजली दें : मुख्यमंत्री

जयपुर, (का.सं.)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि रबी सीजन में फसलों की बुवाई को देखते हुए किसानों को बिजली की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि बिजली कम्पनियां कर्ज का बोझ कम करने एवं ट्रांसमिशन-डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम को मजबूत बनाने के लिए दीर्घकालीन कार्य योजना बनाएं।

गहलोत सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर ऊर्जा विभाग की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कृषि विभाग के अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर किसानों को बूंद-बूंद सिंचाई एवं फव्वारा सिंचाई पद्धति अपनाने के लिए प्रेरित किया जाए। उन्होंने इस संबंध में व्यापक प्रचार-प्रसार करने के निर्देश दिए।

बैठक में ऊर्जा राज्य मंत्री भंवर सिंह भाटी ने कहा कि "मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना" का किसानों को काफी लाभ मिल रहा है। सब्सिडी मिलने के कारण कई किसानों के बिजली के बिल शून्य हो गए हैं।

चेयरमैन डिस्कॉम्स भास्कर ए सावंत ने प्रस्तुतिकरण के माध्यम से बताया कि रबी सीजन 2021-22 में किसानों को पर्याप्त बिजली उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य योजना तैयार की गई है। अतिरिक्त मुख्य सचिव ऊर्जा सुबोध अग्रवाल ने बताया कि कोयले की पर्याप्त आपूर्ति के लिए केन्द्र सरकार के अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित किया जा रहा है। बैठक में अधिकारियों ने बताया कि दिसंबर 2018 से अभी तक करीब ढाई लाख कृषि कनेक्शन दिये जा चुके हैं।

इस अवसर पर मुख्य सचिव निरंजन आर्य, प्रमुख शासन सचिव वित अखिल अरोरा, राजस्थान विद्युत उत्पादन निगम के सीएमडी आर के शर्मा, जयपुर डिस्कॉम के एमडी नवीन अरोड़ा, जोधपुर डिस्कॉम के एमडी अविनाश सिंघवी, अजमेर डिस्कॉम के एमडी वीएस भाटी सहित ऊर्जा विभाग के अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

महिला गिरफ्तार

जयपुर। गलता गेट पुलिस ने महिला चोर को गिरफ्तार कर उसके पास से चुराया हुआ सोने का जंतर बरामद किया है। थानाधिकारी मुकेश कुमार ने बताया कि ई-रिक्शा में बैठ कर सवारियों के बैग से सामान चोरी करने वाली गैंग की आरोपित महिला ज्योति शिकारी उर्फ चुचु (23) निवासी मुरैना हाल रामगंज हाल झुग्गी जयसिंहपुरा को गिरफ्तार किया है।

डॉक्टर्स ने बैडमिंटन लीग में एक-दूसरे को दी शिकस्त

जयपुर (कासं)। एफ.एस.रियल्टी डॉक्टर्स बैडमिंटन लीग के दूसरे दिन खेले गये मैचों में डॉक्टर्स की टीम ने उत्साह से भाग लिया। लीग निदेशक डॉ अनिल यादव ने बताया कि वरिष्ठ वर्ग में अग्रवाल हॉस्पिटल ने न्यू लाइफ हॉस्पिटल को 3-2 से, उर्मिल हॉस्पिटल ने किड्स डेंटल को 3-2 से तथा जीवन रेखा हॉस्पिटल ने सोमानी हॉस्पिटल को 3-2 से हराया। बॉयज वर्ग में ऐओश ने जयपुर यूरोलॉजी को 3-2 से तथा शर्मा डायग्नोस्टिक ने बराला हॉस्पिटल को 5-0 से हराया। किड्स वर्ग में ज्योति जगुआर ने आंच हॉस्पिटल को 4-1से, स्वास्तिक हॉस्पिटल ने जयपुर गैस्ट्रो को 4-1 से हराया। वहीं होप हॉस्पिटल ने आंच हॉस्पिटल को 4-1 से तथा स्वास्तिक हॉस्पिटल को 5-0 से हराया। गर्ल्स कैटेगरी में ईएचसीसी ने ऐओश को 4-1 से हराया। वहीं पैथोस्कोप ने जुत्शी केअर वेल को और एएलसीएस को 3-2 से हराया।

54 पुलिस उपअधीक्षकों का पदस्थापन

जयपुर (कासं)। पुलिस मुख्यालय ने पुलिस निरीक्षक से पुलिस उप अधीक्षक के पद पर पदोन्नत हुए 54 अधिकारियों को नई जगह पोस्टिंग (पदस्थापन) दी है। अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक कार्मिक अनिल पालीवाल ने इस संबंध में आदेश जारी किया है। भवानी सिंह शेखावत, मुकेश चौधरी और रामवतार सिंह को सहायक पुलिस आयुक्त लीव रिजर्व, जयपुर कमिश्नरेट में लगाया है। हेमाराम बिजानियां को पुलिस उपाधीक्षक एटीएस, रामसिंह को सहायक पुलिस आयुक्त कंट्रोलरूम जयपुर के पद पर लगाया है।

'फाइल गुम हुई तो 15 दिन में पुन: तैयार करवाएंगे अफसर'

जयपुर । प्रदेश के नगरीय निकायों में फाइलें गुम होने के मामलों से सरकार परेशान हैं। लगातार ऐसे मामले "प्रशासन शहरों के संग" अभियान में सामने आ रहे हैं। अब सरकार की नींद खुली हैं और अब निकायों को फाइल गुम होने पर अपनाई जाने वाली प्रक्रिया फिर बताई। जबकि, प्रक्रिया पहले से भी निर्धारित है, लेकिन निकाय उसके अनुसार कदम नहीं उठा रहे हैं। इसे लेकर नगरीय विकास विभाग और स्वायत्त शासन विभाग ने आदेश जारी किए हैं। सूत्रों के मुताबिक फाइल गुम होने पर हिदायत भी दी गई है। साथ ही स्पष्ट किया गया है कि समस्त प्रक्रिया 15 दिन में पूरी की जाए। साथ ही कंप्यूटरीकृत प्रणाली अपनाते हुए फाइलें संधारित की जाए। गुम होने पर जिम्मेदार कार्मिक के खिलाफ कार्रवाई के प्रावधान हैं, लेकिन निकाय हैं कि ऐसे मामलों में सख्त एक्शन नहीं ले रहे। इसी कारण अभियान भी प्रभावित हो रहा हैं। आदेश में कहा है कि सेवा नियमों के तहत अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाए। साथ ही फाइल गुम होने पर पुलिस में प्राथमिकी दर्ज कराएं। यदि फाइल गुम होती है तो भी आमजन के काम रोकें नहीं, बल्कि 15 दिन में नई फाइल गठित कर प्रकरण निस्तारित करना होगा।

'राज्य में फसल बीमा पॉलिसी की संख्या एक करोड़ पार हुई'

कृषि मंत्री लालचंद कटारिया ने सोमवार को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के प्रचार रथों को रवाना किया।

जयपुर । कृषि मंत्री लालचन्द कटारिया ने कहा कि राज्य सरकार के नवाचारों, निरन्तर प्रचार-प्रसार एवं किसानों को समय पर बीमा क्लेम का भुगतान करने से प्रदेश में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की लोकप्रियता में निरन्तर वृद्धि हुई है। राज्य में वर्ष 2020-21 में फसल बीमा पॉलिसियों की संख्या एक करोड़ से ऊपर पहुंच गई है। कटारिया ने सोमवार को यहां अपने कार्यालय से प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के प्रचार रथों को रवाना करते हुए बताया कि राज्य में वर्ष 2018-19 में लगभग 78 लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल का फसल बीमा हुआ था, जो बढ़कर 20-21 में करीब 1 करोड़ 13 लाख हैक्टेयर हो गया है। इसी प्रकार फसल बीमा पॉलिसियों की संख्या 2018-19 में 72 लाख से बढ़ते हुए 20-21 में 1 करोड़ 7 लाख हो गई है। कृषि मंत्री ने बताया कि राज्य में पिछले 3 साल में 80 लाख से ज्यादा किसानों को लगभग 13 हजार करोड़ रुपए के बीमा क्लेम का भुगतान किया गया है। हनुमानगढ़ जिले के अलावा रबी 2020-21 तक के समस्त बीमा क्लेमों का भुगतान किया जा चुका है। उन्होंने राज्यांश प्रीमियम भुगतान की जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान सरकार ने अपने अब तक के कार्यकाल में गत सरकार के बकाया राज्यांश प्रीमियम के साथ-साथ रबी 2020-21 तक के लिए समस्त राज्यांश प्रीमियम का भुगतान बीमा कम्पनियों को कर दिया है। खरीफ 2021 के लिए राज्यांश प्रीमियम भुगतान प्रक्रियाधीन है। कृषि आयुक्त डॉ. ओमप्रकाश ने बताया कि राज्य में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में 7 बीमा कम्पनियों द्वारा फसल बीमा का काम किया जा रहा है। खरीफ में 19 तथा रबी में 17 फसलों का बीमा जिलों में बोई गई फसलों के हिसाब से किया जा रहा है।

'सफाईकर्मियों को मुख्यधारा में जोड़े'

जयपुर । राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग की सदस्य अंजना पंवार ने कहा कि अंतिम पंक्ति में बैठे सफाई कर्मचारी की समस्या का समाधान करना हम सबकी जिम्मेदारी है। सोमवार को नगर निगम हैरिटेज में दोनों नगर निगमों और प्रशासनिक अधिकारियों की बैठक में उन्होंने कहा कि सफाई कर्मचारियों को समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए हम सबको मिलकर काम करना होगा। उन्होंने कहा कि सफाई कर्मचारियों के शैक्षिणक, सामाजिक, आर्थिक स्तर को कैसे सुधारा जाए, उसके लिए हमें गंभीरता से विचार करना चाहिए। अधिकारियों को निर्देश दिए कि सफाई कर्मचारियों की भलाई के लिए सरकार की स्कीमों का लाभ जरूरतमंदों तक पहुंचाया जाए। पंवार में कहा कि नगर निगम हैरिटेज में 4763 सफाई कर्मचारियों के पद स्वीकृत है।

आठ आईपीएस समेत 66 अधिकारी और पुलिसकर्मी डीजीपी डिस्क से सम्मानित

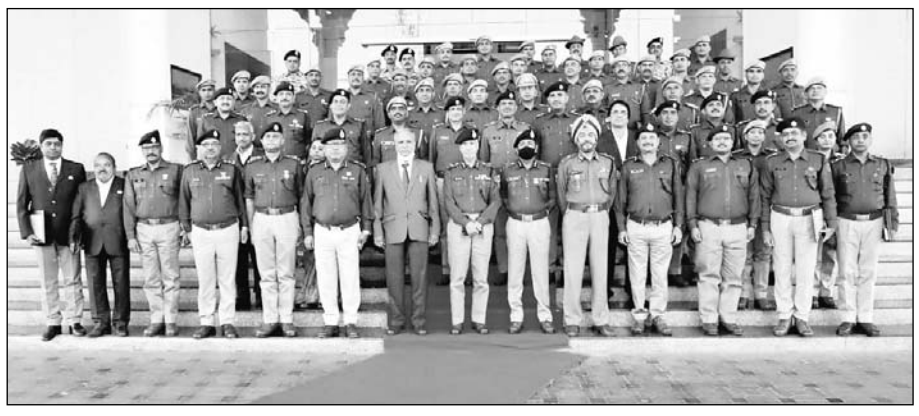

जयपुर (कासं)। पुलिस महानिदेशक एम.एल.लाठर ने सोमवार को पुलिस मुख्यालय में आयोजित समारोह में 8 आईपीएस समेत 66 अधिकारियों व पुलिसकर्मियों को प्रशस्ति डिस्क और रोल प्रदान कर सम्मानित किया।

लाठर ने इस अवसर अधिकारियों व कर्मचारियों को भविष्य में भी पूरी क्षमता से कार्य करने का आव्हान करते हुये कहा।

साथ ही करोनाकाल में पुलिसकर्मियों द्वारा किये गए सकारात्मक कार्यों से आमजन में पुलिस की बनी बेहतर छवि को बनाये रखने का आग्रह किया। लाठर ने प्रदेश में शान्ति और कानून व्यवस्था बनाये रखने के साथ ही आमजन की शिकायतों के त्वरित निस्तारण पर बल दिया। उन्होंने अपराधों को नियंत्रित करने के लिये पुलिस कर्मियों से सदैव मुस्तैद रहने का आव्हान किया। अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक रवि प्रकाश ने बताया कि सम्मान समारोह के दौरान आठ आईपीएस, एक अतिरिक्त निदेशक प्रचार, एक उप निदेशक स्वास्थ्य, 10 आरपीएस, दो निजी सचिव, नौ पुलिस निरीक्षक एवं कंपनी कमांडर, तीन उप निरीक्षक एवं प्लाटून कमांडर, दो-दो मंत्रालयिककर्मी एवं हेड कांस्टेबल एवं 28 कांस्टेबल को डीजीपी प्रशस्ति पत्र एवं रॉल प्रदान किया गया।

इन 8 आई.पी.एस. में एडिशनल डीजीपी पुनर्गठन एवं नियम संजीव कुमार नार्जारी, आईजी इंटेलीजेंस रूपिंदर सिंघ, डीआईजी कार्मिक गौरव श्रीवास्तव, एडिशनल कमिश्नर द्वितीय जयपुर हैदर अली जैदी, डीआईजी सीआईडी सीबी अनिल कुमार टांक, एसपी जयपुर ग्रामीण मनीष अग्रवाल, एसपी गौरव यादव (वर्तमान में सीआईडी सीबी जयपुर) और एसपी प्रशिक्षण पीटीसी जयपुर दौलतराम अटल शामिल थे।

इनके अलावा 10 आर.पी.एस. में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल, ज्ञानचंद यादव, भरत लाल मीणा, सौरभ कोठारी, ललित किशोर एवं पुलिस उप अधीक्षक पुष्पेंद्र सिंह राठौड़, रामानंद शर्मा, सूर्यवीर सिंह राठौड़, नरेंद्र कुमार व अमीर हसन का सम्मान हुआ। इसी प्रकार अतिरिक्त निदेशक प्रचार पुलिस मुख्यालय गोविंद पारीक एवं उप निदेशक (स्वास्थ्य) डॉक्टर सुनील पूनिया को डीजीपी का सम्मान दिया गया।

इसी प्रकार अतिरिक्त निजी सचिव पुलिस मुख्यालय मुरारी लाल गुप्ता, डीजीपी के निजी सहायक बनवारी लाल शर्मा, प्रशासनिक अधिकारी अनुभाग प्रथम नेमीचंद शर्मा एवं सूचना सहायक एससीआरबी प्रकाश कंवर शेखावत को भी नवाजा गया। 9 पुलिस निरीक्षक एवं कंपनी कमांडर में धीरज वर्मा, कामरान खान, राम सिंह नाथावत, शिवदास मीणा, पूनम चौधरी, विक्रांत शर्मा एवं कंपनी कमांडर दीपक जोशी, सीताराम बुनकर एवं सुश्री वीना कुमारी शामिल थे। इसके अलावा प्लाटून कमांडर मुकेश कुमार व उपनिरीक्षक रामकिशोर शर्मा एवं उपनिरीक्षक प्रोबेशनर विजय मीणा तथा हैड कांस्टेबल जगदीश प्रसाद जाट व महावीर प्रसाद यादव तथा कांस्टेबल अशोक सिंह, अशोक कुमार रावत, भागीरथ मीणा, भंवर लाल, भूपेंद्र कुमार, गुमान सिंह, हेमराज राजावत, हनुमान चौधरी, जितेंद्र कुमार, कृष्ण कुमार, लालाराम, मुकेश कुमार गुर्जर, मुनेश कुमार, महेंद्र कुमार, मही राम, महेश कुमार, नारायण लाल, नरेंद्र सिंह, ओम प्रकाश, प्रताप सिंह, राजेंद्र कुमार शर्मा, रामचंद्र, सुभाष चंद्र वर्मा, सुरेश कुमार यादव, सोमपाल सिंह, सुरेश चंद गुर्जर, सुरेश कुमार एवं उमेश चंद्र दीक्षित को सम्मानित किया गया।

कांकरी डूंगरी प्रकरण में फरार 8 आरोपी गिरफ्तार

सितम्बर 2020 में एनएच-8 पर रास्ता जाम कर मचाया था उपद्रव

डूंगरपुर, (निसं)। गत सितम्बर 2020 मे हुए कांकरी डूंगरी प्रकरण के बाद सदर थाना क्षेत्र के भुवाली एनएच-8 पर कतिपय उत्पातियो द्वारा रास्ता जाम करने व सरकारी वाहनो को नुकसान पहुंचाकर पुलिस पर पथराव करने के मामले मे एक वर्ष से फरार चल रहे 8 आरोपी को सोमवार को गिरफ्तार किया गया। उल्लेखनीय है कि इस मामले में सदर तथा बिछीवाडा थाने में लगभग 4 हजार व्यक्तियों पर उत्पात मचाने, सरकारी सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाने तथा विभिन्न मामलो में प्रकरण दर्ज हुए थे।

सदर थाना पुलिस द्वारा कांकरी डूंगरी प्रकरण में उपद्रव करने के मामले में गिरफ्तार किए गए आरोपी।

इस मामले में पुलिस ने फरार आरोपियों पर निगरानी रखते हुए भुवाली, मोतली मोड, बिछीवाडा, शामलाजी, खेरवाडा, बावलवाडा तथा केसरीयाजी में इन फरार आरोपियों की दबिशे देकर डिटेन कर अनुसंधान के बाद गिरफ्तार किया। यह सभी अभियुक्त गिरफ्तारी से बचने के लिए अपने नाते-रिश्तेदारों के यहां रह रहे थे। पुलिस ने सोमवार को इस प्रकरण में अजय पुत्र हीरालाल डामोर निवासी पालवडा, मुकेश पुत्र जीवा डामोर, चेतनाल पुत्र बाबूलाल डामोर, कारीलाल पुत्र वाला डामोर, रामलाल पुत्र वीरजी डामोर, गिरदारीलाल पुत्र लेम्बाजी डामोर, कालू उर्फ कालिया पुत्र धना डामोर, नारायण पुत्र शंकर डामोर निवासी भुवाली फला माताजी को गिरफ्तार किया है।

बेटियों को पढ़ाने का खर्चा उठाएंगे गौरव सेनानी शिक्षक

झुंझुनूं, (निसं)। राजस्थान गौरव सेनानी शिक्षक संघ झुंझुनूं का दो दिवसीय जिलास्तरीय शैक्षिक सम्मेलन का उद्घाटन सोमवार को सुबह 11 बजे खाना खजाना रिसोर्ट गार्डन में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शिक्षाविद् कुरडाराम धींवा एवं अध्यक्षता समाजसेवी शिवकरण जानू व मुख्य वक्ता प्रदेशध्यक्ष राजवीर चनाना एवं विशिष्ट अतिथि पूर्व सैनिक परिषद के जिलाध्यक्ष रामनिवास डुडी, जिलाध्यक्ष महेंद्र लाम्बा, रणजीत सिंह थें। मुख्य अतिथि धींवा ने कहा कि शिक्षक समाज का आईना होता है, बच्चों के भविष्य का निर्माता होता है।

भामाशाह शिवकरण जानू ने कहा की शिक्षक राष्ट्र निर्माता होता है, सरकार इनके हितों की रक्षा करें। इस दौरान शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने पर व. अ. करतार सिंह व महेंद्र सिंह का सम्मान किया गया। गौरव सेनानी शिक्षक मनोहर लाल रणवा ने अपने सेनिक बेटे की शादी बिना दहेज के करने पर संघ की तरफ से सम्मान किया गया। द्वितीय सत्र में शिक्षा में नवाचारों शैक्षणिक गुणवत्ता, भौतिक विकास में समुदाय की भागीदारी,बच्चों का कौशल विकास, व्यवसायिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने पर मंथन किया गया। सभी शिक्षकों ने अपने विद्यालयों में गरीब की बेटियों को पढाने का जिम्मा लिया।

पैट्रोल पम्प लूट की योजना बनाते 6 बदमाश गिरफ्तार

बदमाशों पर पहले से 60 से अधिक मामले दर्ज हैं

कोटा पुलिस ने लूट की योजना बनाते हुए 6 बदमाशों को गिरफ्तार किया।

कोटा, (निसं)। शहर की कुन्हाड़ी पुलिस ने डकैती की साजिश के मामले में छह बदमाशों को गिरफ्तार किया है।

आरोपियों की साजिश नयाखेड़ा पेट्रोल पंप लूटने की थी जिसे पुलिस ने नाकाम कर दिया। जानकारी के अनुसार इन बदमाशों पर पहले से 60 से अधिक मामले दर्ज हैं। सभी 6 आरोपियों सलमान उर्फ शरीफ, सोनू उर्फ शाहरुख, सरफराज, शाहनवाज, करीम और आशिक को मोहनलाल सुखाड़िया योजना से गिरफ्तार कर लिया हैस आरोपियों से हथियारों की खेप बरामद हुई है जिसमें देसी कट्टा, जिंदा कारतूस, चाकू, छुरा, रस्सी, बेसबॉल का डंडा व लोहे का पाइप शामिल है। इसके साथ ही आरोपियों के पास एक चार पहिया वाहन और एक दो पहिया वाहन भी बरामद किया है। बताया जाता है कि इन बदमाशों पर विभिन्न वारदातों को लेकर पहले से 60 से अधिक केस दर्ज हैं।

अजमेर से बोलेरो चुराने वाली गैंग जोधपुर में पकड़ी

जोधपुर, (कासं)। अजमेर जिले के केकड़ी थाना क्षेत्र से बोलेरो कैम्पर चोरी कर भाग रहे दो शातिर अंतरराज्यीय वाहन चोर को जोधपुर कमिश्नरेट की पुलिस ने पीछा कर बम्बोर टोल नाका से आगे धरदबोचा। पकडे गए अंतरराज्यीय वाहन चोरों के खिलाफ कोटा, दौसा, करौली, जयपुर, भरतपुर, अलवर, सुमेरपुर व नयापुर थानों में मामले दर्ज हो रखे है।

रातानाडा थानाप्रभारी मूलसिंह भाटी ने बताया है कि सब इंस्पेक्टर भंवरसिंह ने डीएसटी पूर्व प्रभारी दिनेश डांगी को सूचना दी कि अजमेर जिले के केकड़ी क्षेत्र से एक बोलेरो कैम्पर गाड़ी आरजे-14 जीएफ-3333 को चुराकर भागे दो अंतरराज्यीय वाहन चोर रातानाडा की तरफ आ रहे है। सूचना मिलने पर डीएसटी प्रभारी सब इंस्पेक्टर दिनेश डांगी, कांस्टेबल देवाराम के साथ निजी वाहन में सवार होकर चोरी की गई बोलेरो कैम्पर वाहन की तलाश में निकल पड़े। इस दौरान उन्हें उक्त चोरी की गई बोलेरो कैम्पर नजर आ गई और वे वाहन का पीछा करने लगे। बम्बोर टोल नाका से आगे पहुंचने पर डांगी ने उक्त बोलेरो कैम्पर को रूकवाकर उसमें सवार दो युवकों को दस्तयाब किया और थाने ले गए। पूछताछ में दोनों युवकों ने अपना नाम करौली जिले के नादौती थानान्तर्गत भीलापाड़ा निवासी अब्दुल गनी पुत्र अल्लानूर व सवाई माधोपुर जिले के गंगापुरमसिटी थानान्तर्गत गांव गावड़ीकला हाल काला तालाब, डिस्पेंसरी के पास, गोविन्ददेव मंदिर के पास रेलवे कॉलोनी, कोटा निवासी अवकेश मीणा पुत्र हंसराज मीणा होना बताया। पकड़े गए दोनों वाहन चोर आले दर्जे के बदमाश व लुटेरे है।

आत्महत्या की धमकी दी

खेतडी, (निसं)। घर से झगडा करके निकले एक युवक ने अपने परिजनों को वीडियो कॉलिंग करके आत्महत्या करने की धमकी दी है। थाना अधिकारी विनोद सांखला ने बताया कि कस्बे के वार्ड नंबर 9 निवासी ईश्वर लाल सोनी ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है कि सोमवार सुबह करीब दस बजे उसका पुत्र सुशील कुमार घर से झगडा करके निकल गया, जिसने अरावली की पहाडियों में भोपालगढ पर जाकर उन्हें वीडियो कॉलिंग करके आत्महत्या करने की धमकी दी है, इस पर परिजन भयभीत हो गए और उसे ढूंढने 15-20 लोग भोपालगढ गए वहां पर उसकी मोटरसाइकिल तो नजर आई, लेकिन वह कहीं दिखाई नहीं दिया।

विषमताओं का खात्मा ही आजादी का असली मकसद : प्रोफेसर सुमन मौर्य

चूरू, (कासं)। भारत की आजादी यकायक नहीं आई। आजादी के लिए देश के हजारों.लाखों लोगों ने आत्म.उत्सर्ग किया है । यही नहीं, सामाजिक सरोकारों के लिए प्रतिबद्ध ये योद्धा न केवल लड़े बल्कि सामाजिक क्रांति के लिए जीवनभर अड़े रहे। समाज में बदलाव लाना और समानता के अवसर सृजित करना ही इनका असली ध्येय था। उक्त विचार आजादी के अमृत महोत्सव के तहत जिला प्रशासन और महात्मा गांधी जीवन दर्शन समिति की ओर से सोमवार को शक्ति सरस्वती बालिका सीनियर सैकेंडरी स्कूल में सामाजिक क्रांति के अग्रदूत व स्वतंत्रता सेनानी ठक्कर बापा की जयंती पर आयोजित व्याख्यान में राजस्थान विश्वविद्यालय की सहायक प्रोफेसर डॉ. सुमन मौर्य ने व्यक्त किए।

डॉ. मौर्य ने कहा कि आजादी आंदोलन के अनाम सेनानियों को जानने का यह सही अवसर है। आजादी के अमृत महोत्सव का यही उचित मकसद है। हमें जानना चाहिए कि किन.किन लोगों ने समाज में फैली विषमताओं से लड़ने का साहस जुटाया और समानता, भाईचारे के लिए जूझे । किन.किन ने जेल की यातनाएं सही और आजादी के असली मकसद के लिए मिलकर कामयाबी हासिल की । कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महिला अधिकारिता विभाग के सहायक निदेशक संजय कुमार महला ने कहा कि सामाजिक सरोकारों की बात करें तो न केवल जातीय भेदभाव, धार्मिक भेदभाव अपितु लैगिंक भेदभाव भी वह बड़ा कारक रहा जो भारत की असली आजादी में बाधक बना । आज ये भेदभाव कम हो रहे हैं। यह खुशी की बात है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बेटी बचाओ.बेटी पढाओ अभियान के राज्य समन्वयक डॉ. जगदीश प्रसाद ने कहा कि यह ठक्कर बापा जैसे लोगों के कारण ही आज संभव हुआ है कि हम खुली हवा में सांस ले रहे हैं, सामाजिक मुद्दों पर खुलकर संवाद कर रहे हैं। कार्यक्रम में महात्मा गांधी जीवन दर्शन समिति के चूरू उपखंड संयोजक रियाजत अली खान, जिला संयोजक दुलाराम सहारण , गांधी प्रकोष्ठ सहायक दयापाल सिंह पूनिया और कमल कुमार शर्मा सहित कई गणमान्य लोग मौजूद थे।

अवैध डोडा-चूरा से भरी कार जब्त, तस्कर फरार

उदयपुर, (कासं)। गोगुन्दा थाना पुलिस ने तलाशी अभियान के दौरान नाकाबंदी तोड़ तस्करी कर भाग रहे तस्करों पर पुलिस दल ने फायरिंग की। जिससे टायर बस्ट होने पर तस्कर कार छोड़ कर फरार हो गए।

जिला पुलिस अधीक्षक मनोज कुमर के निर्देश पर चलाए जा रहे तलाशी अभियान के दौरान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मुख्यालय अनन्त कुमार, सहायक पुलिस अधीक्षाक गिर्वा ज्येष्ठा मैत्रयी के सुपरविजन में गोगुन्दा थानाधिकारी कमलेन्द्रसिंह के नेतृत्व में एएसआई रणजीतसिंह, हेडकांस्टेबल विजेश कुमार, योगेश्वरसिंह राव, कांस्टेबल हंसराज, सुनिल कुमार, सतीश कुमार, ओमप्रकाश, किशोर कुमार, शिवराज, सावलाराम, प्रदीप, हरिसिंह व चालक इमरान मय टीम ने झाड़ोली कट एनएचआईवे पर नाकाबंदी शुरू की। इस दौरान गोगुन्दा से आ रही कार के चालक को इशारा किया। लेकिन चालक नाकाबंदी तोड़ कार लेकर बैकरिया की फरार हो गया।

नाकाबंदी तोड़कर भाग रहे तस्करों पर पुलिस ने फायरिंग की।

इस पर पुलिस दल ने पिछा कर फायर किया। जिससे टायर बस्ट होने के बावजूद चालक कार लेकर भागा। जिसका पिछा करने पर ईटों का खेत तिराहे पर कार चालक कार छोड़ कर फरार हो गया। इस पर अधेरे में पुलिस ने उसकी तलाश की लेकिन पकड़ में नहीं आया। कार की तलाशी लेने पर उसमें 160 किलों से अधिक अवैध डोड़ा चुरा पाया गया। पुलिस ने अवैध डोडा चुरा से भरी कार जब्त कर मामला दर्ज किया। उक्त कार्यवारी में हेडकांस्टेबल विजेश कुमार, कांस्टेबल हंसराज, सतीश कुमार, शिवराज की विशेष भूमिका रही।

लूट व फायरिंग का आरोपी गिरफ्तार

खेतडी, (निसं)। नौ माह पूर्व बसई में फायरिंग कर एक व्यक्ति पर जानलेवा हमला करने के मामले में पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया। थानाधिकारी विनोद सांखला ने बताया कि थाने में 1 मार्च को राजकीय अजीत अस्पताल में बसई निवासी परिवादी कमल शर्मा ने पर्चा बयान से मामला दर्ज करवाया कि वह ट्रेक्टर ट्राली से सब्जिया बेचने का धंधा करता है।

रात्रि में वह अपने घर के छप्पर में सोया हुआ था, अचानक 15-16 लोग मेरे घर आए तथा गालियां देने लगे तथा उसकी बच्ची की शादी के दहेज व सामान के लिए 2 लाख रूपए कमरे में रखे थें वे भी ताला तोड कर लूट कर ले गए। इस पर थाने में मामला दर्ज किया गया। पुलिस टीम ने अनुसंधान करते हुए आरोपी नीमूचाणा (बानसूर) निवासी राजू बावरिया को बापर्दा गिरफ्तार किया। गिरफ्तार करने वाली टीम में थानाधिकारी विनोद सांखला, हैड कांस्टेबल ओमप्रकाश, दिनेश कुमार, पंकज कुमार व चौखाराम शामिल थें।

नगर परिषद के सूचना नहीं देने पर पार्षद जगदीश मेघवाल धरने पर बैठे

चूरू, (कासं)। चूरू जिला मुख्यालय पर सोमवार को नगर परिषद के समीप वार्ड नं. 31 के पार्षद जगदीश प्रसाद मेघवाल ने नगर परिषद से जो सूचनाएं चाही थी वह नहीं देने के कारण धरना शुरू कर दिया। गौरतलब है कि पन्द्रह रोज पूर्व पार्षद जगदीश प्रसाद मेघवाल ने आयुक्त अभिलाषा सिंह को ज्ञापन देकर यह मांग की थी कि उन्होंने वर्ष भर में नगर परिषद से कई सूचनाएं चाही थी। जिनमें चूरू में बने विभिन्न कॉम्पलेक्सों को स्वीकृति संबंधी एवं अन्य सूचनाएं चाही थी लेकिन आठ माह बीत जाने के बाद भी नगर परिषद ने यह जानकारी नहीं दी तथा आयुक्त अभिलाषा सिंह ने सूचना के अधिकार की भी धज्जियां उड़ा दी ।

- राठौड़ भी धरने में हुए शामिल
- दो दिन पूर्व यातायात बैठक में राजेन्द्र राठौड़ ने अभिलाषा सिंह को बताया था गुड ऑफिसर

नगर परिषद की लापरवाहियों के विरूद्ध सोमवार को पार्षद जगदीश प्रसाद मेघवाल ने धरना शुरू कर दिया हैं। उल्लेखनीय हैं कि गत दिनों यातायात प्रबंधन समिति की बैठक में भाजपा नेता स्थानीय विधायक ने आयुक्त को गुड़ ऑफिसर बताया था लेकिन उसके दो दिन बाद उन्हीं की पार्टी के पार्षद ने धरने पर बैठकर यह बता दिया की आयुक्त अभिलाषा सिंह की कार्यप्रणाली कैसी हैं । साथ ही धरने को संबोधित करते हुए राजेन्द्र राठौड़ ने कहा कि प्रशासन अपना रवैया सुधार ले वरना आगे और भी बड़ा धरना दिया जायेगा।

अब लोगों में यह चर्चा भी जोरों पर हैं कि चूरू में कांग्रेस शासित नगर परिषद होने के बावजूद में शहर में मुख्य अधिकारियों के पदों पर स्थानीय विधायक की ही चल रही है । विधायक राठौड़ समय -समय पर नगर परिषद की लापरवाहियों को लेकर आवाज उठाते रहते हैं और दूसरी तरफ उसी विभाग की मुख्य ऑफिसर की तारीफ करते हैं।

दूसरी ओर दबी जुबान में कांग्रेस के ही कार्यकर्ता कह रहे हैं कि राज उनका होने के बावजूद भी उनकी कोई सुनता ही नहीं हैं। गौरतलब हैं कि अभिलाषा सिंह को जब पूर्व में चूरू नगर परिषद की आयुक्त के पद पर आई थी तब इन्होंने कांग्रेस के पार्षदों की शिकायत तक नहीं सुनी थी और इसी के कारण ही कांग्रेस के नेताओं एवं कार्यकर्ताओं की शिकायत पर ही इन्हें एपीओ किया गया था।

मोटर साईकिल चोरी का आरोपी गिरफ्तार

सीसीटीवी फुटेज खंगाल किया आरोपी को गिरफ्तार

बांसवाड़ा, (निसं)। कोतवाली थाना पुलिस ने मोटर साईकिल चोरी करने के आरोपी को गिरफ्तार करते हुए मोटर साईकिल बरामद की। थानाधिकारी रतन सिंह ने बताया कि 26 नवंबर को प्रार्थी अलताफ रजा निवासी मंदारेश्वर मार्ग ने रिपोर्ट दी वह बांसवाडा डायग्नोटिक सेंटर लैब में कार्य करता है तथा उसने उसकी मोटर साईकिल हीरो शाईन लैब के बाहर खडी की थी। कार्य समाप्त होने के पश्चात् जब वह बाहर आया तो मोटर साईकिल बाहर नहीं दिखी। जिस पर सीसीटीवी फुटेज देखने पर पता चला कि एक अज्ञात व्यक्ति ने उसकी मोटर साईकिल चोरी की। जिस पर चोरी का प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान कोतवाली थाने के हैड कांस्टेबल हरीशचंद्र द्वारा प्रारंभ किया गया।

उन्होंने बताया कि जिला पुलिस अधीक्षक राजेश कुमार मीना द्वारा चोर नकबजनों की धरपकड के लिए विशेष अभियान चलाया गया है। इसी क्रम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कैलाश सिंह सांदू, वृत्ताधिकारी गजेन्द्र सिंह के निर्देशन में कोतवाली थानाधिकारी रतनसिंह के नेतृत्व में हैड कांस्टेबल हरीशचंद्र, हंसमुख, कांस्टेबल भरत, लाबुराम व राजेश की टीम गठित कर माल मुलजिमान की तलाश शुरु की गई। इस दौरान उक्त टीम द्वारा तकनीकि अनुसंधान एवं मुखबीर की सूचना पर संदिग्ध अभियुक्त रुपचंद पुत्र गेंदालाल गरासिया निवासी खूंटी बिजिया थाना सल्लोपाट को पकडकर सख्ती से पूछताछ की तो उसने उक्त मोटर साईकिल चोरी करना स्वीकार किया। जिस पर अभियुक्त रुपचंद गरासिया को गिरफ्तार कर माल मशरुका मोटर साईकिल हीरो शाइन बरामद की गई। थानाधिकारी सिंह ने बताया कि अभियुक्त से चोरी की अन्य वारदातों के संबंध में भी गहन अनुसंधान जारी है।

कोतवाली थाना पुलिस की गिरफ्त में आया मोटर साईकिल चोरी करने का आरोपी।

शव लेने गई पुलिस को कार चालक ने मारी टक्कर

श्रीगंगानगर, (निसं)। शनिवार रात को करणपुर-श्रीगंगानगर ट्रेक पर ट्रेन के नीचे आने से एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई है। मृतक के शव को लेने गई सदर पुलिस के जवानों पर एक कार चालक ने लापरवाही से गाड़ी चलाते हुए टक्कर मार दी । घायल पुलिसकर्मियों को मेदांता में भर्ती करवाया गया। उनके पर्चा बयान पर गाड़ी के चालक पर लापरवाही से गाड़ी चलाने का मुकदमा दर्ज किया गया है। चालक को रात को ही शांतिभंग के आरोप में गिरफ्तार किया गया। एसएचओ कुलदीप चारण ने बताया कि गजसिंहपुर के निकट चक 2 बीबी ए निवासी 55 वर्षीय ओमप्रकाश नायक पुत्र प्रेमाराम 7 जैड भट्ठा कॉलोनी में रहकर मजदूरी करता था। उसकी संदिग्ध परिस्थितियों में शनिवार रात पौन 11 बजे के करीब भट्ठा कॉलोनी के पास ही ट्रेन के नीचे आने से मौत हो गई।

ड्यूटी अधिकारी एएसआई राजेंद्र स्वामी जाब्ते के साथ मौके पर गए और शव को ट्रैक से उठाकर जिला अस्पताल की मोर्चरी रखवाया है। मृतक के भाई मोहनलाल ने आकर मर्ग दर्ज करवाई है। जब पुलिस इस घटनास्थल पर गई हुई थी तब थाने के चालक जगदेवसिंह व कांस्टेबल सज्जनकुमार रोड पर सरकारी गाड़ी के पास खड़े थे। तभी कार चालक अमरीकसिंह पुत्र वकीलसिंह ने उनको लापरवाही से गाड़ी चलाते हुए टक्कर मार दी। हादसे में दोनों कांस्टेबल घायल हो गए।

अचानक लाइसेंस के लिए फोटो खिंचवाने परिवहन कार्यालय पहुंची मंत्री की पत्नी

झुंझुनूं परिवहन कार्यालय की प्रशंसा की

झुंझुनूं, (निसं)। परिवहन मंत्री बृजेंद्र ओला की पत्नी और पूर्व जिला प्रमुख डॉ. राजबाला ओला सोमवार को अचानक परिवहन कार्यालय पहुंची। बिना कोई पूर्व सूचना के और सामान्य आवेदकों की तरह ही डॉ. ओला डीटीओ कार्यालय पहुंची तो पहले तो किसी ने गौर नहीं किया। लेकिन बाद में एक कर्मचारी ने डॉ. राजबाला ओला को पहचान लिया और डीटीओ डॉ. मक्खनलाल जांगिड को सूचना दी ।

- एक बार मच गया हडकंप, लेकिन बाद में सामान्य प्रक्रिया पूरी कर वापिस लौटी पूर्व जिला प्रमुख डॉ. राजबाला ओला

दरअसल डॉ. ओला को अपना ड्राइविंग लाइसेंस रिन्यू करवाना था। जिसके लिए उन्होंने पहले से ही फोटो खिंचवाने के लिए ऑनलाइन अपाइंटमेंट ले रखा था। जिसके तहत डॉ. राजबाला ओला सोमवार सुबह डीटीओ कार्यालय पहुंची। पूर्व जिला प्रमुख डॉ. ओला की इस सादगी की प्रशंसा हो रही है। इस मौके पर डीटीओ डॉ. मक्खनलाल जांगिड से सामान्य बातचीत में डॉ. राजबाला ओला ने कहा कि यहां आने वाले लोग परेशान ना हो। यहीं सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को ध्यान रखना चाहिए। साथ ही झुंझुनूं कार्यालय की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि वे बिना कोई पूर्व सूचना के सामान्य आवेदक की तरह आई। लेकिन उन्हें कहीं भी कोई परेशानी नहीं हुई। बाद में डीटीओ डॉ. मक्खनलाल जांगिड ने पूर्व जिला प्रमुख डॉ. राजबाला ओला को चाय - पानी के लिए भी पूछा। लेकिन उन्होंने किसी भी प्रकार की आवभगत से मना कर दिया। उनके साथ जिला कांग्रेस कमेटी के सचिव विद्याधर ज्याणी जयसिंहपुरा भी थें।

सामान्य आवेदक की तरह परिवहन मंत्री की पत्नी डॉ. राजबाला ओला अचानक सोमवार सुबह डीटीओ कार्यालय पहुंची और ड्राइविंग लाइसेंस रिन्यू करवाया।

‘मेरी काफ़ी आलोचना की गई है और मुझे जीवन भर रंगभेद का सामना करना पड़ा है। इसलिए यह अब मुझे परेशान नहीं करता है। यह दुर्भाग्य से हमारे देश में भी होता है।’

-एल शिवारामाकृष्णन

पूर्व भारतीय क्रिकेटर, रंगभेद को लेकर

खेल जगत

आज का खिलाड़ी — रविचंद्रन अश्विन

भारतीय ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने पहले टेस्ट मैच में न्यूज़ीलैंड की दूसरी पारी में टॉम लाथम को बोल्ड कर अपना 418वां अंतर्राष्ट्रीय विकेट लिया और इसके साथ ही वह भारत के महानतम ऑफ स्पिनर हरभजन सिंह से आगे निकल गए। 35 वर्षीय अश्विन के इस मैच से पहले तक 413 विकेट थे। पहली पारी में तीन विकेट लेकर उन्होंने अपने विकेटों की संख्या 416 पहुंचा दी और कल दूसरी पारी में अपना पहला विकेट लेने के साथ ही उनके 417 विकेट हो गए थे । आज उन्होंने अपना दूसरा विकेट लिया और हरभजन से आगे निकल गए।

क्या आप जानते हैं ?... क्रिस्टीन मोट्रो ऐसी पहली महिला खिलाड़ी है जिसने एक ही ओलम्पिक में 6 स्वर्ण पदक जीते। उसने सियोल ओलम्पिक (1986) में तैराकी में यह रिकॉर्ड बनाया

भारत जीत से चूका, न्यूज़ीलैंड की आखिरी जोड़ी ने मैच कराया ड्रा

कानपुर, 29 नवंबर। लेफ्ट आर्म स्पिनर रवींद्र जडेजा (40 रन पर चार विकेट) और ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन (35 पर तीन विकेट) की कातिलाना गेंदबाजी की बदौलत न्यूजीलैंड के खिलाफ भारत की झोली में लगभग आ चुका पहला टेस्ट मैच सोमवार को कम रोशनी और आखिरी कीवी जोड़ी के संघर्ष के चलते हार जीत के फैसले के बिना ड्रा समाप्त हो गया।

ग्रीनपार्क मैदान पर मैच के अंतिम दिन के पहले सत्र में भारतीय गेंदबाज को कोई सफलता नहीं मिली थी और मैच ड्रा की ओर खिसकता दिख रहा था मगर लंच और चायकाल के बीच मेजबान गेंदबाजों ने तीन अहम विकेट लेकर मैच को रोमांचक स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया जबकि चायकाल के बाद अश्विन और जडेजा ने सूझबूझ भरी गेंदबाजी कर मैच को भारत के पक्ष में पूरी तरह मोड़ दिया मगर पदार्पण टेस्ट खेल रहे रचिन रवीन्द्र 91 गेंदो पर 18 रनो की नाबाद पारी और 11वें नम्बर के बल्लेबाज एजाज पटेल (2 नाबाद, 23 गेंद) का विकेट भारतीय गेंदबाज अंत तक उखाड़ नहीं सके और भारतीय टीम दहलीज पर खड़ी जीत से दूर हो गयी।

क्रिकेट लीड भारत दो अंतिम कानपुर

भारत की पहली पारी के 345 रन के जवाब में न्यूजीलैंड की पहली पारी 296 रन पर सिमट गयी थी। 49 रन की बढ़त के साथ मेजबान टीम ने अपनी दूसरी पारी में सात विकेट पर 234 रन बनाकर पारी समाप्ति की घोषणा की और मेहमान टीम को जीत के लिये 284 रनो का लक्ष्य दिया था जिसके जवाब में खेल के अंत तक न्यूजीलैंड की टीम ने नौ विकेट पर 165 रन बना लिये थे। दोनो टीमों के बीच श्रृखंला का दूसरा और अंतिम मुकाबला मुंबई में खेला जायेगा।

इससे पहले न्यूजीलैंड ने अपने कल के स्कोर एक विकेट पर चार रन से आगे खेलना शुरू किया और पहले सत्र में बगैर कोई विकेट गंवाये 79 रन बना लिये थे। लंच के बाद पहली गेंद पर भारत को पहली सफलता नाइट वाच मैन विलियम समरवेल (36) के रूप में मिली जो उमेश यादव की गेंद पर लांग लेग पर खड़े शुभमन गिल के हाथों लपके गये। इस बीच सलामी बल्लेबाम टाम लाथम (52) ने मैच की दूसरी पारी में भी अर्धशतक बनाने का गौरव हासिल किया। अपनी अर्धशतकीय पारी में उन्होने 146 गेंद खेलकर तीन चौके लगाये। हालांकि लंच और चाय के बीच अश्विन ने लाथम और जडेजा ने नये बल्लेबाज रास टेलर (2) को आउट कर मेहमान टीम को दो और झटके दिये। लाथम का विकेट लेकर आश्विन हमवतन ऑफ स्पिनर हरभजन सिंह के 417 विकेटों से आगे निकल गए। चायकाल में न्यूजीलैंड का स्कोर चार विकेट पर चार विकेट पर 125 रन था।

चायकाल के बाद न्यूजीलैंड ने हेनरी निकल्स (1) को अक्षर पटेल ने पगबाधा आउट कर भारत को जीत की तरफ एक कदम और ढकेल दिया वहीं एक छोर पर डट कर खड़े कप्तान केन विलियम्स (24) को जडेजा ने अपनी गेंदों से खूब परेशान किया और आखिरकार उन्हे पगबाधा आउट कर मैच को सांस रोकने वाला बना दिया। वहीं बेहद सूझबूझ से गेंदबाजी कर रहे अश्विन ने विकेटकीपर बल्लेबाज टाम ब्लेंडल (2) को क्लीन बोल्ड किया। टाम ब्लेंडल के खाते में यह दो रन 38 गेंद खेलकर आये। बाद में जडेजा ने काइल जेमिसन (5) और टिम साउदी (4) को एलबीडब्लू आउट कर मैच को पूरी तरह भारत की झोली में डाल दिया था। मैच के अंतिम क्षणों में अंपायरों ने कम से कम छह बार लाइट मीटर से रोशनी की जांच की और यह भारतीय खेमे के साथ साथ प्रशंसकों के लिये भी मैच के ड्रॉ होने की अनहोनी होने का संकेत दे रही थी और आखिरकार कीवी पारी की 98वे ओवर की समाप्ति पर अंपायरों ने खराब रोशनी का हवाला देते हुये विकेट की गिल्लियां बिखेर दी और इसी के साथ भारत की जीत की उम्मीदों का भी तुषारापात हो गया।

स्कोर बोर्ड

भारत पहली पारी 345 रन
न्यूजीलैंड पहली पारी 296
भारत दूसरी पारी
सात विकेट पर 234 रन पारी घोषित

	रन	गेंद	4	6
लाथम बो अश्विन	52	146	3	0
यंग पगबाधा अश्विन	02	6	0	0
सोमरविले का शुभमन बो उमेश	36	110	5	0
विलियम्सन पगबाधा बो जडेजा	24	112	3	0
टेलर पगबाधा बो जडेजा	02	24	0	0
निकोल्स बो अक्षर	01	4	0	0
ब्लंडेल बो अश्विन	02	38	0	0
रवींद्र अविजित	18	91	2	0
जैमिसन पगबाधा बो जडेजा	05	30	0	0
साउदी पगबाधा बो जडेजा	04	8	1	0
पटेल अविजित	02	23	0	0

अतिरिक्त : 17
कुल : 98 ओवर में नौ विकेट पर 165 रन
गेंदबाजी : अश्विन 30-12-35-3, पटेल 21-12-23-1, यादव 12-2-34-1, इशांत 7-1-20-0, जडेजा 28-10-40-4

	रन	गेंद	4	6
शुभमन गिल बो जैमिसन	01	3	0	0
पुजारा का ब्लंडेल बो जैमिसन	22	33	3	0
अजिंक्या रहाणे बो एजाज पटेल	04	15	1	0
श्रेयस का ब्लंडेल बो साउदी	65	125	8	1
जडेजा पगबाधा बो साउदी	00	2	0	0
आश्विन बो जैमिसन	32	62	5	0
रिधिमान साहा अविजित	61	126	4	1
अक्षर पटेल अविजित	28	67	2	1

अतिरिक्त : 04
कुल : 81ओवर में सात विकेट पर 234 रन पारी घोषित
गेंदबाजी:-टिम साउदी 22-2-75-3, काइल जैमिसन 17-6-40-3, एजाज पटेल 17-3-60-1, रचिन रवींद्र 9-3-17-0, सोमरविले 16-2-38-0

रहाणे की लय को लेकर चिंतित नहीं, लेकिन आप उनके बल्ले से रन चाहेंगे : द्रविड

कानपुर, 29 नवंबर । भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच राहुल द्रविड़ ने सोमवार को यहां कहा कि किसी और से ज्यादा टेस्ट उपकप्तान अजिंक्य रहाणे खुद बड़ा स्कोर खड़ा कर लय हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं और उनके लिए यह सिर्फ एक पारी की बात है।

नियमित कप्तान विराट कोहली की गैरमौजूदगी में टीम की कमान संभाल रहे रहाणे ने न्यूजीलैंड के खिलाफ यहां ड्रॉ टेस्ट में 35 और चार रन बनाये। इस साल 12 टेस्ट मैचों में उनका औसत 20 से भी कम का है।

द्रविड़ से जब पूछा गया कि क्या रहाणे की लय टीम के लिए चिंता का सबब है तो उन्होंने कहा, “ इसके लिए ज्यादा चिंतित होने की जरुरत नहीं है। जाहिर है कि आप चाहेंगे कि अजिंक्य आपके लिए अधिक रन बनाये, वह खुद भी ऐसा ही चाहेंगे।”

उन्होंने कहा, “ वह एक प्रतिभाशाली खिलाड़ी हैं और उन्होंने अतीत में भारत के लिए अच्छा प्रदर्शन किया है। वह उन लोगों में से एक है जिनके पास कौशल और अनुभव है। यह बस एक मैच की बात है , वह इसे जानते है और हम भी समझते है।”

मुंबई में खेले जाने वाले अगले टेस्ट मैच में कप्तान कोहली की वापसी होगी और ऐसे में क्या रहाणे को अंतिम 11 में जगह देने के लिए मैन ऑफ द मैच श्रेयस अय्यर को बाहर बैठाया जाएगा? द्रविड़ ने कहा, “ हमने तय नहीं किया है कि हमारी अंतिम एकादश क्या होगी और यह बहुत जल्दी है। कम से कम आज हमारा ध्यान इस मैच पर था। जब हम मुंबई जाएंगे तो हालात का जायजा लेंगे और लोगों की फिटनेस जांचेंगे. विराट कोहली भी साथ जुड़ेंगे।

भारत के दक्षिण अफ्रीका दौरे पर सीएसए प्रमुख ने कहा: सब कुछ पटरी पर है

जोहानसबर्ग, 29 नवम्बर। क्रिकेट साउथ अफ्रीका की भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के साथ सकारात्मक बातचीत चल रही है और उन्हें भरोसा है कि भारत का दौरा प्लान के मुताबिक होगा। हालांकि देश के शीर्ष महामारी वैज्ञानिकों में से एक डॉक्टर सलीम अब्दुल करीम ने उम्मीद जताई है कि देश में इस सप्ताह के अंत तक 10,000 से ज़्यादा केस रोज के आने शुरू होने लगेंगे। सीएसए ने बीसीसीआई को गोटंग और द वेस्टर्न केप में होने वाले बायो बबल माहौल को लेकर संतुष्टि दी है। सीएसए के कार्यकारी सीईओ फ़ोलेक्सी मोसेकी ने कहा, "हमारी बीसीसीआई के साथ बातचीत चल रही है और वह यहां आने के लिए उत्सुक हैं। हमारी सरकार हमारी मदद करना चाहती है और हम अपने भारतीय समकक्षों को आश्वस्त करना चाहते हैं कि सब कुछ पटरी पर है।" गोटंग प्रांत में पहला और दूसरा टेस्ट खेला जाना है और यहीं पर सबसे ज़्यादा केस देखने को मिल रहे हैं और उम्मीद है आने वाले समय में द वेस्टर्न केप में दिखने लगेंगे। सीएसए ने पिछले साल गर्मियों में श्रीलंका और पाकिस्तान की सफलता पूर्वक मेज़बानी की थी और ऑस्ट्रेलिया की मेज़बानी करने की भी तैयारी कर रहे थे। लेकिन द वेस्टर्न केप ज़्यादा सफल नहीं रहा है। पिछले साल दिसंबर में इंग्लैंड ने अपने केपटाउन के होटल में कोविड केस निकलने के बाद दौरे को रद्द कर दिया गया था। सीएसए ने तब से बबल को और सख्त किया है, जहां खिलाड़ियों को बिना किसी कारण के होटल से बाहर जाने की इजाज़त नहीं थी।

मोसेकी ने कहा, "हमने दो बायो बबल बनाने की तैयारी की थी। हमने इंग्लैंड दौरे से बहुत कुछ सीखा है। जब हम इस दौरे की तैयारी कर रहे थे तो हमने मैचों की संख्या को देखते हुए गोटंग और केप टाउन के लिए तैयारी की है। प्लान यही है कि जोहानसबर्ग से केपटाउन तक चार्टर फ्लाइट का इंतज़ाम होगा। इस नए वेरियंट के आने से पहले भी यही प्लान था।" जहां तक चीज़े अभी तक पहुंची हैं, सीएसए ने अभी तक दौरे को कहीं और या किसी ओर समय कराने का प्लान नहीं बनाया है। इसकी जगह, उम्मीद यह है कि भारत से सीरीज़ सही समय पर होगी और इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया की सीरीज़ नहीं होने से हुए नुकसान की भरपाई की जाएगी। मोसेकी ने कहा, "अगर यह दौरा नहीं होता है, तो इससे हम एक खराब स्थिति में पहुंच जाएंगे। हमें कुछ प्रोग्राम रोकने पड़ेंगे। हम एक या दो सालों में एक अलग स्थिति में पहुंच जाएंगे।"

नए कोरोना वैरिएंट से चिंतित फिलेंडर स्वदेश लौटे

चटगांव, 29 नवंबर। पाकिस्तान पुरुष क्रिकेट टीम के गेंदबाजी सलाहकार वर्नोन फिलेंडर यहां जारी बंगलादेश के दौर के बीच ही दक्षिण अफ्रीका लौटेंगे।

फिलेंडर ने दक्षिण अफ्रीका में नए कोरोना वायरस वैरिएंट के कारण यहां जाने वाली उड़ानों पर लग रहे प्रतिबंध के चलते बंगलादेश के खिलाफ मौजूदा टेस्ट मैच के चौथे दिन सोमवार को चटगांव से दक्षिण अफ्रीका के लिए उड़ान भरने का फैसला किया। समझा जाता है कि फिलेंडर को वैसे भी बंगलादेश के खिलाफ पहले टेस्ट के अंत में स्वदेश लौटना था, लेकिन अब हवाई यात्रा को लेकर बिगड़ती स्थिति के कारण उन्हें अपनी योजना बदलनी पड़ी है।

उल्लेखनीय है कि पश्चिमी अफ्रीका में पाए गए कोरोना वायरस के ऑमिक्रोन वैरिएंट ने पहले ही दक्षिण अफ्रीका में क्रिकेट को प्रभावित कर दिया है। दक्षिण अफ्रीका और जिम्बाब्वे में हो रहा महिला विश्व कप 2022 का क्वालिफायर टूर्नामेंट भी रद्द कर दिया गया है। यहां तक कि नीदरलैंड और दक्षिण अफ्रीका की वनडे सीरीज भी रद्द हो गई है।

वहीं भारत ए टीम इस समय दक्षिण अफ्रीका में है और उसका दौरा फिलहाल आगे बढ़ने के लिए तैयार है। भारत की सीनियर पुरुष टीम भी अगले महीने की शुरुआत में दक्षिण अफ्रीका के लिए उड़ान भरने वाली है, जहां वह मेजबान दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन टेस्ट, तीन वनडे और चार टी-20 मैच खेलेगी, हालांकि इस दौरे को लेकर भी अभी संदेह बना हुआ है।

पाकिस्तान को जीत के लिए 93 रन की जरूरत

चटगांव, 29 नवम्बर । बाएं हाथ के तेज गेंदबाज शाहीन आफरीदी (32 रन पर पांच विकेट) की घातक गेंदबाजी से पाकिस्तान ने बंगलादेश को पहले क्रिकेट टेस्ट मैच के चौथे दिन सोमवार को दूसरी पारी में 157 रन पर समेट दिया। पाकिस्तान को जीत के लिए 202 रन का लक्ष्य मिला जिसका पीछा करते हुए पाकिस्तान ने अपने सलामी बल्लेबाजों के बीच 109 रन कीओपनिंग साझेदारी के दम पर अपने लिए जीत की उम्मीद जगा ली है। मैच में एक दिन का खेल शेष है और पाकिस्तान को अभी जीत के लिए 93 रन की जरूरत है। बंगलादेश को पहली पारी में 44 रन की बढ़त हासिल हुई थी लेकिन दूसरी पारी में बंगलादेश ने लड़खड़ाती शुरुआत करते हुए अपने चार विकेट मात्र 39 रन तक गंवा दिए थे और आज चौथे दिन उसकी पारी 157 रन पर सिमट गयी। पहली पारी में शतक बनाने वाले लिटन कुमार दास ने दूसरी पारी में भी जज्बा दिखाया और 89 गेंदों में छह चौकों की मदद से सर्वाधिक 59 रन बनाये। आफरीदी ने 15 ओवर में 32 रन देकर पांच विकेट झटके जबकि अपना तीसरा मैच खेल रहे ऑफ स्पिनर साजिद खान ने 33 रन पर तीन विकेट और तेज गेंदबाज हसन अली ने 52 रन पर दो विकेट लिए। 202 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए पाकिस्तान के ओपनरों आबिद अली और अब्दुल्लाह शफीक ने टीम को ठोस शुरुआत दी और स्टंप्स तक ओपनिंग साझेदारी में 109 रन जोड़ डाले।

निसंका का अर्धशतक, श्रीलंका की ठोस शुरुआत

गाले, 29 नवम्बर । पथुम निसंका (नाबाद 61) के शानदार अर्धशतक से श्रीलंका ने वेस्ट इंडीज के खिलाफ दूसरे क्रिकेट टेस्ट के खराब मौसम से प्रभावित पहले दिन सोमवार को 34.4 ओवर में एक विकेट के नुकसान पर 113 रन बना लिए। निसंका और कप्तान दिमुथ करुणारत्ने ने पहले विकेट के लिए 106 रन की शतकीय साझेदारी की। करुणारत्ने 90 गेंदों में छह चौकों की मदद से 42 रन बनाकर रोस्टन चेज को उनकी गेंद पर ही कैच थमा बैठे। निसंका ने 109 गेंदों पर नाबाद 61 रन में चार चौके और एक छक्का लगाया। निसंका के साथ ओशादा फ़र्नांडो 10 गेंदों में दो रन बनाकर क्रीज पर हैं।

समय होता तो मैच ख़त्म कर देते : अश्विन

कानपुर, 29 नवम्बर। भारतीय ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने न्यूज़ीलैंड के खिलाफ पहला टेस्ट मैच पांचवें और अंतिम दिन सोमवार को ड्रा हो जाने के बाद कहा कि हम चीज़ों को नियंत्रण में रख रहे थे और अच्छी जगह पर गेंदबाज़ी कर रहे थे। हम जानते थे कि अगर हमारे पास समय होता तो हम मैच को ख़त्म कर देते। लेकिन इस पूरे टेस्ट मैच में यही सिलसिला रहा है और ख़राब रोशनी के कारण खेल जल्दी समाप्त हुआ है।

आश्विन ने मैच के बाद कहा ,टेस्ट क्रिकेट में आपको सिर्फ़ चार ओवर गेंदबाज़ी नहीं करनी होती। यह एक लंबा प्रारूप है और मैं इसे खेलते रहना चाहता हूं। हरभजन सिंह से आगे जाना एक अच्छी बात है। जब से राहुल भाई कोच बने हैं, उन्होंने यही कहा है कि आप जितने भी रन बना लो या विकेट ले लो, 10 साल बाद आपको यह याद नहीं रहेगा, सिर्फ़ यादें रह जाएगी। ग्रीन पार्क की पिच के लिए ऑफ स्पिनर ने कहा,हमेशा पिच के बारे में सवाल उठाए जाते है लेकिन अंतिम सेशन के आख़िरी ओवर तक मैच का जाना एक अच्छी बात है। एक नया खिलाड़ी आकर इस तरह से मैच बचाता है वह बहुत अच्छी बात है। टेलएंडरों को आउट करना आसान नहीं होता।

श्रीलंका महिला टीम की छह खिलाड़ी कोरोना पॉज़िटिव

हरारे, 29 नवम्बर। श्रीलंका महिला क्रिकेट टीम की छह खिलाड़ी कोरोना पॉज़िटिव पायी गयी हैं। श्रीलंका क्रिकेट ने रविवार को बताया कि ज़िम्बाब्वे में विश्व कप क्वालीफ़ायर में हिस्सा लेने वाली श्रीलंका महिला टीम की छह खिलाड़ी कोरोना पॉज़िटिव पाई गई हैं। दक्षिण अफ्रीका में कोरोना का नया वेरियंट पाए जाने के बाद शनिवार को अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने ज़िम्बाब्वे में चल रहे क्वालीफ़ायर टूर्नामेंट को रद्द कर दिया था। हालांकि अभी यह सामने नहीं आया है कि पॉज़िटिव पाई गईं खिलाड़ी ओमिक्रॉन वेरियंट से संक्रमित हैं या नहीं। वेस्टइंडीज़ बनाम श्रीलंका का मुक़ाबला, श्रीलंका सहायक स्टाफ़ के सदस्य के कोविड पॉज़िटिव पाए जाने के बाद रद्द कर दिया गया था। इसी के बाद आईसीसी ने क्वालीफ़ायर को रद्द करने का फ़ैसला किया। श्रीलंका क्रिकेट के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ऐश्ली डीसिल्वा ने बताया कि टीम अभी भी ज़िम्बाब्वे में है और उन्हें जल्द से जल्द वापस श्रीलंका लाया जाएगा। जो खिलाड़ी पॉज़िटिव पाई गईं हैं, उन्हें तब तक वहीं रहना होगा जब तक उनका टेस्ट निगेटिव नहीं आ जाता है। डॉक्टर टीम के साथ थे, जो उनकी देखरेख के लिए वहां मौजूद रहेंगे। टीम में जो खिलाड़ी संक्रमित नहीं हुईं हैं, वे जल्द ही वापस लौट सकती हैं। उन्हें श्रीलंका पहुंचने पर क्वारंटीन रहना होगा, क्योंकि श्रीलंकाई सरकार ने ओमिक्रॉन वेरियंट को देखते हुए अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिणी देशों से आने वाले यात्रियों के लिए यह ज़रूरी नियम बनाया है।

हमने जीतने की पूरी कोशिश की लेकिन वे बेहतर क्रिकेट खेले : रहाणे

कानपुर, 29 नवम्बर। भारतीय कप्तान अजिंक्या रहाणे ने पहला टेस्ट रोमांचक अंदाज में ड्रा समाप्त होने के बाद सोमवार को कहा कि हमने मैच जीतने के लिए पूरी कोशिश की, लेकिन उन्होंने बेहतर क्रिकेट खेला।

रहाणे ने मैच के बाद ग्रीन पार्क में कहा,जिस तरह आज हम दूसरे सत्र में वापस आए और विकेट चटकाये , वह बेहतरीन था। उमेश और इशांत दोनों ने बेहतरीन गेंदबाज़ी की और हमारे स्पिनर तो विश्व स्तरीय हैं हीं।

अक्षर और साहा कल अच्छी बल्लेबाज़ी कर रहे थे, उससे पहले श्रेयस और अश्विन की साझेदारी भी महत्वपूर्ण थी। हम कल चार ओवर गेंदबाज़ी करना चाहते थे, जो हमने किया। श्रेयस के लिए मैं बहुत ख़ुश हूं। वह घरेलू क्रिकेट में लंबे समय से अच्छा कर रहे थे।

कप्तान ने मुंबई में होने वाले दूसरे और अंतिम टेस्ट के लिए कहा कि विराट कोहली के मुंबई टेस्ट में आने के बाद जो भी बदलाव होगा, उस पर टीम प्रंबधन निर्णय लेगा।

भारतीय महिला फुटबॉल टीम चिली से 0-3 से हारी

मनौस, 29 नवंबर। भारतीय महिला फुटबॉल टीम यहां ब्राजील के मनौस में सोमवार को अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल टूर्नामेंट के अपने दूसरे मैच में चिली से 0-3 से हार गई। टूर्नामेंट में यह उसकी लगातार दूसरी हार है।

मैच में हालांकि भारतीय टीम ने कड़ी चुनौती पेश की। चिली ने शुरुआती बढ़त हासिल करने के लिए 12वें मिनट में गोल का मौका दिया, लेकिन भारतीय गोलकीपर एम लिंथोइंगंबी देवी ने शानदार बचाव करते हुए गोल होने से रोका। इसके बाद हालांकि स्ट्राइकर मारिया उरुतिया ने 14वें मिनट में गोल दाग कर टीम को 1-0 की बढ़त दिलाई। इस गोल के साथ चिली ने खेल पर नियंत्रण बनाया और इसे अंत तक बरकरार रखा।

पहले हाफ में दूसरा गोल नहीं हुआ और चिली के पास 1-0 की बढ़त रही। भारतीय गोलकीपर लिंथोइंगंबी देवी के अच्छा बचाव करते हुए चिली के हर एक प्रयास को विफल किया। दूसरे हाफ में भारतीय टीम काफी आक्रामक और खतरनाक दिखी। परिणामस्वरूप 66वें मिनट में भारत ने मनीषा और सब्सीट्यियूट खिलाड़ी डेंगमेई ठोस की मदद से गोल का मौका बनाया, जिसे चिली की गोलकीपर क्रिस्टियनी एंडलर ने विफल कर दिया। कुछ मिनट बाद भारत को फाउल के जरिए गोल दागने का मौका मिला, जिसे मनीषा ने खेला, लेकिन 30 वर्षीय एंडलर ने इसे भी रोक दिया। उल्लेखनीय है कि भारतीय टीम अब अपना आखिरी मैच गुरुवार को वैनेजुएला के खिलाफ खेलेगी।

सात्विक और चिराग की जोड़ी ने वर्ल्ड टूर फाइनल्स के लिए किया क्वालीफाई

दुनिया की 11वें नंबर की जोड़ी सात्विक साइराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने बुधवार से शुरू हो रहे सीजन के आखिरी बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड टूर फाइनल्स में जगह बना ली है। सात्विक और चिराग इंडोनेशिया ओपन के सेमीफाइनल में पहुंचे थे। जापान के अकिरा कोगा और ताइची सेइतो के भी सेमीफाइनल में हारने के बाद उन्होंने जगह बनाई। उन्होंने जापानी जोड़ी को रोड टू बाली रेस में पछाड़ा। उन्हें कट में प्रवेश

दुनिया की 11वें नंबर की जोड़ी सात्विक साइराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने बुधवार से शुरू हो रहे सीजन के आखिरी बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड टूर फाइनल्स में जगह बना ली है। सात्विक और चिराग इंडोनेशिया ओपन के सेमीफाइनल में पहुंचे थे। जापान के अकिरा कोगा और ताइची सेइतो के भी सेमीफाइनल में हारने के बाद उन्होंने जगह बनाई। उन्होंने जापानी जोड़ी को रोड टू बाली रेस में पछाड़ा। उन्हें कट में प्रवेश के लिए सेमीफाइनल में दुनिया की नंबर एक जोड़ी मार्कस एफ गाइडोन और केविन एस को हराना था लेकिन वे 16-21, 18-21 से हार गएअकिरा और ताइची भी जापान के ताकुरो होकी और युगो कोबायाशी से हार गए जिससे भारतीय जोड़ी को जगह मिल गई। चिराग ने इंस्टाग्राम पर लिखा,हम पहली बार वर्ल्ड टूर फाइनल्स खेलेंगे। दुनिया की शीर्ष आठ जोड़ियों के खिलाफ खेलने को लेकर रोमांचित हूं।

रामकुमार रामनाथन ने जीता पहला एटीपी चैलेंजर खिताब

मनामा, 29 नवंबर। भारतीय टेनिस खिलाड़ी रामकुमार रामनाथन ने यहां एटीपी80 मनामा टूर्नामेंट में रूस के एवगेनी कार्लोवस्की को हराकर अपना पहला एटीपी चैलेंजर एकल खिताब जीता।

टूर्नामेंट में छठी वरीयता प्राप्त रामनाथन ने कार्लोवस्की को 68 मिनट तक चले मुकाबले में 6-1, 6-4 से हराकर खिताब अपने नाम किया। रामनाथन ने युगल स्पर्धा में अर्जुन काधे के साथ चुनौती दी, लेकिन उन्हें सेमीफाइनल में नूनो बोर्गेस और फ्रांसिस्को कैब्रल की पुर्तगाली जोड़ी से 6-3, 1-6, 10-7 से हार का सामना करना पड़ा। उन्होंने टूर्नामेंट के पहले दौर में यूक्रेन के व्लादिस्लाव ओरलोव, दूसरे दौर में क्रोएशिया के ड्यूज अजदुकोविक को हराया, जबकि क्वार्टर फाइनल में पुर्तगाल के गोंकालो ओलिवेरा को पछाड़ा और सेमीफाइनल में ग्रेट ब्रिटेन के जे क्लार्क को पराजित किया। उल्लेखनीय है कि 27 वर्षीय रामनाथन 2009 में पेशेवर टेनिस खिलाड़ी बने थे और तब से उन्होंने छह बार चैलेंजर फाइनल खेला, लेकिन हर बार हार का सामना किया। उन्होंने इस साल जुलाई में कैरी चैलेंजर्स में आखिरी चैलेंजर फाइनल खेला था।

बीसीसीआई ने सीवीसी मामले को सॉलिसिटर जनरल के पास भेजा

नयी दिल्ली, 29 नवंबर । भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) की ओर से सीवीसी स्पोर्ट्स मामले को भारत के सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता के पास भेजे जाने की जानकारी सामने आई है, जो केंद्र सरकार से न जुड़े होने वाले मामलों में बोर्ड का प्रतिनिधित्व करते हैं।

मौजूदा जानकारी के मुताबिक सॉलिसिटर जनरल ने इस पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है, लेकिन समझा जाता है कि उन्होंने बीसीसीआई को अन्य कानूनी राय लेने की सलाह दी है, हालांकि इसकी पुष्टि नहीं की जा सकती है कि क्या बोर्ड सच में अन्य राय ले रहा है या नहीं, पर मामले से जुड़े जानकारों ने संकेत दिया है कि कानूनी विशेषज्ञों की एक समिति के साथ इस मसले को जल्द ही सुलझा लिया जाएगा।

समझा जाता है कि अगर इस मामले में थोड़ी और देर होती है तो मौजूदा आठ आईपीएल टीमों के लिए खिलाड़ियों के रिटेंशन की समय सीमा, जो कि 30 नवंबर है, को एक हफ्ते के लिए बढ़ाया जा सकता है, ताकि नई फ्रेंचाइजियों अहमदाबाद और लखनऊ दोनों को इतने ही दिनों में अपने खिलाड़ियों के चयन का समय मिल सके।

उल्लेखनीय है कि सीवीसी स्पोर्ट्स, जिसने 5625 करोड़ रुपए में अहमदाबाद फ्रेंचाइजी का स्वामित्व हासिल किया था, को अभी तक बीसीसीआई से मंजूरी पत्र प्राप्त नहीं हुआ है। यह भी समझा जाता है कि अमेरिकी कंपनी बीसीसीआई को यह समझाने की कोशिश कर रही है कि ब्रिटेन की सट्टेबाजी कंपनी में उसका निवेश अवैध नहीं है।

बीसीसीआई के सीवीसी स्पोर्ट्स मुद्दे को सॉलिसिटर जनरल के पास भेजने के पीछे आईपीएल के पूर्व अध्यक्ष ललित मोदी की टिप्पणियों को कारण माना जा रहा, जिसमें उन्होंने ब्रिटेन की एक सट्टेबाजी कंपनी में सीवीसी स्पोर्ट्स के निवेश पर सवाल उठाया था। परिणामस्वरूप अब गतिरोध इस बात को लेकर है कि क्या सीवीसी को स्वामित्व देने का निर्णय भारत में कानूनी जांच के योग्य होगा और क्या सीवीसी का ब्रिटेन की सट्टेबाजी कंपनी में निवेश इसमें बाधा है।

म्यांमार की एक गुफा में भगवान बुद्ध की 9000 मूर्तियां हैं। इनमें से कुछ तो सैंकड़ों साल पुरानी हैं। असल में यहाँ भक्तों ने भगवान बुद्ध को प्रसन्न करने के लिए मूर्तियाँ रखी हैं। पिंडाया क्षेत्र अपनी लाइम स्टोन गुफाओं के लिए विख्यात है। इन्हीं में से एक है उपरोक्त श्वे यू मिन केव (गोल्डन केव)। मूर्तियों में कोई एल्बैस्टर (सिलखड़ी) से बनी है, कोई सागवान की लकड़ी या मार्बल से, कोई पत्थर या सीमेंट से तो कोई कांसे से। गुफा के दरवाजे पर है श्वे यू मिन पैंगोडा। इस मठ के प्रार्थना कक्ष, अर्थात् ताज़ोंगा का निर्माण बौद्ध संत यू खांती ने किया था, जिसने मैन्डले हिल में भी कई धार्मिक स्मारक बनाए हैं। गुफा में भगवान बुद्ध की दो मूर्तियां ऐसी हैं जिनसे पसीना निकलता है। स्थानीय लोगों के अनुसार किसी कारण से सिर्फ इन दो मूर्तियों पर ही पानी नजर आता है, और श्रद्धालुओं में इनका पसीना पोंछने की होड़ लगी रहती है। गुफा के 490 फुट लम्बे पैंदल मार्ग के अंत में एक साइन पोस्ट के नीचे से लोग काली मिट्टी ले जाते हैं, यह जगह है ब्लैक क्ले हिलॉक। पिंडाया क्षेत्र की यही जगह ऐसी है जहाँ की मिट्टी काली है। लोग इसे पवित्र मानते हैं और इसका इस्तेमाल बुरी आत्माओं को भगाने के लिए करते हैं। गुफा में, छत से पानी टपकने के कारण चूने के कई स्तंभ, स्टलैंग्माइट, बन गए हैं, जिन पर प्रहार करने से घंटे की ध्वनि निकलती है। पिंडाया गुफा के नामकरण की कहानी भी बड़ी रोचक है। कहते हैं एक बार सात राजकुमारियाँ इस गुफा में आराम कर रही थीं कि तभी एक दैत्याकार मकड़ी ने दरवाजे को जाल से ढक दिया। राजकुमारियाँ मदद के लिए चिल्लाने लगीं तो उनकी आवाज वहां पास ही मौजूद एक राजकुमार ने सुन ली। इनमें से सबसे बड़ी व बुद्धिमान राजकुमारी ने कहा कि अगर राजकुमार ने उनकी मदद की तो सबसे छोटी व सबसे सुंदर राजकुमारी का विवाह उससे कर देंगे। राजकुमार ने तीर चलाकर मकड़ी को मार दिया, फिर वह चिल्लाया "पिंगु-या", अर्थात् मकड़ी मर गई। गौरतलब है कि म्यांमार में मकड़ी को पिंगु कहते हैं। इस कारण ही गुफा का नाम पिंगुया पड़ गया, बाद में इसे ही पिंडाया कहा जाने लगा।

गहलोत सरकार सुन नहीं रही इसलिए प्रियंका गांधी से मिलने यू.पी.पहुंचे राजस्थान के बेरोजगार युवा

राजस्थान बेरोजगार एकीकृत महासंघ के अध्यक्ष उपेन यादव ने कहा कि, हमने लखनऊ में कांग्रेस कार्यालय के बाहर भूख हड़ताल शुरु कर दी है

लखनऊ/नई दिल्ली, 29 नवम्बर। राजस्थान की राजधानी जयपुर के शहीद स्मारक पर कई दिनों से हड़ताल, शर्टलैस आंदोलन, मंत्रियों को गुलाब भेंट करने और भूख हड़ताल पर जाने के बाद अब राजस्थान के बेरोजगार युवकों ने लखनऊ में कांग्रेस कार्यालय के बाहर धरना शुरू कर दिया है। यह युवक कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी से मुलाकात की मांग कर रहे हैं। उनका कहना है कि, राजस्थान की गहलोत सरकार उनकी नहीं सुन रही है।

राजस्थान बेरोजगार एकीकृत महासंघ (आर.बी.ई.एम.) के बैनर तले आयोजित इस धरना का उद्देश्य राजस्थान में अशोक गहलोत के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार पर बेरोजगारों की मांगों को पूरा कराना है। इनकी प्रमुख मांग सरकारी नौकरियों में नियुक्ति है। इसके लिए भर्ती परीक्षाएं पहले ही आयोजित की जा चुकी हैं। राज्य सरकार की नौकरियों के लिए रिक्तियों की संख्या में वृद्धि और प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रश्न पत्र लीक करने वालों के खिलाफ गैर-जमानती कानून तैयार करने की भी मांग कर रहे हैं।

धरने में शामिल होने पहुंचे आर.बी.ई.एम. के अध्यक्ष उपेन यादव ने कहा कि, हमने लखनऊ में प्रदेश कांग्रेस कमेटी के बाहर धरने के बाद अब भूख हड़ताल शुरू कर दी है। हम पिछले 47 दिनों से जयपुर में धरना प्रदर्शन कर रहे हैं। हम प्रियंका गांधी से मिलना चाहते हैं। कांग्रेस ने घोषणा की है कि वह उत्तर प्रदेश में 20 लाख नौकरियां देगी। 2018 के विधानसभा चुनाव से पहले हमने कांग्रेस को समर्थन दिया था, लेकिन हमसे किए गए वादे पूरे नहीं किए गए।

इससे पहले आरबीईएम ने कहा था कि वह प्रियंका गांधी समेत अपने नेताओं की रैलियों में उत्तर प्रदेश चुनाव में कांग्रेस का विरोध करेगी। उपेन यादव ने कहा कि राजस्थान में कांग्रेस की सरकार है। इसके बावजूद वे बेरोजगार युवाओं से किए गए वादों को पूरा नहीं कर रहे हैं और इसके बजाय उत्तर प्रदेश के लोगों से बड़े-बड़े वादे कर रहे हैं। पहले पार्टी को राजस्थान में किए गए अपने वादों को पूरा करना चाहिए।

- **उपेन यादव ने कहा कि, यू.पी. में कांग्रेस ने सरकार बनने पर 20 लाख नौकरियां देने का वादा किया है, इससे पहले राजस्थान में भी कुछ इसी तरह का वादा किया गया था, लेकिन अब सरकार अपने वादे को पूरी तरह से भूल गई है।**
- **उपेन यादव ने कहा कि, हम पिछले 47 दिनों से जयपुर में धरना प्रदर्शन कर रहे हैं। हम प्रियंका गांधी से मिलना चाहते हैं।**

मुख्यमंत्री गहलोत के नवनियुक्त सलाहकार विधायक दानिश अबरार 23 नवंबर को प्रदर्शनकारियों के पास पहुंचे और बातचीत की।

हालांकि, सहमति नहीं बनने पर प्रदर्शनकारी 26 नवंबर को उत्तर प्रदेश के लिए रवाना हो गए और लखनऊ पहुंचकर उन्होंने यू.पी. कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर उनके साथ बदसलूकी करने का भी आरोप लगाया।

बिना बहस के...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सरकार ने कहा कि विपक्ष इन कानूनों को निरस्त करने की मांग करता आया है और सरकार अब इसके लिए तैयार है तो बहस की जरुरत नहीं है। सूत्रों ने बताया कि मोदी सरकार गोवा, मणिपुर, पंजाब, उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड के आगामी विधानसभा चुनावों को देखते हुए विपक्ष को कोई मौका नहीं देना चाहती, इसलिए वह शीतकालीन सत्र की अधिक इच्छुक नहीं है।

मोदी सरकार के नये भारत के लोकतंत्र का नमूना: उमर अब्दुल्ला

उमर अब्दुल्ला ने यह भी कहा कि, संसद सत्र के पहले ही दिन बिना चर्चा के कृषि कानूनों की वापसी को हर कोई एक "नमूना" ही

श्रीनगर, 29 नवंबर (वार्ता)। जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कृषि कानून वापस लेने के मुद्दे पर केंद्र सरकार पर हमला बोला है और कहा है कि संसद में बिना चर्चा कराये कृषि कानूनों को वापस लेने 'नये भारत के नये लोकतंत्र का नमूना' है।

उल्लेखनीय है कि 25 दिनों तक चलने वाले संसद के शीतकालीन सत्र के पहले दिन सोमवार को लोकसभा और राज्यसभा में बिना चर्चा कराए तीनों कृषि कानूनों को रद्द कर दिया गया।

उमर ने कहा कि, संसद सत्र जारी रहने के दौरान लोकसभा में बिना चर्चा कराये कृषि कानूनों को रद्द किया जाना 'नये भारत के नये लोकतंत्र का नमूना' है। उन्होंने ट्वीट कर कहा, बिना चर्चा के प्रस्ताव पास तथा बिना चर्चा के कानून रद्द। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने कृषि संबंधी तीनों कानूनों को सरकार द्वारा संसद में वापस लेने को किसान और मजदूरों की जीत बताया है लेकिन कहा कि बिना चर्चा कराए ये तीनों कानून वापस लेकर सरकार ने यह साफ कर दिया है कि संसद में चर्चा से उसे डर लगता है।

- **उमर अब्दुल्ला ने यह भी कहा कि, अभी 25 दिन सत्र और चलेगा तो फिर सरकार को इतनी जल्दबाजी किस बात की थी।**
- **राहुल गांधी ने भी कहा है कि, केन्द्र सरकार को संसद में चर्चा कराये जाने से डर लगता है, कहीं उनकी पोल -पट्टी ना खुल जाये।**

गांधी ने यहां संसद भवन में संवाददाताओं से कहा कि वह जानना चाहते हैं कि सरकार ने जब कृषि संबंधी तीनों कानून वापस लिये तो इन पर चर्चा कराने से उसे किस बात का डर है। उनका कहना था कि सरकार जानती है कि उसने गलत काम किया है, इसलिए वह इस कानून को लेकर संसद में चर्चा कराने से भयभीत थी और उसने चर्चा नहीं कराने का रास्ता चुनकर इन कानूनों को वापस ले लिया। उन्होंने कहा कि वह जानते हैं कि सरकार ने किसानों की ताकत के सामने झुककर कृषि संबंधी तीनों कानून वापस लेने का फैसला लिया है लेकिन उनकी पार्टी इस मुद्दे पर चर्चा कराना चाहती थी ताकि यह भी पता चलता कि इस कानून को लाने के पीछे कौन सी ताकत थी।

वे तीन, चार पूंजीपति कौन हैं जो इन कानूनों के माध्यम से किसान की मेहनत पर हाथ मारने के लिए इस कानून के पीछे सख्ती से खड़ी थी। गांधी ने कहा कि इन कानूनों को वापस लेने की घोषणा करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किसानों से माफी मांगी थी। उनका कहना था कि प्रधानमंत्री का लोगों से माफी मांगने से स्पष्ट है कि उन्होंने गलती मान ली है कि सात सौ किसानों की मौत के लिए वही जिम्मेदार हैं। उन्होंने कहा कि मोदी अपनी गलती स्वीकार कर रहे हैं इसलिए उन्हें अब किसानों को मुआवजा देना चाहिए।

यू-टर्न से ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अंतिम दिन की घटनाओं से संबंधित है, जब विपक्ष के सांसदों ने विरोध किया था, सदन के वैल में चले गये थे, मेजों पर खड़े हो गए थे तथा सिक्योरिटी स्टाफ एवं मार्शलों के साथ उनकी धक्कामुक्की भी हो गई थी।

यह निलम्बन धारा 56 के तहत था लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि निलम्बन अगले सत्र तक नहीं पहुँचाया जा सकता। निलम्बन उसी दिन तक ही किया जाना चाहिये था, जिस दिन सत्र समाप्त हो रहा था।

यह भी कहा जा रहा है कि किन्हें निलंबित किया जाये तथा किन्हें छोड़ा जाये-इसका चयन सरकार ने सोच विचार कर किया है। उदाहरणार्थ, आप सांसद संजय सिंह, जो मेज पर नाचे थे, छोड़ दिये गये हैं। प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि उन्हें निलंबित क्यों नहीं किया गया?

जाहिर है कि सरकार विरोध के स्वर को तथा कृषि कानूनों की वापसी की प्रतिक्रिया को खामोश कर देना चाहती थी क्योंकि प्रधानमंत्री इन कानूनों की जबरदस्त तारीफ करते हुये, कह रहे थे कि यह भारत में अब तक का सबसे अच्छा काम है तथा ये कानून कृषि क्षेत्र में किस तरह से क्रांतिकारी परिवर्तन कर देंगे। सूत्रों का कहना है कि प्रधानमंत्री द्वारा लिये गये "यू टर्न" से बड़ी अप्रसन्नता है, क्योंकि सरकार के हर व्यक्ति से यह कहा गया था था कि वह चर्चा के बिना पारित हुये इन विधेयकों का हर तरह से बचाव करे, इनके पक्ष में ही बोले। ये विधेयक जिस तरह बिना चर्चा कराये पारित हुये थे, ठीक उसी तरह चर्चा कराये बिना ही आज वापस ले लिये गये। विपक्षी नेताओं ने निलम्बन की भर्त्सना की है तथा इस मुद्दे को रणनीति का रूप देने के लिये, कल विपक्ष की मीटिंग होगी। वे राज्यसभा के सभापति से कहेंगे कि निलम्बन वापस लिया जाये तथा अगर ऐसा नहीं किया जाता तो विपक्षी सम्पूर्ण विपक्ष का आव्हान करेंगी कि पूरे सत्र के लिये राज्यसभा का बहिष्कार किया जाये। क्या लोकसभा में ऐसी ही कार्यवाही होगी, यह भी अभी स्पष्ट नहीं है। लेकिन यह सुनिश्चित है कि इस निलम्बन के कारण संसद की गाड़ी पटरी से उतर जायेगी, क्योंकि विपक्ष इस पर उग्र प्रतिक्रिया देगा तथा वह हर संभव हथियार को काम में लेते हुये, इसका प्रतिकार करेंगे।

सैन्ट्रल विस्टा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ने कहा कि यदि राज्यों ने प्रदूषण कम करने के लिए केन्द्र के एयर क्वालिटी कमीशन के दिशा-निर्देशों को पूर्णतया लागू नहीं किया तो उसे एक टास्क फोर्स के गठन के लिए बाध्य होना पड़ेगा। सी.जे.आई. ने मौखिक टिप्पणी की कि "यदि राज्य कार्रवाई करने में असमर्थ हैं तो हमें एक स्वतंत्र टास्क फोर्स के गठन को बाध्य होना पड़ेगा।

बैंच, जिसमें जस्टिस डी.वाय. चन्द्रचूड़ और जस्टिस सूर्यकांत भी शामिल थे, ने उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाब को भी निर्देश दिए कि वे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में प्रदूषण को नियंत्रित करने के आदेश की अनुपालना के लिए शपथ-पत्र पेश करे।

बैंच ने कहा कि "हम प्रत्येक राज्य से यह पूछेंगे कि उन्होंने दिशा निर्देशों पर क्या क्रियान्विती की है, अन्यथा हमें एक स्वतंत्र टास्क फोर्स के गठन को बाध्य होना पड़ेगा।

उन पर क्रियान्विती करनी ही होगी। यदि ऐसा नहीं हुआ तो टास्क फोर्स का गठन ही एकमात्र रास्ता है। बैंच ने टिप्पणी की कि "शीर्ष अदालत ने इस पर जोर दिया था कि निर्देश जारी किए जा चुके हैं और प्रशासन को उम्मीद थी कि सब कुछ अच्छा होगा, लेकिन हकीकत में इसका रिज़ल्ट ज़ीरो है।"

कैप्टन अमरिंदर सिंह की सांसद पत्नी परनीत कौर भी कांग्रेस छोड़ेंगी

सांसद परनीत कौर ने अपने ट्विटर अकाउन्ट की डी.पी. से कांग्रेस शब्द हटाया

चंडीगढ़, 29 नवम्बर। पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह की पत्नी और सांसद परनीत कौर ने कांग्रेस छोड़ सकती हैं। परनीत कौर ने अपने पति कैप्टन अमरिंदर सिंह की नवगठित पार्टी पंजाब लोक कांग्रेस ज्वाइन करने के संकेत दिए हैं। उन्होंने अपन ट्विटर अकाउंट की डिसप्ले पिक्चर (डीपी) से कांग्रेस शब्द हटाते हुए कैप्टन फॉर 2022 लिख दिया है। परनीत कौर द्वारा ऐसा करना एक तरह पंजाब कांग्रेस प्रभारी हरीश चौधरी द्वारा उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी करने का इनडायरेक्ट तरीके से जवाब देना भी माना जा रहा है।

पंजाब कांग्रेस के प्रभारी हरीश चौधरी ने पिछले दिनों परनीत कौर को नोटिस जारी कर सात दिनों में जवाब देने को कहा था। हरीश चौधरी ने परनीत कौर पर कांग्रेस विरोधी गतिविधियों का आरोप लगाया था। बता दें कि कैप्टन अमरिंदर सिंह के कांग्रेस से इस्तीफा देने के बाद भी परनीत कौर ने चुप्पी साध रखी थी और कांग्रेस में बने रहने या फिर इसे छोड़ने को लेकर अब तक कुछ नहीं कहा है। इस दौरान वह पटियाला के पार्षदों की बैठक से लेकर कई जगह नजर आ चुकी है। इस दौरान पार्षदों ने कैप्टन के पक्ष में नारेबाजी की थी। इसके बाद पटियाला के मेयर संजीव शर्मा बिट्टू के खिलाफ पार्षदों के अविश्वास प्रस्ताव संबंधी मामले में भी परनीत कौर ने राज्य सरकार की समर्थक पार्षदों के खेमे की खिलाफत की। परनीत कौर की इन गतिविधियों के चलते पंजाब कांग्रेस प्रभारी हरीश चौधरी ने बीती 24 नवंबर को उन्हें नोटिस जारी किया था। नोटिस में कहा गया था कि स्पष्ट करें कि वह मीडिया में ऐसे संकेत क्यों दे रही हैं कि वह अपने पति के साथ हैं। अब परनीत कौर द्वारा अपने ट्वीटर अकाउंट से कांग्रेस शब्द हटाकर कैप्टन फार 2022 लिखकर सांसद द्वारा एक तरह से हरीश चौधरी द्वारा जारी नोटिस का अप्रत्यक्ष रूप से जवाब देना माना जा रहा है।

- **पंजाब कांग्रेस के प्रभारी हरीश चौधरी ने पिछले दिनों परनीत कौर को नोटिस जारी कर सात दिनों में जवाब देने को कहा था। हरीश चौधरी ने परनीत कौर पर कांग्रेस विरोधी गतिविधियों का आरोप लगाया था।**
- **परनीत कौर द्वारा ऐसा करना एक तरह से हरीश चौधरी द्वारा उन्हें दिए गए कारण बताओ नोटिस का इनडायरैक्ट जवाब भी माना जा रहा है।**

ट्विटर के सी.ई.ओ.जैक डॉर्सी ने अपना पद छोड़ने का ऐलान किया

न्यूयॉर्क, 29 नवम्बर। ट्विटर के चीफ एग्जिक्यूटिव ऑफिसर (सी.ई.ओ.) जैक डोर्सी ने अपना पद छोड़ने का ऐलान कर दिया है। डोर्सी के बाद अब पराग अग्रवाल को ट्विटर को नया सी.ई.ओ. नियुक्त किया गया है। डोर्सी ने कंपनी के कर्मचारियों को लिखे एक पत्र में कहा है कि, कंपनी को-फाउंडर और सी.ई.ओ. तक की भूमिका निभाने के बाद लगभग 16 साल के बाद मैंने फैसला किया है कि आखिरकार मेरे लिए जाने का समय आ गया है।

ट्विटर ने सोमवार को घोषणा की कि कंपनी के मुख्य तकनीकी अधिकारी पराग अग्रवाल जैक डोर्सी की जगह लेंगे।

- **ट्विटर ने पराग अग्रवाल को कंपनी का नया सी.ई.ओ. नियुक्त किया है।**

सोशल मीडिया कंपनी ने बयान में कहा कि निदेशक मंडल ने सर्वसम्मति से पराग अग्रवाल की सी.ई.ओ. और बोर्ड के सदस्य के रूप में नियुक्ति को तत्काल प्रभाव से मंजूरी दे दी है। पराग अग्रवाल पिछले एक दशक से ट्विटर से जुड़े हुए हैं। एक विशेष सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में ट्विटर जॉइन किया था और फिर चीफ टेक्नोलॉजी ऑफिसर बने। ट्विटर से पहले पराग अग्रवाल माइक्रोसॉफ्ट, याहू और ए.टी. एंड टी. लैब्स के साथ काम कर चुके हैं।

राजस्थान का...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

फूल भेंट करना। इनके अलावा, यह ग्रुप भूख-हड़ताल भी कर चुका है। अन्य चीजों के अन्तर्गत इस ग्रुप की माँग है कि ज्यादा नौकरियाँ निकाली जायें तथा ऐसा कानून बनाया जाये कि प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्न पत्र लीक करने के जिम्मेदार लोगों की गैर-जमानती गिरफ्तारी की जा सके।

तमिलनाडु में बाढ़ से अब तक 59 लोगों की मौत

चेन्नई, 29 नवंबर (वार्ता)। तमिलनाडु में भारी बारिश के कारण दीवार गिरने से एक और व्यक्ति की मौत होने के बाद सोमवार को मृतकों की संख्या बढ़कर 11 हो गयी। राज्य में अभी तक बारिश और बाढ़ से कुल 59 लोगों ने जान गंवाई है।

राज्य के राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री के.के.एस.एस.आर. रामचंद्रन ने बारिश की स्थिति की समीक्षा के बाद पत्रकारों से कहा कि कुड्डालोर जिले से मौत की खबर सामने आयी है।

उन्होंने कहा कि राज्य में पूर्वोत्तर मानसून की शुरुआत से अभी तक बारिश और बाढ़ से 59 लोगों की मौत हुयी है और मृतकों के परिजनों को सहायता के रूप में 2.36 करोड़ रुपये की राहत राशि दी गयी है। रामचंद्रन ने कहा कि 13 घायलों को 55900 रुपये की राशि सहायता के तौर पर दी गयी है। जानकारी के अनुसार, राज्यभर में अभी तक 5600 मुर्गे और 209 मवेशियों की मौत हुयी है और 1074 झोपड़ियां और 189 घर आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हो गये और 65 झोपड़ियां पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयीं।

उन्होंने कहा कि राज्य में 2783 मवेशियों की मौत के लिये मुआवजे के रूप में 2.84 करोड़ रुपये दिये गये हैं और 24810 क्षतिग्रस्त झोपड़ियों के लिये 10.17 करोड़ रूपये जारी किये गये हैं। प्रभावित परिवारों को मुआवजा देने के लिये सरकार त्वरित कदम उठा रही है। बारिश और बाढ़ से प्रभावित करीब 15000 से अधिक लोगों को तिरुवल्लूर, चेंगलपेट, कांचीपुरम, विल्लुपुरम, कुड्डालोर, नागपट्टिनम, तंजावुर, पुदुकोट्टई, पेरम्बलुर, अरियालुर, रानीपेट, थुतुकुडी, रामनाथपुरम, त्रिची, तिरुपट्टूर, तिरुवन्नामलाई और वेल्लोर जिलों के 182 राहत शिविरों में रखा गया था।

- **सोमवार को वर्षा जनित हादसों में 11 लोगों की मौत हो गई, जबकि 48 लोगों की मौत पहले ही हो चुकी है।**

चेन्नई में 1503 लोगों को 13 राहत शिविरों में रखा गया था, जहां उन्हें भोजन और दवा मुहैया करायी गयी। मुख्यमंत्री एम. के स्टालिन चेंगलपेट और कांचीपुरम जिलों के बाढ़ प्रभावित इलाकों और शहर के कुछ इलाकों का दौरा किया। उन्होंने राहत शिविरों में जाकर लोगों को राहत सामग्री प्रदान की।

भाजपा ने कैसे त्रिपुरा में सूपड़ा साफ किया...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

भूमिका की निभाने की बड़ी व्याकुलता से तलाश कर रही थीं, ने अपनी उपस्थिति दर्शाने के लिए त्रिपुरा को लक्ष्य बनाया था।

ममता की मौजूदगी सिर्फ पश्चिम बंगाल में हैं और वर्ष 2024 के आगामी लोकसभा चुनावों में वे स्वयं को संयुक्त विपक्ष के चेहरे के रूप में देखना चाहती हैं। कथित चुनाव रणनीतिकार प्रशांत किशोर ने उनके सपनों को पंख को पर दिए हैं।

दुर्भाग्य से उनके पंख औंधे मुंह आकर गिरे और चुनावी जीत के बाद वे फिर स्वयं को प्रधानमंत्री पद के दावेदारों के रूप में पेश करने की उम्मीद कर रही हैं।

कभी-कभी उन्हें प्रधानमंत्री बनने का भ्रम होता आया है। उन्होंने अपने विश्वस्त प्रशंसक डेरेक ओ'ब्रायन के जरिए यह विचार भी प्रस्तुत करवाया कि बदलाव के लिए "एक बंगाली को प्रधानमंत्री होना चाहिए।"

लेकिन इसे फलीभूत करने के लिए उन्हें पश्चिम बंगाल की अपेक्षा अन्य राज्यों में भी अपनी पार्टी की उपस्थिति दर्शाने की जरूरत है। उनकी पार्टी सिर्फ एक स्थानीय पार्टी है। एक राष्ट्रीय पार्टी की मान्यता प्राप्त करने के लिए उन्हें कम से कम कुछ अन्य राज्यों में उपस्थिति की जरूरत है। उन्होंने अपने प्रचंड अहं, यानी की प्रशांत किशोर के साथ विचार-विमर्श कर एक रणनीति बनाई थी, जिसमें उन्होंने सोचा कि त्रिपुरा एक सॉफ्ट टार्गेट है।

ममता का मानना था कि बंगालियों की उनके प्रति सतत निष्ठा को देखते हुए वे पश्चिम बंगाल के बाहर हर कहीं बंगालियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। त्रिपुरा के बंगाली उन्हें सत्ता में लाने के लिए बड़ी संख्या में वोट देंगे।

ममता बनर्जी अपनी पार्टी के पक्ष में लिखने के लिए बंगाल से सौ से अधिक पत्रकारों को साथ लेकर गई गई क्योंकि बंगाल में भी ऐसा ही कर रहे हैं। त्रिपुरा ने उनके विरूद्ध राज्य में राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के आरोप लगाकर उलझा दिया।

मुख्यमंत्री विप्लब देव भी तृणमूल कार्यकर्ताओं को अपने राज्य से बाहर खदेड़ने और उनकी गतिविधियों को अवरूद्ध करने में सक्रिय रहे हैं। शिकायतों से कम ही फायदा हुआ।

वास्तव में, विप्लब देब ने वैसे ही पैंतरे अपनाएं जैसे कि ममता बनर्जी ने पश्चिम बंगाल में अपनाए थे। तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के साथ वैसा ही सुलूक किया गया, जैसा कि पश्चिम बंगाल में भाजपा के साथ किया गया। त्रिपुरा भाजपा ने इस संदर्भ में केन्द्रीय नेतृत्व के दिशा-निर्देशों की अनदेखी तक की।

त्रिपुरा नगर पालिका चुनाव भाजपा के लिए कुछ सबक लेकर आए हैं। पार्टी यहां इतनी सीटें जीती हैं जितनी उसने कहीं भी नहीं जीती।

तृणमूल कांग्रेस ने नगर पालिका चुनावों में सीटें जीतने को लेकर एक मजबूत प्रयास किया था, लेकिन अंत में उसे एक ही सीट मिल सकी।

औंधे मुंह गिरी तृणमूल ने चुनाव में गड़बड़ी और हिंसा के आरोप लगाए हैं।

उसने यह भी दावा किया है कि पार्टी ने वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव ने पूर्व राज्य में अपना खाता खोल लिया है।

उसका मानना था कि स्थानीय पार्टी होने के कारण उसे प्रचण्ड विजय मिल सकती है क्योंकि उसे पूरी छूट मिलती है तथा वह चुनाव सुधार निर्णीत पड़ौसी पश्चिम बंगाल में केन्द्रीय नेतृत्व का भारी नेतृत्व कुछ विपरीत प्रतिक्रिया ही उत्पन्न कर सका।

त्रिपुरा में भाजपा का प्रदर्शन अन्य राज्यों के चुनावों के लिए निश्चित रूप से उत्साहवर्धक है। हौंसले को अब ऊंची उड़ान भरनी चाहिए।

राष्ट्रपति की सुरक्षा में तैनात 7 पुलिसकर्मी करोना पॉजिटिव

देहरादून, 29 नवम्बर (वार्ता)। उत्तराखंड के दो दिवसीय भ्रमण पर आए राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की सुरक्षा व्यवस्था में नियुक्त राज्य पुलिस के गढ़वाल परिक्षेत्र के सात कार्मिकों में करोना संक्रमण होने की पुष्टि होने के बाद उन्हें क्वारंटीन कर दिया गया है। इससे एक दिन पहले सेना के तीन जवानों में भी करोना का संक्रमण मिला था। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, राष्ट्रपति के ऋषिकेश गंगा तट पर आरती और उनके वहीं रात्रि विश्राम के कारण गढ़वाल परिक्षेत्र के विभिन्न जनपदों से पुलिसकर्मियों की ड्यूटी लगाई गई थी। इसलिये 250 कार्मिकों का कोविड-19 का परीक्षण किया गया। इनमें से सात के करोना संक्रमित होने की रिपोर्ट रविवार को मिली।

दोनों सदनों ने पांच ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सितम्बर 2020 में बने तीन विवादास्पद कानूनों को वापस लेने के लिये पेश किया गया था। लोकसभा अपरान्ह 2 बजे पूरे दिन के लिए स्थगित कर दी गई।

यह विधेयक लोकसभा में पूर्वान्ह काल में ही पारित हो गया था तथा इसी प्रकार से राज्यसभा में यह अपरान्ह काल में पारित हो गया। कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह ने विधेयक पेश करते हुये कहा कि इस विधेयक पर चर्चा की कोई जरुरत ही नहीं है क्योंकि सत्तारूढ़ दल तथा विपक्षी दल- दोनों ही पक्ष कृषि कानूनों को वापस लिये जाने से सहमत हैं।

विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने दिल्ली की सीमाओं पर आंदोलन के दौरान मरने वाले 700 किसानों का मुद्दा उठाया।

उन्होंने सरकार का मखौल उड़ाते हुये कहा कि उसे इन कानूनों को वापस लेने की अक्ल सवा साल बाद, अब जाकर आई है और भी इसलिये कि उसने हाल ही में हुये उपचुनावों में माहौल देख लिया था तथा सरकार को डर था कि इन कानूनों के चलते, एन.डी.ए. पाँच राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव हार जायेगा।

उप सभापति हरिवंश ने खड़गे का भाषण बीच में ही रोक दिया, ताकि कृषि मंत्री संबंधित विधेयक पर चर्चा कराये बिना मतदान करा सकें। हरिवंश ने कहा कि खड़गे का जोर भी इसी बात पर था कि सभी सदस्य कृषि कानूनों की वापसी का स्वागत ही कर रहे हैं, विरोध कोई भी नहीं कर रहा है क्योंकि इनकी वापसी किसानों के हित में है।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने बहस कराये जाने से इंकार कर दिया, क्योंकि सदन में व्यवस्था नाम की चीज नहीं थी।

विपक्षी सदस्य ये नारे लगाते हुये "वैल" में चले गये थे कि दिल्ली की सीमाओं पर एक साल तक चले शांतिपूर्ण आंदोलन के दौरान मरने वाले किसानों को श्रद्धांजलि दी जाये।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा राष्ट्रदूत प्रेस, जी1/63 इंडस्ट्रीयल एरिया फेस प्रथम, जालौर, (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2006/17286 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: घूघरा घाटी, जयपुर रोड, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स: 0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908